कृपाल-वाणी

कृपाल सिंह

‘कृपाल–वाणी’

प्रथम संस्करण :
प्रथम संस्करण : 2021

मुद्रक :

उस करन-कारण प्रभु-सत्ता के नाम,

जो मानव तन में व्यक्त होकर

पिता-पूत के रूप में

आप ही अपनी कहानी

दोहराती चली आई है,

दोहराती रहेगी।

विषय-सूची

ये कविताएँ

महाराज कृपाल सिंह जी की पद्य रचनाओं के अनंत भंडार से– हिंदी, उर्दू, पंजाबी में 2 हज़ार से ऊपर कविताएँ उन्होंने कही हैं– कुछ चुनी हुई कविताएँ तथा फुटकर तुकें ही यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं। जैसा कि इस पुस्तक में पहले आ चुका है, इनमें अधिकांश कविताएँ सत्गुरु प्रीतम के नाम प्रेम–संदेशों के रूप में हैं, जिनमें दिल और रूह की लगी का बयान है। आत्मा की यह बातचीत एक ख़ास लिपि में लिखी जाती थी, जिसे महाराज कृपालसिंह जी पढ़ सकते थे या हुज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज या फिर ताई जी (बीबी हरदेवी), जो यह प्रेम संदेश हुज़ूर महाराज जी के पास लेकर जाती थी। इनके अलावा दूसरी कविताओं में भी आप बीती का बयान है, अर्थात आत्मा की अंतरतम अवस्थाओं की तह दर तह व्याख्या है। कविताएँ काग़ज़ के छोटे–बड़े टुकड़ों पर, जो भी हाथ लगा, लिखी गई हैं, जिन्हें ताईजी ने बड़े यत्न से संभालकर रखा हुआ था (फिर भी बहुत–सी कविताएँ खो गई हैं)। इन पुरज़ों से ये कविताएँ नक़ल की गई हैं।

महाराज जी से इन कविताओं का ज़िक्र आया, तो एक ठंडी सांस लेकर फ़रमाया, "ये सब पागलपन की बातें हैं।" यह शब्द (पागलपन) महाराज जी प्रेम की विस्मृति और मस्ती के मा'नो में प्रयोग करते हैं। इस संदर्भ में अक्सर स्वामी रामतीर्थ का दृष्टांत प्रस्तुत किया करते हैं, जिनकी ख़ुदमस्ती और तल्लीनता को लोगों ने पागलपन बताया तो उन्होंने फ़रमाया, "हाँ हम पागल हैं। हम गल्ल को (बात को) सार–तत्त्व को पा गए हैं, इसलिए हम पागल हैं।" मतलब यह कि ये मन–बुद्धि के घाट की बातचीत नहीं, प्रेम के धारा–प्रवाह में कही गई वाणी है। फिर एक बार महाराज जी ने इसी प्रसंग में कहा, "इन कविताओं से पूरी ज़िंदगी की कहानी लिखी जा सकती है" और ये सही है। ये सारी कविताएँ autobiographical अर्थात स्वरचित आत्मकथा ही तो हैं, उस जीवन की कहानी, जो गुरु प्रेम, प्रभु प्रेम और विश्व प्रेम पर न्यौछावर है और इसीलिए इनकी वाणी का वादी स्वर भी प्रेम ही है।

संकलन की सुविधा के लिए हमने सत्गुरु महिमा, प्रेम, विरह और वैराग के शीर्षक देकर इन विषयों से संबंधित हिंदी, उर्दू और पंजाबी कविताओं, गीतों और फुटकर तुकों को इकट्ठा कर दिया है, परंतु ये कविताएँ किसी क़ायदे, करीने या क्रम से नहीं कही गईं। हरेक कविता किसी घटना, स्थान या समय से संबंधित ज़रूर है, परंतु उसका विषय और संदेश व्यापक और शाश्वत है और एक अजीब असर और उभार लिए हुए है। शब्दों की काट–छाँट, घड़ंत, बनावट, व्यूह–रचना इनमें नाम को नहीं, एक अविरल गति धारा प्रवाह है, जो काग़ज़ पर बह निकला है। ये कविताएँ कही नहीं गईं, हो गई हैं। ये रूह के आँसू हैं, जो बरबस छलक पड़े हैं। इन कविताओं के कहने का अंदाज़ भी अजीब है। कभी ऐसा हुआ कि किसी शायर का कोई शे´र गुनगुनाते हुए पूरी नज़्म हो गई– वह शे´र भी साथ में लगा रहा, जो कविता का प्रेरक था (ऐसी तुकें क़ौमे देकर अलग दिखाई गई हैं, यह स्पष्ट करने के लिए कि यह महाराज जी की वाणी नहीं)।

एक नज़्म इस मिसरे से शुरू होती है, ″आजा प्यारे सत्गुरु आ जा।″ इस नज़्म के बारे में दर्शन सिंह जी ने बताया कि बचपन में (रावलपिंडी की बात है) वह अपनी किताब लेकर महाराज जी को सबक सुनाया करते थे। शुरू–शुरू में अक्षर–बोध के पाठ वह सुनाते, अलफ़ की पट्टी, बे की पट्टी–अलफ़ बे अब, ते बे तब, जब, कब, इत्यादि–इत्यादि। महाराज जी हँसकर कहते, ″स्वादे दी पट्टी सुना।″ उर्दू लिपि में स की ध्वनि के लिए दो अक्षर हैं, सीन और स्वाद। अब स्वाद अक्षर भी है और स्वाद इंद्रियों के भोगों के रसों को भी कहते हैं। महाराज जी हँसकर कहते, ″दुनिया सारी स्वादे दी पट्टी होई है,″ अर्थात सारी दुनिया स्वाद की, भोगों–रसों की मारी हुई है। पास बैठे लोग हँसने लगते। बालक दर्शन कुछ न समझता और बड़े उत्साह और लगन से 'स्वादे दी पट्टी' की तोता रटंत में लगा रहता। ये तो यूँ ही बात आ गई। दर्शन सिंह के क़ायदे (पुस्तिका) में एक नज़्म थी, ″आजा प्यारी चिड़िया आजा, अपनी सूरत मुझको दिखा जा। भोली भाली सूरत तेरी, प्यारी प्यारी मूरत तेरी।″ महाराज जी एक दो दिन दर्शनसिंह से ये नज़्म सुनते रहे। फिर इसी वज़न पर सत्गुरु दयाल श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज पर ये नज़्म कह दी, जिसमें हुज़ूर का नूरानी

स्वरूप कुछ इस तरह उभरता है कि कुछ कहते नहीं बनता। जिन्होंने देखा है, वही जान सकते हैं।

सुच्ची दाढ़ी छाती ते आवे, बग्गी हो हो नूर बरसावे।
लाली नाम दी भा पई मारे, गरीबी सिखावन वाले आ जा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।

हरेक गीत और नज़्म का अपना रंग और असर है, जिसमें माहौल और हालात की पुट भी शामिल है, जिनमें वह नज़्म कही गई। सत्गुरु की महिमा की कविताओं में,

मलायक से, बशर से, हूर से, सबसे सिवा निकले।
हमारे शहंशाह दोनों जहानों से जुदा निकले।

गुरु और शिष्य के संबंधों पर एक पूरा सत्संग है। (महाराज जी ने इस ग़ज़ल को लेकर एक पूरा सत्संग भी किया था, जिसको सुनकर लगा कि इस ग़ज़ल में अर्थ का जो एक दरिया छिपा हुआ है, उससे परे भी बहुत कुछ है)। इसी शीर्षक के अंतर्गत,

चमकता नूर का सूरज है साया लमयज़ली का।
रखाया नाम उसने अपना सावनशाह मुर्शिद का,

वाली नज़्म में, "सावनशाह मुर्शिद का" की तुक बार–बार दोहराई जाने से श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के दिव्य व्यक्तित्व का भव्य सौभ्य स्वरूप पूरी शहंशाही आब–ताब के साथ आँखों में उभर आता है। यह नज़्में उस हृदय से निकली हैं, जिसे अपने मिशन का अर्थात जीवों के उद्धार के काम का पूरा अहसास है, जिसके लिए उसे दुनिया में भेजा गया। चुनाँचे हरेक नज़्म में प्रेम की, दयाभाव की एक धारा है, एक जीवनदायक उभार है, चेतावनी और उपदेश है, जिज्ञासुजनों के लिए। चुनाँचे सत्गुरु महिमा की ग़ज़ल का आख़िरी शे'र है :

चलो दीदार कर लो आज ही सत्संग में उनका।
ख़ुदा जाने कयामत कब हो और क्या माजरा निकले।

यह अहसास उनकी कविता में जगह–जगह पर झलकता नज़र आता है। उदाहरणार्थ :

जिससे भी बयां इश्क का अफसाना करेंगे,
अपनी ही तरह उसको भी दीवाना करेंगे।

चलते चलते तो गुल शम्मा से मिल लें उठकर,
है सहर होने को कह दो कोई परवानों से।

न कर ए जमाल तू कुछ फिक्र ये दरयाए रहमत है,
यहाँ टूटी हुई किश्ती भी लग जाती है साहिल से।

दिला ये मकतबे उल्फत है देख चुप रहना,
बड़ा गुनाह यहाँ है अलफ से बे कहना।

प्रेम की रंगारंग अंतरीय अवस्थाओं और आपबीती के से सूक्ष्म संकेत इनकी कविता में मिलते हैं, जिनका साहित्य की दुनिया में (अलावा संतों की वाणी के) कहीं नाम–निशान नहीं मिलता।

इधर घरबार का खटका उधर आवाज़े रूहानी।
किधर जाऊँ करूँ क्या मैं पड़ी दो पहलू मुश्किल है।

अब ज़रूरत क्या रही दैरो-हरम की ए 'जमाल'।
वकफ सिजदों के लिए जब आस्ताना हो गया।

करीब होकर भी दूर हो तुम फिराक है या विसाल है यह।
मिले हुए भी अलग-थलग हो अजब तुम्हारा कमाल है यह।

नहीं है कोई भी तुमसे प्यारा तुम्हीं से रिश्ता है बस हमारा।
बतायें किस मुँह से तुमको अपना बड़ा ही मुश्किल सवाल है यह।

देखी जिसने पिता तेरी थोड़ी झलक,
ऐसा मोहित हुआ अपनी सुध न रही।

देखा जिसको भी उसने आँख उठा,
तेरी महिमा का उसमें गुमान हुआ।

प्रीतम प्रीतम कर दी नी मैं आपे प्रीतम होई।
भेद न कोई लख सके मैं ओहा होई।

कौन आए इस अंधेरी रात में तेरे सिवा।
मेरे ग़मख़ाने को नूरानी बनाने के लिये।

इन कविताओं में शब्द–रचना व वर्णन–शैली से परे एक रंग और उभार है, जो संतों के वचनों में होता है क्योंकि शब्द जिस हृदय से आते हैं, उस हृदय का रंग लेकर आते हैं। इन वचनों में अमर–जीवन का वही असर है, जिससे वह हृदय ओत–प्रोत है। इन कविताओं के बारे में इससे अधिक (या कम) कुछ नहीं कहा जा सकता कि, "सत्गुर वचन, वचन है सत्गुर," इन पर उसी अमर–जीवन प्राप्त हस्ती के अमर–जीवन की छाप है।

⌘⌘⌘

कविताओं की विषय-सूची

हिन्दी कविताएँ

पद्य

26 छुपाने से नहीं छुपती, यह आफ़त आ ही जाती है
27 ज़फ़ा न करना, दग़ा न करना
28 'जमाल' इस जहां में कोई नहीं किसी का
29 जला कर राख कर डाला है बेपरवाई ने उस की
30 जैसी थी पाक पहले, हूं वैसी पाक अब भी
31 ज़िन्दगी अब हो गई बारेगरां तेरे बग़ैर
32 तुम नहीं हो तो हर ख़ुशी ग़म है
33 तुम ही हो चित्त चोर सावन, बने हो चित्त के चोर
34 तेरे ग़म[1] से हुई रो रो दीवानी
35 तेरी गलियों को समझता हूं प्यारे
36 तेरे जुल्म करने से साक़ी हमारी
37 तेरे प्रेम की जिसको लगी है लगन
38 दर्द कुछ और बढ़ गया, हम लेने गये दवा-ए-दिल
39 दिल्लगी कुछ और है दिल का लगाना और है
40 दुनिया क्या अपने से भी बेगाना होना चाहिए
41 दुनिया-ए-हुस्न-ओ-इश्क़ का अरमान तुम ही तो हो
41A मुहब्बत की निगाहों से तेरी तस्वीर देखेंगे
42 नज़र में उनका तसव्वुर है वो हैं नामालूम
43 न मरने की ख़्वाहिश न जीने की आस
44 नाज़[1] की कुर्बान है, सौ जान से बलिहार है
45 निकालूं किस तरह अरमान अब मुश्किल ही मुश्किल है
46 प्यारे तेरी तकरीर क्या है, बर्क़-ए-बातिन सोज[3] है
47 पिया बिन सूना है संसार
48 फलक को इस क़द्र जी भरके गर मुझको रुलाना था
49 फ़ुरकत में आंसुओं की क्यों कर रुके रवानी
49A तीर इस अन्दाज़ से फेंका निगाह-ए-नाज़ ने
50 बरबाद कर चुका हूं ख़ुद जो आशियां को मैं
51 मलायक से, बशर से, हूर से, सबसे सिवा निकले
52 मिसाल-ए-अश्क गर मुझको निगाहों से गिरना था
53 मुहब्बत गिरिया-ए-ख़ामोश बन कर बह निकलती है
54 मेरे काशाना-ए-दिल पर जनून की हुक्मरानी है

55 मेरे दिल को बना लो घर अपना
56 मैं रस्म-ए-जहां से हूं कुछ सोच के बेगाना
61 लानत है तुझको ए दिल, दुनिया से दिल लगाया
62 वफ़ूर-ए-कैफ़ से दिल इतना बेक़रार न हो
63 सखी वो कितने सुन्दर थे, मैं सेवक थी वो मन्दिर थे
64 साक़िया' वो मय पिला, जो तेरे मयख़ानों में है
65 साक़िया वो मय पिला, न होश रहे न हम
66 सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ
67 सावन गले लगा कर बांहों का हार डालो
68 सोज़म मिसाल-ए-आहन दर आतिश-ए-जुदाई
69 हम में भी न थी कोई बात
70 हरि बिन जीवन कौने काम
71 हरि मोको ले चल अपने धाम।
72 हे सत्गुरु अब फिर दिखाओ, रुख़-ए-अनवर मुझे अपना
73 हैं चरचे आसमानों में ज़मीं वालों का क्या होगा

पंजाबी कविताएँ

पद्य

1 असीं परदेसी, वे साडा दिल परदेसी
2 अक्खियां रज्ज न देखेया मुंह तेरा
3 आई रुत्त बसन्त, सखी री आई रुत्त बसन्त
4 आ के वेख सत्गुरु जी हाल मेरा
5 आजा प्यारे सत्गुर आजा, अपनी सूरत मैंनू विखा जा
6 आपणे पिया दे कोल, हाय वे असां जाणा ज़रुर
7 आहां मेरियां दर्दां भरियां, साड़न लोक सभाये
8 इश्क दे पेच कुवल्ले, दुहाई वे लोको
9 उठ्ठ जाग सफ़र नूं जाणा ए, एह दुनिया मुसाफ़िरखाना ए
10 एहा करम करीं तू आपणा, या रब्बा मेरे ताईं
11 ऐ प्रीतमा इस कूकर ताईं, खैर दरस दी पाईं
12 ओह सोहणा एना सोहणा सी, जो दिस्सदा सी चन्न चढ़दा सी
13 कद मिलसी मैं बिरहों सताई नूं

14 किथ्थे वसैं किथ्थे मैं लभ्भां तैनूं
15 गल्ल कीती ते गल पई निभाणी लोड़िये
16 गल्लां मिट्ठियां मिट्ठड़े ढोलणे दियां
17 चंगी मौत विछोड़े दे दुख्ख कोलों
18 चढदे चेत नूं चित्त उदास होया
19 चल्लो नी सइयो सरसे नू चल्लिये तांघां सोहने यार दियां
20 छेत्ती वेख्ख नजूमियां फाल पा के
21 ज़िक्र महबूब दा करां हरदम
22 जिस किसी आ सावण दी, ख्खबर सुणी इक्क वारी
23 जे कर ला के अक्खियां नस्स जाणा
24 जे कोई पुच्छे मेरे पासों, कौण है दिलबर तेरा
25 जे मैं जाणदी माली नराज़ होणा
26 डाची वालेया वे इद्धर मोड़ डाची
27 तुध बिन तड़फां नित माही, ज्यूं कर जल विच्च माही
28 तेरे दर्शन बाझों होई हां कमली
29 तेरे मिलणे कारण प्यारेया वे, पई लक्ख्ख तावीज़ लख्खावनी हां
30 दस्सो सइयो जान मेरी विच्च, केही शक्ल नूरानी आई
31 दिला कुझ होश कर माही
32 दीन दुनी दे वाली मेरे, जाम वसल दा कदी पिला सानूं
33 दुई दूर करें जे मेरी, की घट जावे तेरा
34 न कोई सुख्ख सनेहा पत्तर, फिट्ट किस्मत साडी हारी नूं
35 नज़र करीं मैं उत्ते सावण, तुध बिन मूल न सरदी
36 ना मैं सुन्दर ना गुण पल्ले, ते मैं कीकण पिया रिझावां
37 प्यारे पिलादे प्याला, होवे विसाल तेरा
38 पास पिया दे जावे कोई, आख्खे मैं उस वारी
39 पिया तशरीफ़ ग़रीबां दे वल्ल, कोई तां चा फ़रमाओ-छोड़ न जाओ
40 प्रीतम आवसी नी सइयो अज्ज मेरा
41 प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ
42 प्रीतम जी तुसी हरदम मेरियां अक्ख्यिां दे विच्च वस्सदे हो
43 पुच्छदी फिरां सइयो मैं, नित्त नित्त निशानी उस दिलबर दी
44 प्रेम पिया दा ज़ाहिर बातिन छुपै न मेरे भाई

49 मेरे माही मैं मोई मुहार मोड़ीं
50 मैं तां विरह दी अग्ग विच सड़ रही हां
51 मैं रोन्दी नू छोड़ सदाये, मारे असी बेदोषे
52 मैं रोन्दड़ी कुरलांदी नूं लै चल्ले, कोई नहीं सुणदा ना
52A इहो जेहे हाड़े ते तरले, पिया दे प्यारेयां दे दिल विनदे,
53 मैंनूं ख्वाब अन्दर सोहणा सावण मिलेया
54 मैंनूं तरसदी ने कई बरस गुज़रे
55 राती सुपने अन्दर सइयो
56 लाम लिक्खणे किस तरहां शेअर छड्डां
57 लावां सीने नाल निशानी नूं, करां याद जदों उस जानी नूं
58 वार घत्तां मैं आपा उस तों, जो याद पिया दी वस्से
59 वाह वाह तेरे तौलिये सावण, दिल हुलसावे ते छम-छम लावण
60 वाह वाह यार नज़ारा तेरा
61 व मैनूं डाहढियां प्यारियां लगदियां ने, नशेदार तेरियां मेहरबान अक्खियां
62 साजन तेरे आपने क्यों नैण भरेंदी
63 समझ कदी ते मना अभिमानियां तूं
64 सानूं माही दे मेहणे न मार
65 सावण तेरा नहीं कोई सानी
66 सिमरन माही दा कर-कर सदा, अजेहा समां बण आया
67 सिर सिर बाजीं इश्क मजाज़ी, नाले इश्क़ हकानी
68 हाड़ हैरानी लग रही, पिया बिना नाहीं चैन
69 हाय सुत्तेयां बीत गई उमर तेरी, जाग-जाग कूड़े पच्छोतावसे तूं
70 हुण कोण गरीबां दे दुख्ख वन्डे
71 हुण तां प्यारेया, एहो है अरज़ मेरी

ꕤꕤꕤ

हिन्दी कविताएँ

(H-1)

आशिक़ों से बातें

अगर याद आऊं तो घबरा न जाना,
न मेरे लिये कोई आंसू बहाना।
मैं ख़ुद को यहीं छोड़ कर जा रहा हूं,
मैं कब तुम से मुंह मोड़ कर जा रहा हूं।
है किरपाल मेरी मुहब्बत-मुजस्सम[1],
लताफ़त[2] सरापा[3] असमत मुजस्सम[4]।
मुझे ढूंढना उसकी सूरत में जा कर,
मुझे देखना उसकी मूरत में जा कर।
कि मैं भी उसी हुस्न[5] की रोशनी था,
बज़ाहिर[6] नहीं था, मगर मैं वही था।
करो भजन-सिमरन तुम आ जाओ अन्तर,
मेरा ध्यान धर के तुम आओ निरन्तर।
तुम आ के मेरे बच्चो मुझ में समा जाओ,
मैं राह तक रहा हूं, मेरे पास आओ।

1.प्रेम रूप 2.पवित्र 3.सिर से पैर तक 4.सत्कार की प्रतिमा 5.सुन्दरता 6.प्रकट

(H-2)

दिल की कैफ़ियत[1] और आशिक़

अपनी दुनिया के लिये गर तुझको पा सकता हूं मैं,
ज़र्रा ज़र्रा रश्क-ए-सद-जन्नत[2] बना सकता हूं मैं।
तेरी शान-ए-रंग-ओ-बू[3] की बरक़रारी के लिये,
ख्वाह[4] अपनी तमन्ना[5] को मिटा सकता हूं मैं।
उनका वो इक़रार-ए-उल्फ़त[6] वो निगाह-ए-मस्त-मस्त,
दिल से उन पुरकैफ़[7] लम्हों को कब भुला सकता हूं मैं।
इक ख़्याले परदादारी[8] है अनागीर-ए-ज़ुबां[9],
वरना हर नुक्ता से अफ़साना[10] बना सकता हूं मैं।
बेख़ुदी[11] पर हो जो तेरी इक निगाहे इलतफ़ात[12],
धज्जीयां कर दामने-गुल[13] की उड़ा सकता हूं मैं।

मुन्तज़िर[14] हूं जलवे ख़ुद मजबूर हो जायें तेरे,
वरना जब चाहूं नक़ाब रुख़[15] से उठा सकता हूं मैं।
गर ये ही है जोश-ए-वहशत[16] गर यह जज़बा-ए-दिल,
तुमको भी इक रोज़ दीवाना[17] बना सकता हूं मैं।
मेरी हालत देख ज़ालिम ओ मेरी फ़ितरत[18] पर न जा,
इन्तहा-ए-दर्द[19] में भी मुस्करा सकता हूं मैं।
'जमाल' मुझसे जब छिन जाये मेरी बहार-ए-ज़िन्दगी[20],
लुत्फ़[21]-ए-हस्ती उमर भर तब क्या उठा सकता हूं मैं।

1.हालत 2.सैकड़ों स्वर्गों से अच्छा 3.सुन्दर शान और खुशबू 4.चाहे 5.इच्छा 6.प्रेम का इकरार 7.नशीला 8.पर्दे में रखना 9.ज़बान को लगाम 10. कहानी 11.बे–ख़बरी 12.कृपा–दृष्टि 13.सुन्दर पल्ला 14.इन्तज़ार में 15.चेहरे से पर्दा 16.पागलपन का जोश 17.पागल 18.स्वभाव 19.दर्द की चरम सीमा 20.जीवन की खुशी 21.आनंद

(H-3)

आंख पाती है ज़िया[1] सावन तेरे दीदार से,
रूह पाती है फ़िज़ा[2] प्यारे तेरे प्यार से।
याद आती है तेरी सावन हर शाम-ओ-सहर[3],
तेरा हर नक्श-ए-क़दम[4] है, ग़ैरते शम्स-ओ-क़मर[5]।
रहबर-ए-राह-ए-निजात[6] है तू सबके वास्ते,
प्रेम का सोमा है तू हर एक दिल के वास्ते।
है दवा-ए-हर रंज-ओ-अलम[7] उपदेश मेरे सावन का,
मस्त हो जाते सभी ले ले नाम सावन का।
हुस्न का इक बहर-ए-बेपायां[8] मेरा सत्गुरु तू है,
नूर का बढता हुआ तूफ़ां मेरा सत्गुरु तू है।
तू मुजस्सम नूर है सारे जहां के वास्ते,
तू चिराग़-ए-बज़्म[9] है कौन-ओ-मकां[10] के वास्ते।
दिलदही को जान बहर-ए-हुस्न[11] और कान-ए-'जमाल'[12],
बर्क़[13] से भी तेज़ है तेरी कुबक[14] रफ्तार।

1.प्रकाश 2.वृद्धि 3.सुबह–शाम 4.पैरों कर निशान 5.सूर्य और चांद जैसा बनने की भावना 6.मुक्ति का रास्ता दिखाने वाला 7.हर दुख और दर्द की दवा 8.अथाह समुद्र 9.महफ़िल की रोशनी 10.संसार 11.हुस्न का समुद्र 12.प्रकाश की खान 13.बिजली 14.कबूतर

(H-4)

आंख में याद बसी उनकी तमन्ना[1] बन कर।
अश्क[2] बन बन के गिरी जब कोई चारा न रहा।
किस लिए ज़ीस्त[3] की ख़्वाहिश है तुम्हें ऐ 'जमाल'।
रूह को तन न रहा तन को सहारा न रहा।
'जमाल' इस जहां में कोई नहीं किसी का।
देते हैं सब दिखाई अपने बेगाने जम से।
कौन आये इस अंधेरी रात में तेरे सिवा।
मेरे ग़मख़ाने[4] को नूरानी बनाने के लिये।
दुनिया रही दुनिया हमें पूछा न ख़ुदा ने।
नज़र में उन का तसव्वुर है वो हैं नामालूम।
पता ही उनका है मालूम और न जा मालूम।
निगोड़ी हिचकियां देती तो हैं पयाम[6] उन का।
मगर वो लाएंगे तशरीफ़ कब ख़ुदा मालूम।
ख़ुदा जाने समाए किस तरह हैं मेरी आंखों में।
ये आंसू वरना इक तूफ़ान बरपा[7] करने वाले हैं
धूल तक जिसकी न उड़े वो नमूदार[8] हूं मैं।
जिस का चारा न हो दुनिया में वो लाचार हूं मैं।
चैन आता ही नहीं दम भर फ़िराक़-ए-यार[9] में।
कब तलक तड़पा करूं मैं या इलाही[10] क्या करूं।

1.इच्छा 2.आंसू 3.ज़िंदगी 4.दुखों का घर 5.ध्यान 6.संदेश 7.बरसना 8.गीला 9.मित्र का वियोग 10.हे प्रभु

(H-5)

आ रही है यह सदा[1] कान में वीरानों[2] से,
कल की है बात के आबाद थे दीवानों से।

पांओं पकड़े न कहीं कूचा-ए-जानां[3] की ज़मीं,
ख़ाक उड़ाता मैं निकल जाऊं बियाबानों[4] से।

तिनके चुन जा के कहीं कूचा-ए-जानां में तू,
क्यों उलझता है अबस[5] चाक गिरेबानों[6] से।

आंख उठाकर न किसी सिम्त[7] कफ़स[8] में देखा,
मौसम-ए-गुल[9] की ख़बर सुनते रहे कानों से।

चलते-चलते तो गुल-ए-शम्मा[10] से मिल लें उठ कर,
है सहर[11] होने को कह दे कोई परवानों[12] से।

1.आवाज़ 2.उजाड़ 3.प्रीतम की गली 4.जंगल 5.व्यर्थ 6.फटी झोलियां 7.तरफ़ 8.पिंजरा 9.बसंत 10.फूलों का दीपक 11.सुबह 12.पतंगे

(H-6)

इक दर्दमन्द दिल की हालत तुम्हें बतायें,
क्या चीज़ है मुहब्बत आओ तुम्हें सुनायें।

अफ़्शां-ए-राज़-ए-उल्फ़त[1] तौहीन-ए-आशिकी[2] है,
मिट जाएं लब[3] पे लेकिन यों नाम उनका लायें।

दुनिया से क्या ग़र्ज़ है, दुनिया से पूछना क्या,
मैं तुझसे पूछता हूं क्या चीज़ हैं वफ़ाएं[4]।

बीमार ने ये कहकर फ़ुर्क़त[5] में जान दे दी,
अब कौन राह देखे वह आयें या न आयें।

मुझ को जगाने वाले अब ख़ुद भी जागते हैं,
मजबूर दिल की आहें ख़ाली गईं न जायें।

1.प्यार का भेद खोलना 2.प्रेम का अपमान 3.होंठ 4.भक्ति 5.वियोग

(H-7)

इधर देखता हूं, उधर देखता हूं,
सावन ही सावन है, जिधर देखता हूं।
जहां तक शम्स-ओ-कमर[1] देखता हूं,

वहीं से तुझे जलवागर[2] देखता हूं।
न मुर्ग-ए-चमन[3] गुफ्तगू[4] कर रहे हैं,
सावन ही सावन तू ही तू कर रहे हैं।

1.सूर्य और चांद 2.प्रकट 3.बाग़ की चिड़ियां 4.बातचीत

(H-8)

इतना बन बन के मेरी जान जलाते क्यों हो?
जो तुम्हें भाता नहीं उसको बुलाते क्यों हो?
गर मेरे घर का उजाला तुम्हें मंज़ूर नहीं,
मुझ सिआह-बख़्त[1] से फिर आंख मिलाते क्यों हो?
आये बालीन[2] पै मेरी नाज़ से हंस कर बोले,
जां से प्यारा हूं तो जान से जाते क्यों हो?
ऐ मेरे जान-ए-दिल कभी सोचा है यह भी तुमने,
बार-बार आ के तसव्वुर[3] में सताते क्यों हो?
है सितम[4] तुम सदा रहते हो जुदा हम से,
फिर तुम ही मुझे सबसे .ज्यादा भाते क्यों हो?
इक घड़ी बैठो ज़रा दिल को लुभाते जाओ,
नींद आई ही नहीं तो फिर नींद के माते[5] क्यों हो?
इश्क़ में ऐश कुछ नाम नहीं हे प्यारे,
मुफ्त में जान को यह रोग लगाते क्यों हो?

1.पापी 2.सिरहाना 3.ख़्याल 4.अत्याचार 5.खोये हुए

(H-9)

इश्क़ का पूछो पता माही[1] से या परवाने[2] से,
काम है जिन्हें तड़फने से या जल जाने से।
इश्क़ में चीरे गये पर उफ़ तक न की,
रुतबा-ए-इश्क़[3] हक़ीक़त है उस पे मिट जाने से।
झूरना, जलना, तड़पना यह जागीर उसकी रही,
माशूक[4] में वो जी उठे, प्रेम बढ़ जाने से।

दर-ब-दर[5] फिरना भटकना लिखा गया तक़दीर में,
मिसाल-ए-मजनूं[6] गर्ज़ है न काबा से न बुतख़ाने[7] से।
इश्क़ के हाथों बिका यूसफ़ सर-ए-बाज़ार[8] में,
गर्ज़ है आशिक की माशूक के बहलाने से।
खाल शम्स की खैंची, मनसूर को सूली दिया,
काम क्या क्या न किए इश्क़ ने दीवानों से।
नाम ज़िन्दा रहेगा, 'जमाल' का अफ़सानों[9] में,
जी गये हैं जमाल सावन में मिट जाने से।

1.मछली 2.पतंगा 3.प्रेम की श्रेष्ठता 4.प्रीतम 5.यहां–वहां 6.मजनूं की तरह 7.मंदिर 8.बाज़ार के सामने 9.कहानी

(H-10)

उल्फ़त[1] में किसी बात की परवाह न करेंगे,
जां[2] अपनी फ़िदा[3] सूरत-ए-परवाना[4] करेंगे।

जिससे भी बयां इश्क का अफसाना[5] करेंगे,
अपनी ही तरह उसको भी दीवाना करेंगे।

उलटा ही पड़ रहा है दुआओं का असर भी,
क्या चारा-ए-दर्द-ए-दिल-ए-दीवाना[6] करेंगे।

कह दो उन्हें ख़्वाबों में अब आया न करें वो,
इस तरह से फिर उनकी तमन्ना[7] न करेंगे।

हां बाग़ में जाकर तेरी आंखों की कसम हम,
नरगिस को मुहब्बत का इशारा न करेंगे।

रखेंगे इसे अपने निहां ख़ाना-ए-दिल[8] में,
इज़हार-ए-मुहब्बत[9] कभी अफ्शां[10] न करेंगे।

1.प्रेम 2.जान 3.कुर्बान 4.पतंगे की तरह 5.उपन्यास 6.पागल दिल का इलाज 7.इच्छा 8.दिल के ख़ाने में गुप्त 9.प्रेम प्रकट करना 10.चमकना

(H-11)

ऐ आंखो क्यों नहीं चोर बताती।
तुम हो मन मन्दिर के सिपाही,
तुम ही लूट कराती।
आंखो आंखो क्यों नहीं चोर बताती।
किस को देखा कहां लगी तुम,
क्यों न कहो कुछ समझाती।
तुम देखो और लाख दिखावे,
मन की लागी कहीं तुम भरमा के सुनाती।
कहीं तुम भरमा के विष को पी कर पहले,
अब न हाल पछताती।
आंखो किसको देख कहां लगी तुम,
क्यों न कहो कुछ भाती।
तुम देखन और हम मौन को,
सदा कहो अकुलाती[1]।

1.तड़पती

(H-12)

ऐ दर्द-ए-दिल[1] किसी दिन, होना जुदा न हम से,
आबाद यह मकां[2] है तेरे ही दम क़दम[3] से।
हम गम-ज़दों[4] का रोना दुनिया की इक हंसी है,
ऐ अश्क़-ए-ख़ूं[5] संभलना, गिरना न चश्म-ए-नम[6] से।
ऐ हसरतो[7] हटो भी, हा ली मिजाज़पुरसी[8],
हम हाल-ए-दिल कहेंगे, फ़ुरसत[9] मिली जो ग़म[10] से।
ऐ 'जमाल' इस जहां में कोई नहीं किसी का,
देते हैं अब दिखाई, अपने बेगाने जम से।

1.दिल का दर्द 2.मकान 3.चमक–दमक 4.शोकग्रस्त 5.ख़ून के आंसू 6.नम आंखें 7.इच्छाएं 8.हालचाल पूछना 9.मुक्ति 10.शोक

(H-13)

ऐ बशर[1] मसजूद-ए-आलम[2] जान-ए-आलम[3] तू हुआ।
हक मुजस्सम[4], हक की तलअत[5], ज़ात-ए-हक़[6] और हक़नुमा[7]।
मिल के हम जिन्न-ओ-मर्द शरन लेने आ गये।
तू है प्यारा हम सभी प्यार लेने आ गये।
अशरफ़-उल-मख़्लूक[8] है सारी ख़्लकत[9] में तू सिर्फ़।
अकबर-उल-मख़्लूक[10] है अकमल-उल-मख़्लूक[11] है।
तुझ से बेहतर इस जहां में कौन है, कोई नहीं।
तुझ से बढ़कर दो जहां में कौन है, कोई नहीं।
सजदागाह-ए-दो-जहां[12] है सब का तू मसजूद[13] है।
आदमी पर तू तो मलायक[14] का मक़सद-ओ-मक़सूद[15] है।
आलम-ए-कुबरा[16] में जो जो ख़ूबी रहती है निहां[17]।
ए बशर वो ज़ात में तेरी सरासर है अयां[18]।
कहने को तू आलम-ए-सुग़रा[19] कहा जाता है तू।
आलम-ए-कुबरा के हैं सब ज़ात में तेरे असर।
तुझको देखा है जिसने, उसने देखी हक की ज़ात।
जितने औसफ़-ए-ख़ुदा[20] हैं तेरी है समझो सिफात।

1.इंसान 2.संसार का पूज्य 3.दुनिया की जान 4.सतस्वरूप 5.सत का दर्शन 6.सत की ज़ात वाला 7.सत का मार्गदर्शक 8.दुनिया में बड़ा 9.दुनिया 10.दुनिया में महान 11.सब से पूर्ण 12.दो जहान के सजदा करने की जगह 13.पूज्य 14.देवता 15.अंतिम लक्ष्य 16.दुनिया में बड़ा 17.गुप्त 18.प्रकट 19.दुनिया में छोटा 20.प्रभु के गुण

(H-14)

ओ राम नाम वालो सुन लो कथा हमारी,
हम भी उसी पिया की सूरत के हैं पुजारी।
बैराग ले के उसका, गीत उसके गा रहे हैं,
छोड़ा है देश सारा, प्रीतम के हैं भिखारी।
मन की बना के तूंबी, गीत उसके गा रहे हैं।
रहते जो दिलों में सब के, उस को मना रहे हैं।

(H-15)

कमाल-ए-ज़ात[1] कमाल-ए-सिफ़ात[2] है किस जा[3]।
इन्सान-ए-कामिल[4] में हुए यह सब यक[5] जा।
ख़ुदा को देखना चाहो तो उसको तुम देखो।
उसी की बात कहो और उसी की बात सुनो।
उसके दिल में ग़ौर से देखा तो ठहरा है ख़ुदा।
देखना हो ख़ुदा को तुम बशर[6] को देख लो।

1.कमाल का व्यक्तित्व 2.कमाल के गुण 3.जगह 4.मुकम्मल इंसान 5.एक 6.इंसान

(H-16)

क्यों इतनी बुलन्दी[1] पे, काशाना[2] बनाते हो।
क्यों हम से ग़रीबों को, ख़ाक[3] मिलाते हो।
क्यों ख़ाक नशीनों[4] को, दीवाना बनाते हो।
सौ रूप में आते हैं, सौ रंग दिखाते हो।
तुम मेरे ही सीने पै, बुतख़ाना[5] बनाते हो।
याद आते हो क्यों अक्सर, रातों की ख़ामोशी में।
राह-ए-हक में मेरी उलफ़त[6] को, अफ़साना[7] बनाते हो।
जब दिन में टहलते हो, दरिया के किनारों पर।
जोबन भरी किरनों से, दीवाना[8] बनाते हो।

1.उंचाई 2.घर 3.मिट्टी 4.मिट्टी में बैठे हुए 5.मंदिर 6.प्रेम 7.क़िस्सा 8.पागल

(H-17)

कसम[1] उस बेगुनाही की, जो रुसवाई[2] का बाइस[3] हो।
कसम उस रंज[4] की, जो ख़ून के आंसू रुलाता हो।
कसम उस रहम की, जो बेकसों[5] पर आ ही जाती है।
कसम उस तीर की, जो दिल में चुभ कर टूट जाता है।
कसम उस दर्द की, जो फ़ाका[6] मस्ती में सताता है।
कसम उस हुस्न की, जो नूर के सांचे में ढलता है।

कसम उन अदाओं की, जो मुझे दीवाना बनाती है।
कसम उन नज़र वालों की, जिनसे मुझको होश आती है।

1.सौगंध 2.बदनामी 3.कारण 4.दुख 5.दुखी 6.उपवास

(H-18)

कहूं किससे, नहीं सुनता है कोई दास्तां मेरी,
न सुनती है जमीं मेरी न सुनता आसमां मेरी।

हुई दुश्मन ख़ुदाई[1] कुल हुआ दुश्मन ज़माना है,
मेरी नज़रों में दुनिया का चमन[2] ये इक वीराना[3] है।

कोई जिन्न कोई वहशी[4] कोई मनहूस[5] कहता है,
मेरी सूरत से हर छोटा बड़ा बेज़ार[6] रहता है।

न इस जा[7] पर न उस जा ग़म ग़लत कोई भी करता है,
मेरे साए तलक से अब तो हर कोई भी डरता हैं।

मैं जाऊं भी कहां यारब न जाने को है जा कोई,
पिलादे मौत का शरबत न जीने की है चाह कोई।

मेरा जीवन ज़माने को नज़र इक ख़ार[8] आता है,
मुझे दुनिया का खाने को दर-ओ-दीवार आता है।

सुनायें दास्तान-ए-दर्द-ए-दिल[9] अब किसको हम जाकर,
न सुनता है कोई ग़म की कहानी पास बिठला कर।

1.दुनिया 2.बाग़ 3.उजाड़ 4.पागल 5.अशुभ 6.अप्रसन्न 7.जगह 8.कांटा 9.दिल के दर्द की कहानी

(H-19)

कहे कोई जिसने लड़ाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।
जिन्हें देखने को भर आई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।

खड़कता है पत्ता जो कोई पवन से,
तो आवाज़ आती है ये मेरे मन से।

कि रस्ते में जिनके बिछाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।

ये आहट है बेशक उन्हीं के क़दम की,
मैं अब कह सकूंगी कि पाई हैं आंखें।

कहे कोई जिसने लड़ाई हैं आंखें,
वही आ रहे हैं, वही आ रहे हैं।

(H-20)

कहने देती नहीं कुछ मुंह से मुहब्बत तेरी,
लब[1] पै रह जाती है आ-आ के शिकायत तेरी।

अब तेरस ऐ दिल-ए-बेताब[2] ख़ुदा हाफ़िज़[3],
कर चुके हम तो मुहब्बत में इबादत[4] तेरी।

देखिये कहता है अब क़िस्से ज़माना क्या-क्या,
तुझ को है चाह मेरी मुझ को है चाहत तेरी।

याद सब कुछ है मुझे हिज्र[5] के सदमे[6] पर भी,
भूल जाता हूं मगर देख के सूरत तेरी।

अदम[7] आबाद को जाते हैं सभी ख़ाली हाथ,
मुझ को है नाज़[8] के ले जाऊंगा हसरत[9] तेरी।

1.होंठ 2.व्याकुल दिल 3.प्रभु जाने 4.उपासना 5.वियोग 6.आघात 7.परलोक 8.मान 9.अभिलाषा

(H-21)

काबा हो या कलीसा[1], मन्दिर हो या गिरजा,
जिस जा पे तुझको देखा, उस जा पे तू ही तू है।
हिन्दु भी तेरे बन्दे, मोमिन[2] भी तेरे बन्दे,

इमान की जो पूछे, ईमान[3] सबका तू है।
ऐ शाह-ए-हुस्न-ए-ख़ुबां[4], दीदार गर न दोगे,
बन कर फ़कीर तेरे, दर पर सदा करेंगे।
जहां में देखने में, सीधे-सादे भोले-भाले हो,
गज़ब[5] के हैं, गज़ब करते, गज़ब वाले हो।
नज़ारत-ए-काबे[6] भी हम गये, न गया बुतों का इश्क़,
इलाही कैसे बतलाऊं, कि कैसे हुस्न वाले हो।

1.गिरजा 2.ख़ुदा का घर 3.धर्म 4.अति सुंदर 5.आफ़त 6.काबे का दर्शन

(H-22)

ख़ाक डालो मेरे शिकवों[1] पे न जाओ सावन।
नीची नज़रें न करो आंख उठाओ सावन।

बाद मरने के मेरे सोग से हासिल क्या है,
चुप न हो, ग़म न करो, जी न कुढ़ाओ सावन।

फिर कभी आन मिलेंगे, ये बजा[2] है लेकिन,
कोई सूरत भी तो जीने की बताओ सावन।

तुम जो आ जाओ मेरी तक़दीर का शिकवा न रहे,
मेरी सोई हुई किस्मत को जगाओ सावन।

ज़ब्त[3] से राज़-ए-मुहब्बत[4] न छुपेगा ए 'जमाल',
डबडबाई हुई आंखे न छुपाओ सावन।

1.शिकायतें 2.उचित 3.सहन करना 4.प्रेम का भेद

(H-23)

गुज़रती है जो दिल पर, मुब्तिला[1] की मुब्तिला जाने।
जो हो बेदर्द, वो दर्द-ए-दिल-ए-बेताब[2] क्या जाने।
मुकाम[3] शुक्र का है ये मुसीबते दुनियां।
इसी बहाने से वो प्यारा याद आता है।

धूल तक जिस की न उड़े वो नामुराद[4] हूं मैं।
जिसका चारा न हो दुनिया में, वो लाचार हूं मैं।
जलना हो इक दम का, तो मैं सब्र[5] भी करूं।
आठों पहर सुलगता है यह दिल, क्या करूं।

1.जकड़ा हुआ 2.बेचैन दिल का दर्द 3.स्थान 4.अभागा 5.संतोष

(H-24)

चमकता नूर का सूरज है साया लमयज़ली[1] का,
रखाया नाम उसने अपना सावनशाह मुर्शिद[2] का।

रहे हैं मिस्ल-ए-मजनूं[3] वह सदा ही मस्त-ओ-दीवाना[4],
मुनव्वर[5] नूर[6] देखा जिसने सावनशाह मुर्शिद का।

है ज़िक्र हर इक जुबां ऊपर सिफ़्त[7] है हर मकां अन्दर,
हरेक जा[8] पर हुआ गोगा है सावनशाह मुर्शिद का।

मिसाल-ए-चुंबक[8] पत्थर कशिश[10] है उसकी उल्फ़त[11] में,
ताअसुर[12] है अजब कुछ ऐसा सावनशाह मुर्शिद का।

अजब है सूरत-ए-जानां[13] लिया है लूट दिल मेरा,
अजब रुख़सार-ए-माहे अनवर[14] सावनशाह मुर्शिद का।

तसव्वुर प्यारे सत्गुर का सदा दिल में रहे बसता,
करूं मैं विरद[15] हरदम अपने सावनशाह मुर्शिद का।

दमादम याद आती है वह महवश सूरत-ए-जानां[16],
तसव्वुर फिर रहा हरदम है सावनशाह मुर्शिद का।

तलब[17] हो जिसको मौला[18] की वह जाए बार-ए-अनवर[19] में,
बसा ले इश्क़ अपने दिल में सावनशाह मुर्शिद का।

सरापा[20] इल्म, सरतापा[21] ख़ूबी, शीरीं जबां[22] ऐसा,
जहां अन्दर न सानी[23] कोई सावनशाह मुर्शिद का।

न देखा न सुना कोई जहां में उसका है सानी,
मुझे तो नाम इक प्यारा है सावनशाह मुर्शिद का।

तुझे जो देख लेता है फिरे वह मस्त-ओ-दीवाना,
दमादम नाम रटता है वह सावनशाह मुर्शिद का।

सहारा दो जहानों का रफ़ीक-ए-जाविदानी[24] है,
है सब पर यकसां[25] लुत्फ़-ए-आला[26] सावनशाह मुर्शिद का।

लब-ए-दरिया[27] पे रहता है मेरा दिलदार जानी है,
सभों पर हुक्म अफज़ल[28] मेरे सावनशाह मुर्शिद का।

ज़मीन-ओ-आसमां पर सब तुझे ही याद करते हैं,
अजब दीदार[29] है दीदार सावनशाह मुर्शिद का।

नहीं ख़्वाहिश है जन्नत[30] की न है परवाह हूरों[31] की,
मुझे काफी दर-ए-रहमत[32] है सावनशाह मुर्शिद का।

चलो लोगो कि जिनको मौला[33] से मिलने की ख़्वाहिश है,
कि दरिया फैज़[34] का ज़ारी है सावनशाह मुर्शिद का।

न हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, न सिख का है सवाल उस जा,
सभों पर है करम[35] इक जैसा सावनशाह मुर्शिद का।

करूं क्या सिफ़्त मुर्शिद की नहीं होती बयां मुझसे,
अजब है रू-ए-पुरअनवर[36] सावनशाह मुर्शिद का।

'जमाल' तू मुर्शिदे सावन की हरदम रह ग़ुलामी में,
हमेशा दर को पकड़े रख तू सावनशाह मुर्शिद का।

1.खुदाई 2.गुरु 3.मजनूं की तरह 4.मस्त और पागल 5.प्रकाशमान 6.रोशनी 7.गुणगान 8.जगह 9.चुंबक की तरह 10.खिंचाव 11.प्रेम 12.असर 13.प्रीतम की सूरत 14.प्रीतम का सुंदर चेहरा 15.यशगान 16.प्रीतम की मनमोहक सूरत 17.इच्छा 18.प्रभु नूरानी घर 19.सिर से पैर तक 21.पूर्ण 22.मधुर वाणी 23.बराबर 24.सदा की मित्रता 25.सब पर बराबर 26.महान दया 27.दरिया के किनारे 28.महान 29.दर्शन 30.स्वर्ग 31.स्वर्ग परी 32.दया का द्वार 33.प्रभु 34.परोपकार 35.दया 36.नूरानी चेहरा

(H-25)

चमन[1] वाले अभी वाकिफ़ नहीं हैं आह-ए-बिस्मिल[2] से,
जलाकर ख़ाक[3] कर देगी अगर निकली कहीं दिल से।

दम-ए-आख़िर[4] न देखी जायेगी बीमार की हालत,
वह हट जायें तो अच्छा है कि दम निकलेगा मुश्किल से।

बता दे हमको तू इस सफ़र का हश्र[5] क्या होगा,
न मैं वाकिफ़ हूं रस्ते से, न मैं वाकिफ़ हूं मंज़िल से।

तलाश-ए-नाव के बेदाद[6] और दुश्मन का दिल तौबा,
इधर आ देख ले लिपटा कहीं होगा मेरे दिल से।

न कर ए 'जमाल' तू कुछ फ़िक्र ये दरिया-ए-रहमत[7] है,
यहां टूटी हुई किश्ती भी लग जाती है साहिल[8] से।

1.बगीचा 2.घायल 3.मिट्टी 4.अख़िरी साँस 5.नतीजा 6. अत्याचार 7.दया का सागर 8.तट

(H-26)

छुपाने से नहीं छुपती, यह आफ़त[1] आ ही जाती है
ऐ काफ़िर-ओ-क़यामत[2] है, अक्सर आ ही जाती है।
मुहब्बत क्या क़यामत है, अजल[3] में रंग लाती है।
दिल दे दिया है उनको, देखें वो क्या करेंगे।
रखते हैं दिल की दिल में, या कि जुदा करेंगे।
ऐ शम्मा[4] इतनी तूं सिफ़ारिश कर, कि रुख़ इधर भी किया करे कोई।
दर्द हो तो दवा करे कोई, दिल के लगाने का क्या करे कोई।

1.मुसीबत 2.प्रलय 3.प्रलय 4.आग की लपट

(H-27)

ज़फ़ा[1] न करना, दग़ा[2] न करना,
हमारे दिल का ख़्याल करना।

हमें समझना न तुम बेगाना,
न भूल जाना प्यार करना।
तुमने यह दिल किया है बिस्मिल[3],
तुम ही करो हल हमारी मुश्किल।
तुम मसीहा[4] बनकर लगाना मरहम,
इलाज करना संभाल करना।
अरे ओह भोली सी शक्ल वाले,
हमें वो भोला सा मुखड़ा दिखाना।
हमारे दिल की लगी बुझाना,
ओ जाने वाले हमारा भी कुछ ख़्याल करना।

1.ज़ुल्म 2.छल 3.ज़ख़्मी 4.ईसा मसीह की तरह

(H-28)

'जमाल' इस जहां में कोई नहीं किसी का,
देते हैं सब दिखाई अपने बेगाने जम से।
कौन आए इस अंधेरी रात में तेरे सिवा,
मेरे ग़मख़ाने[1] को नूरानी[2] बनाने के लिए।
दिल्लगी[3] कुछ और है दिल का लगाना और है,
कौल[4] देना और है बातें बनाना और है।
हमने परवाने[5] की सुन ली शम्मा[6] को दिल तो दिया,
जी का जलाना और समझाना बुझाना और है।
अर्ज़ क्या पूरी न होगी मंज़िल अब तक दूर है,
क्या वो ज़माना और था और यह ज़माना और है।

1.शोक का घर 2.प्रकाशवान 3.हंसी–मज़ाक 4.वचन 5.पतंगा 6.रोशनी

(H-29)

जला कर राख कर डाला है बेपरवाई ने उस की।
मगर इस राख में पिनहां[1] हैं उल्फ़त[2] के शरार[3] अब भी।

तक़ाज़ा[4] दीद[5] का हो गर दिल-ए-बेताब[6] को प्यारे।
निगाह-ए-शौक़[7] कर सकती है पर्दा तार-तार अब भी।

ख़्वाहिश परी की है न तमन्ना[8] है हूर[9] की।
आंखों में मेरी बस रही सूरत हज़ूर की।

दिला ये मक़तब-ए-उल्फ़त[10] है देख चुप रहना।
बड़ा गुनाह[11] यहां है अलफ़ से बे कहना।

जमाल रहने को दुनिया में मक़ामे आशिक़ां[12]।
कूचा-ए-यार[13] में इक गोशा-ए-तनहाई[14] है।

छुपाने से नहीं छुपता है प्यारे नशा-ए-उल्फ़त[15]।
ज़रूर आंख में उसकी कुछ वह रंगत आही जाती है।

इधर घरबार का खटका उधर आवाज़-ए-रूहानी।
किधर जाऊं करुं मैं क्या पड़ी दो पहलू मुश्किल है।

1.गुप्त 2.प्रेम 3.चिंगारियां 4.मांग 5.दर्शन 6.जिस में सहन–शक्ति न हो 7.तड़पती निगाह 8.इच्छा 9.स्वर्ग सुंदरी 10.प्रेम की पाठशाला 11.पाप 12.प्रेमी का घर 13.प्रेमी की गली 14.एकांत स्थल 15.प्रेम का नशा

(H-30)

जैसी थी पाक[1] पहले, हूं वैसी पाक अब भी।
निष्पाप है निगाहे भी, दिल भी मिजाज़[2] भी।
कायम है ज्यों की त्यों मेरी असमत[3] भी लाज भी।
ईमान बरकरार है, रस्म-ओ-रिवाज़ भी।
नेकी बदी को शाम-ओ-सहर[4] देखता है वो।
देखे न देखे कोई मगर देखता है वो।
ताहनों से मुझको यूं न ज़लील-ओ-हकीर[5] कर।
दिल का तू हाल देख कलेजे को चीर कर।

1.पवित्र 2.स्वभाव 3.इज़्ज़त 4.सुबह–शाम 5.नीचा

(H-31)

ज़िन्दगी अब हो गई बारेगरां[1] तेरे बग़ैर।
आज नाकारा है यह रूह-ओ-जां तेरे बग़ैर।
आपकी नज़रों के फिरते ही ख़ुदाई[2] फिर गई,
मेहरबां भी हो गये ना-मेहरबां तेरे बग़ैर।
देख इस मंज़िल पे ला के मुझको अब तनहा[3] न छोड़,
उम्र सारी जायेगी यह रायगां[4] तेरे बग़ैर।
एक मुद्दत से है बेरौनक मेरी दुनियाए दिल,
पहले सी जज़्बात में शोख़ी[5] कहां तेरे बग़ैर।
राज़-ए-उल्फ़त फ़ाश[6] हो जाये न यूं देख अब कहीं,
वरना थीं मालूम किसको दास्तां[7] तेरे बग़ैर।
शिद्दत-ए-ग़म[8] से हुआ है मेरा सीना चाक-चाक[9],
क्या कहूं जबकि इजाज़त ही नहीं फ़रियाद की।
हुक्म है सईयाद[10] का मुझको अरे इन्सान सुन,
काट डालूंगा ज़बां तेरी अगर फ़रियाद की।
ख़ून बन कर आंख से आंसू निकल आये 'जमाल',
दासतां इक दिन ये लोग दिले बरबाद की।
ज़िन्दगी अब हो गई बारेगरां तेरे बग़ैर,
आज नाकारा है यह रूह-ओ-जां[11] तेरे बग़ैर।

1.दुखदायी 2.दुनिया 3.अकेला 4.बेकार 5.चंचलता 6.प्रेम का भेद खुलना 7.कहानी 8.बेहद कष्ट 9.टुकड़े–टुकड़े 10.प्रभु 11.रूह और जान

(H-32)

तुम नहीं हो तो हर ख़ुशी ग़म है,
मुझको जन्नत[1] भी फिर जहन्नुम[2] है।

वो भी नाख़ुश हैं दिल भी हैं बे-रहम,
अख़्तियार ज़िंदगी पर अब कम हैं।

मुत्तहिद[3] हो रही हैं दो रूहें,
उनकी शान पे मारे सम-सम है।

रुख़-ए-पुरनूर[4] कब वो आए 'जमाल',
हम हैं और इंतज़ार पे हम हैं।

1.स्वर्ग 2.नर्क 3.मिलाप करना 4.नूरानी चेहरा

(H-33)

तुम ही हो चित्त चोर सावन, बने हो चित्त के चोर।
सावन की अब रुत्त है आई, काली घटा घनघोर है छाई।
बरखा का सन्देश है लाई, नाच रहे हैं मोर।
तुम ही हो चित्त चोर।
तुम बिन साजन जिया घबराये, तड़प-तड़प कर ये दिन आये।
कुछ मिलने की पेश न जाये, प्रेम की बांधी टूटी डोर।
तुम ही हो चित्त चोर।

दुख में भी जो तुम न आओ, टूटे दिल को न भरमाओ।
डूबती नैय्या कौन बचावै, कौन लगावै ज़ोर।
तुम ही हो चित्त चोर।
तुम बिन मुश्किल है अब जीना, छोड़ा सब कुछ खाना-पीना।
हाथ में जोगी की है वीना, ध्यान है तेरी ओर।
तुम ही हो चित्त चोर।

(H-34)

तेरे ग़म[1] से हुई रो रो दीवानी,
तुम्हारे इश्क़ में रंग ज़ाफ़रानी[2]।
जिगर पारा[3] आवारा हाल हुआ,
हिज्र[4] अन्दर न कर दिलदार फ़ानी[5]।
धरो अपना क़दम मेरे आंगन पर,
करो मुड़के प्यार मेहरबानी।
ख़ुशी जाती रही मेरी सरासर,
नज़र आती है हमेशा जाविदानी[6]।

उठा परदा जरा मुख से प्यारे,
दिखा रुख़सार-ए-पुरनूर[7] जानी।
तेरी सूरत मनोहर माल-ए-अनवर[8],
हुए आशिक़ मलायक[9] आसमानी।
सावन मैं बनूं मजनूं दीवाना,
जो देखूं सूरत-ए-माह-ए-नूरानी[10]।

1.शोक 2.पीला 3.टुकड़ा–टुकड़ा 4.वियोग 5.नश्वर 6.हमेशा रहने वाला 7.प्रकाशवान चेहरा 8.चमकीला 9.देवतागण 10.चांद सा प्रकाशवान चेहरा

(H-35)

तेरी गलियों को समझता हूं प्यारे,
मेरे दर्द-ए-दिल की दवा हो रही है।
तेरी याद करने से जानी हमारी,
नमाज़-ए-मुहब्बत[1] अदा हो रही है।
भुलाता लाख हूं लेकिन,
वो अक़सर याद आते है।
यों तो देखने में,
सीधे-सादे भाले भाले हैं।
मगर मालूम हमको,
यह कैसे हुस्न वाले हैं।

1.प्रेम करना

(H-36)

तेरे जुल्म करने से साक़ी[1] हमारी,
नमाज़-ए-मुहब्बत अदा हो रही है।
करीब होकर भी दूर हो तुम,
फिराक़[2] है या विसाल[3] है यह।
मिले हुए भी अलग-थलग हो,
अजब तुम्हारा कमाल है यह।

नहीं है कोई भी तुमसे प्यारा,
तुम्हीं से रिश्ता है बस हमारा।

बतायें किस मुंह से तुमको अपना,
बड़ा ही मुश्किल सवाल है यह।

1.शराब पिलाने वाला 2.वियोग 3.मिलाप

(H-37)

तेरे प्रेम की जिसको लगी है लगन,
तेरे दरस का जिसको ध्यान हुआ।

तेरी राह में तन-मन वार गया[1],
तेरे प्रेम ही में बलिदान हुआ।

देखी जिसने पिता तेरी थोड़ी झलक,
ऐसा मोहित हुआ अपनी सुध न रही।

देखा जिसको भी उसने आंख उठा,
तेरी महिमा का उसमें गुमान हुआ।

1.कुर्बान कर गया

(H-38)

दर्द कुछ और बढ़ गया, हम लेने गये दवा-ए-दिल।
मेरी तरह ख़ुदा करे, तेरा किसी पे आए दिल।
तू भी जिग्र को थाम कर, कहता फिरे कि हाय दिल।
मानी हज़ारों मन्नतें, रज्जनाई[1] बनाये दिल।
लादो ना मेरी लाश को, इस में भरी हैं हसरतें[2]।
रखना क़दम संभाल के, देखो जल ना जाये दिल।
गुंचा[3] समझ के ले लिया, चुटकी से फिर मसल दिया।
उनका तो इक खेल था, मिट गया मेरा हाय दिल।

1.शांत 2.कामनाएं 3.कली

(H-39)

दिल्लगी कुछ और है दिल का लगाना और है।
कौल[1] देना और है बातें बनाना और है।

हमने परवाने[2] की सुन ली शम्मा[3] को दिल तो दिया।
जी का जलाना और समझाना बुझाना और है।

अर्ज़ क्या पूरी न होगी मंज़िल अब तक दूर है।
क्या वो ज़माना और था और यह ज़माना और है।

1.ज़बान देना 2.पतंगा 3.आग की लपट

(H-40)

दुनिया क्या अपने से भी बेगाना होना चाहिए।
तेरे दीवाने को बस दीवाना होना चाहिए।

मैं तेरा दीवाना बनकर सबसे बेगाना रहूं।
दीवानगी को भी मेरी दीवाना होना चाहिये।

हर नज़र में तुम ही तुम हो हर तरफ़ हो तुम ही तुम।
जब तुम ही तुम हो तो फिर परदा होना न चाहिए।

(H-41)

दुनिया-ए-हुस्न-ओ-इश्क़[1] का अरमान[2] तुम ही तो हो।
मैंने दिया है दिल जिसे ऐ जान तुम ही तो हो।
पज़ मुर्दा[3] दिल शुगफ्ता[4] हुआ जिसको देख कर।
बाग़-ए-जहां[5] में वो गुल-ए-ख्रन्दां[6] तुम ही हो।
हर रंग में तुम्हारे सिवा और कौन है।
हर फूल के लिबास में पिनहां[7] तुम ही तो हो।
क्या कहिये किसकी ज़ुल्फ़ के दीवानों में है हम।
अपनी नज़र में वो परी-रुख़सार[8] तुम ही तो हो।
जो जलवागर[9] है गौशा-ए-दिल[10] में वो कौन है।

मैं कह रहा हूं जिसको मेरी जान तुम ही तो हो।
हर वक़्त दिल है महज़ तुम्हारे ख्याल में।
हर वक़्त पैश-ए-दीदा-ए-हैरान[11] तुम ही हो।
हुस्न-ए-नगार-ख़ाना-ए-आलम तुम ही से है।
कुदरत का उसकी कार-ए-नुमायां[12] तुम ही तो हो।
क्यों कर तुम्हारे दीद का अरमान निकालूं।
इस ग़मकदे[13] में ऐश-ए-बदामां[14] तुम ही तो हो।
मसजूद-ए-एहल-ए-इश्क़[15] तुम्हारे सिवा है कौन।
चाहा किया जिसे ये दिल-ओ-जान तुम ही तो हो।

फुटकर **(H-41A)**

मुहब्बत की निगाहों से तेरी तस्वीर देखेंगे।
मेरे पहलू में आएंगे, जिन्हें मैं प्यार करता हूं।
मेरे ऐ बाबू अब से फिर मेरी तक़दीर देखेंगे।

1.दुनिया का असली प्रेम 2.लालसा 3.पहाड़ की तरह मुर्दा 4.खिला हुआ 5.दुनिया के बाग़ 6.खिला हुआ फूल 7.गुप्त 8.परी का सुन्दर चेहरा 9.प्रकट 10.दिल का कोना 11.हैरान आंखों के सामने 12.करिंदे 13.शोकग्रस्त घर 14.हमेशा की खुशी 15.प्रेम का मंदिर

(H-42)

नज़र में उनका तसव्वुर[1] है वो हैं नामालूम।
पता ही उनका है मालूम और न जा[2] मालूम।
निगोड़ी हिचकियां देती तो हैं पयाम[3] उनका।
मगर वो लायेंगे तशरीफ़ कब ख़ुदा मालूम।
ख़ुदा जाने समाए किस तरह हैं मेरी आंखों में।
ये आंसू वरना इक तूफ़ान बरपा[4] करने वाले हैं।
धूल तक जिस की न उड़े वो नमूदार[5] हूं मैं।
जिस का चारा न हो दुनिया में वो लाचार हूं मैं।
चैन आता ही नहीं दम भर फ़िराक़-ए-यार[6] में।
कब तलक तड़पा करूं मैं या इलाही[7] क्या करूं।

1.ख़्याल 2.जगह 3.संदेश 4.बरसाना 5.गीला 6.प्रीतम का वियोग 7.हे प्रभु

(H-43)

न मरने की ख़्वाहिश न जीने की आस,
मेरी भी ज़िंदगी है कितनी उदास।

न छेड़ो मेरी रूह के साज़ को,
कि तुम को भी होना पड़े न उदास।

मुहब्बत को समझा है मैंने जुनूं[1],
ठिकाने नहीं मेरे होश-ओ-हवास।

है ज़ाहिर[2] में गो[3] उसके रंग और बू,
हकीकत[4] में है ये जुनूं का लिबास।

1.पागलपन 2.अक्ल 3.चाहे 4.असल

(H-44)

नाज़[1] की कुर्बान है, सौ जान से बलिहार है।
हां बहार-ए-रू[2]-ए सावन ग़ैरत गुलज़ार[3] है।
दिलबरी[4] फिर सादग़ी, तमकनत[5] फिर जां फ़ज़ां[6]।
रूह-ए-पर्वर[7] दिल-कुशा[8], सावन की है हर एक अदा।
सरमगीं वो मस्त आंखें, सरमगीं पुरकैफ[9] बात।
ले तसव्वुर[10] में बलायें[11], जिनकी आबिद[12] बार बार।
मरकज़-ए-उश्शाक[13] तू, सरचश्मा-ए-हुब्ब-ओ-प्यार[14]।
तू बेकस[15] की दवा, बेबसों का ग़म गुसार[16]।
महवर-ए-अस्मत[17] है तू, पैकर-ए-शर्म-ओ-हया[18]।
राह-ए-असियां[19] में, गुनाहगारों का तू है रहनुमा[20]।
देख कर तुझको प्यारे, दिल में आता है ख़्याल।
तुझ पर कुदरत कर चुकी ख़त्म है अपना कमाल[21]।

1.नख़रा 2.चेहरे की शोभा 3.कमाल की फुलवाड़ी 4.दिल चुराना 5.स्थाई 6.शोभा 7.रूह का पालन–पोषण करने वाला 8.दिल बहलाने वाला 9.नशीली 10.ख़्याल करना 11.मुसीबत 12.भक्त 13.प्रेम का केंद्र 14.प्रेम का बड़ा चश्मा 15.लाचार 16.दुख–दर्द हरने वाला 17.पवित्रता का अग्रणी 18.लाज का स्वरूप 19.रूहानी मार्ग 20.मार्गदर्शक 21.कला

(H-45)

निकालूं किस तरह अरमान अब मुश्किल ही मुश्किल है।
वहां टूटा हुआ ख़ंजर, यहां टूटा हुआ दिल है।
मेरा दिल ही समझता है, उठा है दर्द जो दिल में,
छुपाना भी नहीं बस का, न कुछ कहने के काबिल है।
बुरा हो परदादरी का कि हैं दोनों मुसीबत में,
कहीं बेताब[1] बिस्मिल[2] है, कहीं बेचैन क़ातिल है।

1.व्याकुल 2.ज़ख़्मी

(H-46)

प्यारे तेरी तकरीर[1] क्या है, बर्क़-ए-बातिन[2] सोज़[3] है।
बर्क़-ए-बातिन सोज़ है रम्ज़[4] हर एक आपकी।
बर्क से भी ज़ूद-असर[5] प्यारे तेरी गुफ्तार[6] है।
ख़ल्क[7] कुछ इस लिये भी कुर्बान है, बलिहार है।
प्यारे तेरा उपदेश अमृत है, ज़माने के लिये।
है लिया अवतार तू ने हरि से मिलाने के लिये।
बेशतर[8] खिंच जाता है, जो देख पाता है तुझे।
ग़ैर ग़ैरियत[9] में भी हर जा है, अपनाता तुझे।
ज़िन्दगी में याद-ए-सावन दिल से क्यों कर जायेगी।
सूरत-ए-सावन पेश-अज़-मर्ग[10] भी लौट आयेगी।

1.प्रवचन 2.मन की गुप्त 3.जलन 4.गुप्त इशारा 5.जल्दी असर करने वाली 6.वाणी 7. दुनिया 8.अधिक 9.परायापन 10.मृत्यु से पहले

(H-47)

पिया बिन सूना है संसार।
जब से रूठ गये हो सावन, बिरह की आग लगाये।
मुश्किल से काटे हैं दिन रैन, जीना है दुशवार[1]।
काली काली घोर घटाएं, मोर पपीहे शोर मचाएं।
पापी नैणां भर भर आयें, दुख की है भरमार।

टूटी नैय्या दूर सफ़र है, डूंघी नदिया जोबन पर है।
उठे लहर और बड़े भंवर हैं, कौन लंघावे पार।
रैन अन्धेरी और अन्धेरी, अन्ध बना संसार।
सूझता नाहीं मौको सावन, अब अपना हाथ पसार।
गर गर गर गर बादल गरजे, बरसत मेघ अपार।
कहां खड़े हो मालिक मेरे, मेरे जीवन आधार।
प्रीतम मेरे मेरे साथी, मेरे अपने प्यार।
आओ पगली के पागल सुपने, खुला हुआ है द्वार।
घुमड घुमड कर आये बदरिया, रैन घिरी घन घोर।
बिरही को कबहूं कल नाहीं, आंसू बहें हर ओर।
टप टप टप टप बुन्दिया बरसे, टप टप नैनन नीर।
तड़फ-तड़फ कर बिजली तरसे, तड़फे इह मन मोर।
छाई घटा घनघोर, पिया बिन सूना है संसार।

1.कठिन

(H-48)

फलक[1] को इस क़द्र जी भरके गर मुझको रुलाना था,
मेरा दिल भी मेरे अल्लाह पत्थर का बनाना था।
बना के अश्क[2] गर मुझको निगाहों से गिराना था,
तो क्यों ऐ शोख़[3] तूने मेरी नज़रों में समाना था।
यहीं गर नीम-बिस्मिल[4] छोड़ कर जो मुझको जाना था,
तो तेग़-ए-नाज़[5] से ऐ जां मुझे बेजां बनाना था।
मेरा दिल ए सितमगर[6] काबिल-ए-ज़ोर-ओ-जफ़ा[7] तो न था,
तेरा ही जा-ए-मस्कन[8] था, तेरा ही वो ठिकाना था।
नहीं है दख़ल मुझको तेरी मर्ज़ी में मगर मौला[9],
हवाश-ओ-होश क्यों बख़्शे जो दीवाना बनाना था।
मुझे भी मौत देकर साथ ले चलते मेरे सावन,
करम[10] इतना तो कर देते जो यूं बिस्मिल[11] बनाना था।

1.आकाश 2.आंसू 3.चंचल 4.अधमरा 5.अभिमानी तलवार 6.अत्याचारी 7.अत्याचार के काबिल 8.रहने का स्थान 9.प्रभु 10.मेहरबानी 11.ज़ख़्मी

(H-49)

फ़ुरकत[1] में आंसुओं की क्यों कर रुके रवानी।
शोले[2] भड़क-भड़क कर बरसा रहे हैं पानी।

दिल की लगी इलाही[3] कब तक न सर्द होगी,
बहता रहेगा कब तक आंखों से गर्म पानी।

हर लम्हा बेक़रारी[4], हर आन[5] आंख पुरनम[6],
सावन ये दर्द-ए-उल्फ़त[7] शायद है जाविदानी[8]।

1.याद 2.लपटें 3.हे प्रभु 4.हर समय बेचैनी 5.हर पल 6.गीली 7.प्रेम की पीड़ा 8.हमेशा रहने वाला

फुटकर **(H-49A)**

तीर इस अन्दाज़ से फेंका निगाह-ए-नाज़[1] ने,
लाख रोका मैंने लेकिन दिल निशाना हो गया।

अब ज़रूरत क्या रही दैर-ओ-हरम[2] की ऐ 'जमाल',
वक्फ़[3] सिजदों[4] के लिए जब आस्ताना[5] हो गया।

1.नखरे वाली आंखें 2.मंदिर–मस्जिद 3.प्रभु–अर्पण 4.पूजा घर

(H-50)

बरबाद कर चुका हूं ख़ुद जो आशियां[1] को मैं,
बेकार अब समझता हूं आह-ओ-फ़ुग़ां[2] को मैं।

साक़ी[3] की इक निगाह है काफ़ी मेरे लिये,
मुंह से लगाऊंगा न मय-ए-अरग़वां[4] को मैं।

सावन तुम्हारी याद से होता है शाद[5] दिल,
करता हूं रोज़ याद ख़ुदा-ए-जहां[6] को मैं।

1.घोंसला 2.हाय, दुहाई 3.शराब पिलाने वाला 4.उत्तम लाल शराब 5.शांत 6.दुनिया के प्रभु

(H-51)

मलायक[1] से, बशर[2] से, हूर[3] से, सबसे सिवा[4] निकले।
हमारे शहिन्शाह दोनों जहानों से जुदा निकले।

खुली जब आंख तो इन्सां के जामे[5] में ख़ुदा निकले।
समझते थे उन्हें हम क्या इलाही[6] और वह क्या निकले।

ख़ुदा जल्वानुमा[7] उनमें, ख़ुदा में वो फ़ना[8] निकले।
न वह उनसे जुदा निकला, न वो उससे जुदा निकले।

मुहब्बत में वह कुछ इक दूसरे की मुब्तिला[9] निकले।
ख़ुदा उन पर फ़िदा निकला, ख़ुदा पर वह फ़िदा[10] निकले।

वजूद-ए-ख़ाके आलम[11] में वह इसरार-ए-बक़ा[12] निकले।
इसी कूचे[13] ख़ुदा ख़ुद था इलाही वह ख़ुद ख़ुदा निकले।

चलो दीदार कर लो आज ही सत्संग में उनका।
ख़ुदा जाने कयामत[14] कब हो और क्या माजरा[15] निकले।

1.देवता 2.इंसान 3.स्वर्ग परी 4.निराले 5.चोले 6.हे प्रभु 7.प्रकट 8.लुप्त 9.एक रूप 10.कुर्बान 11.मिट्टी का शरीर 12.सदा रहने वाला भेद 13.तंग गली 14.प्रलय 15.घटना

(H-52)

मिसाल-ए-अश्क[1] गर मुझको निगाहों से गिरना था,
तो क्यों ए शोख़-दीदा[2] मेरी नज़रों में समाना था।

यों ही गर नीम-बिस्मिल[3] छोड़ कर मुझ को जाना था,
तो तेग़-ए-नाज़[4] से ए जां मुझे बेजां बनाना था।

ग़म-ए-हिजरां[5] से तंग आकर तेरी फुरक़त[6] में घबरा कर,
छुपे मुंह जो रोता था वह तेरा ही दीवाना[7] था।

1.आंसू की तरह 2.चंचल आंख वाला 3.ज़ख़्मी 4.अभिमानी की तलवार 5.वियोग का दुख 6.याद 7.पागल

(H-53)

मुहब्बत गिरिया-ए-ख़ामोश[1] बन कर बह निकलती है।
मुहब्बत अश्क[2] बनकर आंखों से गोहर[3] उगलती है।
मुहब्बत नाउमीदी से हमेशा दूर रहती है।
मुहब्बत हर मुसीबत ख़न्दा-पेशानी[4] से सहती है।
मुहब्बत सोज़[5] की तसवीर बन कर जगमगाती है।
मुहब्बत साज़-ए-फुरक़त[6] पर अनोखे गीत गाती है।
मुहब्बत रूह-ए-बेदारी[7] में दिल को गुदगुदाती है।
मुहब्बत के तसव्वुर[8] से ख़ुशी भी झूम जाती है।
मुहब्बत की ज़बां से हो नहीं सकता कभी शिकवा[9]।
मुहब्बत ख़ामोशी से दिल में कर लेती है घर अपना।

1.ख़ामोश आंसू 2.आंसू 3.मोती 4.हंसते हुए 5.जलन 6.याद 7.रूह की जागरूकता 8.ध्यान 9.शिकायत

(H-54)

मेरे काशाना-ए-दिल[1] पर जनून[2] की हुक्मरानी है।
शहीद-ए-इश्क[3] हूं हासल, हयात-ए-जाविदानी[4] है।
दिल-ए-मुज़तर[5] में या रब्ब, दर्द उठता है रह रह कर।
कोई तीर-ए-नज़र है या बला-ए-आसमानी है।
निगाह-ए-नाज़-ए-क़ातिल[6] ने, हमारा ही जिगर ताका।
ये उनके हुस्न-ए-पैकां[7] की, कितनी मेहरबानी है।
जुबां पर आह, दिल में दर्द, ज़ाहिर बशाश चेहरा है।
जनून-ए-इश्क़ में मेरी, यह अपनी ज़िन्दगानी है।
तलाश-ए-मंज़िले राहत[8], असूल-ए-ज़िंदगानी[9] है।
यह उलफ़त[10] में मर मिटना, हयात-ए-जाविदानी है।
तुम्हारा हुस्न है रौनक़, फ़िज़ाय-ए-गुलशन-ए-आलम[11]।
तुम्हारा जलवा-ए-रुख़[12], शम्मा-ए-बज्मे ज़िन्दगानी[13] है।
सर-ए-महफ़िल[14] सुनाता हूं, जिगर को थाम कर बैठो।
हिकायत-ए-दर्द[15] की है और दर्द-ए-उलफ़त[16] की कहानी है।
मेरे काशाना-ए-दिल पर जनून की हुक्मरानी है।

1.दिल रूपी घर 2.पागलपन 3.प्रेम में गर्क 4.सदा रहने वाला जीवन 5.तड़पता हुआ दिल 6.क़त्ल करने वाले की नख़रेबाज़ निगाह 7.भाले की सुंदरता 8.शांति की मंज़िल की तलाश 9.ज़िंदगी का असूल 10.प्रेम 11.दुनिया के बग़ीचे की सुंदरता बढ़ाने वाला 12.चेहरे की सुंदरता 13.सभा की रोशनी की जान 14.सारी सभा में 15.दर्द की कहानी 16.प्रेम की पीड़ा

(H-55)

मेरे दिल को बना लो घर अपना,
आंखों में बसेरा करो न करो।
मन मन्दिर छोड़ न जाओ कहीं,
मेरे डेरे में डेरा करो न करो।
बिरहा प्रेम का फन्दा फोड़ा है,
मज़बूत हज़ारों ज़ंजीरों से।
तुम भगत के वश में हो भगवान,
भगतन को चेता करो न करो।

रहती सुगन्ध ज्यों फूलों में,
मधु में मिठास माखन दूध में।
त्यों आज हृदय में वास करो,
चाहे मोक्ष भी मेरा करो न करो।
तन मन में बसा तुम ही सदा,
चाहे ध्यान इधर को करो न करो।

(H-56)

मैं रस्म-ए-जहां[1] से हूं कुछ सोच के बेगाना।
कहती हैं तो कहने दो, दुनिया मुझे दीवाना।

है ज़ौक़-ए-तलब[2] मेरा या नज़र-ए-करम[3] उन की।
फिरता दर-ए-सावन पर सूरत है गदायाना[4]।

अब ज़ीस्त[5] की क्या परवाह, अब मौत से क्या डरना।
हम ख़ुद को समझते हैं ख़ाक-ए-दर-ए-जानाना[6]।

1.सांसारिक रिवाज़ 2.मांगने की इच्छा 3.कृपा दृष्टि 4.भिखारी 5.जीवन 6.प्रीतम के दरवाज़े की धूल

(H-57)

मैं तेरा ही दीवाना हूं प्यारे सावन,
अपने से भी बेगाना हूं प्यारे मेरे सावन।
मयख़ाने से तेरे मैं कहीं जा नहीं सकता,
ख़ाक-ए-दर-ए-मयख़ाना[1] हूं प्यारे मेरे सावन।
कुरबान मेरा दिल है, मेरी जान-ए-तसद्दुक[2],
तू शम्मा[3] है मैं परवाना हूं प्यारे मेरे सावन।
मख़मूर[4] निगाहों का तेरी रोज़-ए-अज़ल[5] से,
मस्ताना हूं, मस्ताना हूं प्यारे मेरे सावन।

1.शराबख़ाने के द्वार की धूलि 2.जान कुर्बान 3.आग की लपट 4.नशीली 5.प्रलय का दिन

(H-58)

मैं पाक[1] मुर्शिद की ख़ाक-ए-पा[2] को,
लगाऊं सर पर उठा उठा कर।
है मस्त-ओ-बेख़ुद[3] बनाया मुझ को,
शराब-ए-वहदत[4] पिला पिला कर।
थी इतनी मुझमें भरी यह हसरत[5],
नजुज़[6] में इन्सां कुछ भी समझूं।
मिटाया सदियों का कुल अन्धेरा,
तू ने दीपक जगा जगा कर।
मैं ख़ुद को समझा था महज़[7] बन्दा,
है चन्द रोज़ा कयाम[8] इस जा पर।
बनाया मुझको है ज़ात[9]-ए-यज़दां[10],
ख़ुदी[11] को मेरी मिटा मिटा कर।
फिरा मैं जंगल में एक मुद्दत,
तलाश-ए-रब्ब[12] में कहां वो होगा।

बफ़ज़्ले मुर्शिद[13] है, अब वो हाज़िर,
थका था, जिस को बुला बुला कर।
निगाह-ए-रंज-ओ-अलम[14] ने हिज्र की,
सुनाई ग़म[15] की कहानी सारी।
था तब भी मैं तो बग़ल में तेरी,
कहा ये मुझ को सुना सुना कर।
हज़ार कुलफ़त[16] उठाई मैं ने,
ये सुन के ख़ाली वो मुस्कराये।
मिटाया रंज-ओ-अलम को मेरे,
गले से अपने लगा लगा कर।
है हुस्न-ए-जानां[17] बियां से बाहर,
न आंख को है ताब-ए-दीदन[18]।
बसे हैं पूरन जहां मैं देखूं,
नज़र को अपनी उठा उठा कर।

1.पवित्र 2.चरण धूलि 3.मस्त 4.प्रभु भक्ति का नशा 5.इच्छा 6.अखंड 7.केवल 8.ठहराव 9.जगह 10.प्रभु भक्त 11.अहंकार 12.प्रभु की तलाश 13.गुरु कृपा 14.दुख–दर्द भरी नज़र 15.वियोग 16.परेशानी 17.प्रीतम की शोभा 18.ताब सहने की शक्ति

(H-59)

ये नया पहलू निकाला दिल जलाने के लिये।
कुछ न कुछ लिख देते हो, मुझ को रुलाने के लिये।
तुम नहीं आते तो आ जाती तुम्हारी याद ही।
कोई तो हो दिल की दुनिया को बसाने के लिये।
दस्त-ए-नाज़ुक[1] से कलम का ख़ंजर[2] उठाना क्या ज़रूर।
ख़म-ए-अबरू[3] है क्या कम ख़ून बहाने के लिये।
प्यारे तेरी इन्तज़ार करता हूं मैं रात-दिन,
शोक को बेकरार करता हूं।
तू मेरे साथ लाख कज़-अदाही[4] कर,
फिर भी तेरा मैं एतबार करता हूं।
जान सी चीज़ हो फ़िदा[5] तुझ पर,
मैं तिशना-ए-दीदार[6] रहता हूं।

प्यार करना सिखा दिया तू ने,
इसलिये तुझ से प्यार करता हूं।
लगती है जिस गुनाह-ए-मुहब्बत[7] पर ताज़ीर[8],
मैं वो ही बार-बार करता हूं।
मुझे अपनी आगोश-ए-मुहब्बत[9] से दूर न कर देना,
क्योंकि मैं तुझ से प्यार करता हूं।

1.नर्म हाथ 2.तलवार 3.भृकुटी का ठेढ़ापन 4.टेढ़ा नख़रा 5.कुर्बान 6.दर्शन का अभिलाषी 7.प्रेम का गुनाह 8.सज़ा 9.प्रेम की गोद

(H-60)

लागी लागी सब कहें, लागी बुरी बलाये।
लागी उसको जानिए, जो आर पार हो जाये।
अब लागी नाहीं छूटे, चाहे जिया जाये।
अरी मोरा जिया जाये, अरी मोरा जिया जाये।
इस उल्फ़त-ए-बे-दीन[1] का बुरा हो चलन।
छूटती नहीं है लगन चाहे जिया जाये।
लाख ठुकराओ भले, पांओ में क्या होता है।
सर उसी के क़दमों पै फ़िदा[2] होता है, चाहे जिया जाये।
सर कभी धड़ से जुदा होता है, चाहे जिया जाये।

1.बिना धर्म का प्रेम 2.कुर्बान

(H-61)

लानत है तुझको ए दिल, दुनिया से दिल लगाया।
बदले में इसके क्या-क्या, बार-ए-अलम[1] उठाया।
सौदा-ए-ख़ाम[2] था सब, कुछ भी न हाथ आया।

1.दुख–दर्द 2.झूठा व्यापार

(H-62)

वफ़ूर-ए-कैफ़[1] से दिल इतना बेक़रार[2] न हो।
मैं डर रहा हूं कि मुन्तज़िर[3] निगाह-ए-यार न हो।
शरीक़-ए-इश्क़[4] गर अक्ल परदादार न हो।
नज़र के सामने कुछ भी सिवाय-ए-यार न हो।
दिखाऊं दाग़-ए-मुहब्बत[5] जो हो कसूर मुआफ़।
सुनाऊं क़िस्सा-ए-फुरकत[6] जो नागवार[7] न हो।
उन्हें तो देखकर आइना-ए-वहम[8] आता है।
कि यह किसी चश्म-ए-इन्तज़ार[9] न हो।
अजब ज़माना है करता नहीं इसे तसलीम[10]।
किसी सबब से बज़ाहिर[11] जो बेक़रार[12] न हो।
मज़हब-ए-इश्क़[13] में जायिज़ हो यक़ीनन।
चूम लूं मैं लब-ए-लाली[14] भी अगर वो आर[15] न हो।

1.नशे की बहुतायत 2.व्याकुल 3.इंतज़ार में 4.प्यार में सांझीदार 5.प्रेम का दाग़ 6.याद की कहानी 7.नापसंद 8.मुंह देखने वाले शीशे का भ्रम 9.इंतज़ार भरी आंख 10.अंगीकार 11.प्रकट 12.व्याकुल 13.प्रेम का धर्म 14.होठों की लाली 15.नापसंद

(H-63)

सखी वो कितने सुन्दर थे, मैं सेवक थी वो मन्दिर थे।
रुख़-ए-सावन पर आई थी लाली, झुकी हुई थी डाली डाली।
मैं बाहर थी वोह अन्दर थे, सखी वो कितने सुन्दर थे।
साजन हम संग करे कलोल, मुख से बोले मीठे बोल।
नैन दिये हृदय के खोल, मैं सेवक थी वो मन्दिर थे।
छबी उनकी निराली थी, सूरत भोली भाली थी।
वो चौदवीं की रात के चन्द्र थे, सखी वो कितने सुन्दर थे।

(H-64)

साक़िया[1] वो मय पिला, जो तेरे मयख़ानों[2] में है।
इस में वो मस्ती मिला, जो तेरे मस्तानों में है।

न उसे मस्जिद में पाया, न वो बुतख़ानों[3] में हैं
वो दुर-ए-मकसूद[4] सावन, तेरे पैमानों[5] में है।
क़िस्सा-ए-फ़रयाद-ए-मजनूं[6], बे असर हो दासतां।
जल के मर जाने की हसरत[7], अब भी परवानों[8] में है।

1.शराब पिलाने वाला 2.शराबख़ाने 3.मंदिरों 4.आदर्श मोती 5.वचनों 6.फ़रहाद और मजनूं की कहानी 7.चाहत 8.पतंगों

(H-65)

साक़िया वो मय[1] पिला, न होश रहे न हम।
ऐसी पिला दे साक़िया, न होश रहे न ग़म, न तू रहे न हम।
शम्स को ऐसी पिलाई, पी के मतवाला हुआ।
ऐसा मतवाला हुआ, न होश रही न चम।
कोई कहता है तू ही तू है, तू ही तू है।
कोई कहता है हम ही हम हैं, हम ही हैं हम।
आंखों आंखों से पिला दी मेरे साक़ी ने।
'जमाल' को ऐसी पिलाई, पी के मतवाला हुआ।
देखते देखते ही रह गया, न तूं न हूं, न तू रही न हम।

1.शराब

(H-66)

सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।

तुम पास नहीं कौन सुने मेरी कहानी।
सावन कभी आओ तो सुनो मेरी ज़बानी।

मैं तेरे सिवा किस को कहूं यह तो बताओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।

जोबन पे जवानी है और चांदनी रातें।
तुम भूल गए सावन क्यों प्यार की बातें।

जब प्रीत लगाई है तो अब तोड़[1] निभाओ।
उजड़ी हुई दुनिया को मेरी आ के बसाओ।

आंखों ने तेरी याद में सौ अश्क[2] बहाए।
आहों ने मेरे सीने में तूफ़ान उठाए।

रोते हुए हृदय को मेरे आके हंसाओ।
सावन कभी आओ, कभी आओ, कभी आओ।

1.अंत तक 2.आंसू

(H-67)

सावन गले लगा कर बांहों का हार डालो।
शैदा[1] बना के अपना उल्फ़त[2] में मार डालो।

आंखों में बस रहे हो, घर दिल में कर चुके हो।
अब तो हया[3] का परदा रुख़[4] से उतार डालो।

मजनूं की कब्र पर ये कुत्बा[5] लगा हुआ था।
नाम-ए-वफ़ा[6] पे सब कुछ तन-मन भी वार[7] डालो।

उल्फ़त में हाय अब तो इक जान बच रही है।
उसको भी ए 'जमाल' अब बाज़ी में हार डालो।

1.मोहित 2.प्रेम 3.लज्जा 4.चेहरा 5.नोटिस बोर्ड 6.भक्ति के नाम पर 7.कुर्बान

(H-68)

सोज़म मिसाल-ए-आहन[1] दर[2] आतिश-ए-जुदाई[3]।
है चोट चोट ऊपर, देता है दिल दुहाई।
गोहर[4] फिरा हक़ीक़त[5] अज़[6] दर्द-ए-हकीमां।
बस देखना है उसका, फ़ुर्कत[7] की है दुहाई।
ज़ालम अज़ां[8] जमाना-ए-आशिक़ चश्म-बा-दिलबर[9]।
बेदिल से कोई पूछे है कैसी दिलरुबाई[10]।
बू-ए-ख़बर[11] मरांगर इश्क़ सीना-ए-सोज़ी[12]।

करत न भूल करां मैं, सभा रु से आशनाई[13]।
ओहों कम बाख़लक दीदम[14] को ख़ुद आलम-ए-नुमाई[15]।
औरों को तो करते कितनी ही रहनुमाई[16]।
अज़ जान-ए-ख़ुद ख़रीदम सौदा-ए-इश्क़ जानां[17]।
हो जिसके घर न बेटी क्या कीमत-ए-जुदाई।
दानद[18] बहा-ए-वसलत[19] को दूर शूद ज़े दिलबर।
टूटे जो कोई ओज़ां है, क़द्र-ए-मोमनाई[20]।
रफ़तम बा कुये जानां बा कसवत-ए-जुदाई[22]।
देखा जो वहां तमाशा, नहीं बीच बादशाही।

1.जलते लोहे की तरह 2.द्वार 3.वियोग की आग 4.मुक्ता 5.सच्चाई 6.तरफ़ 7.याद 8.बढ़कर 9.जिस आंख में प्रभु बसा हो 10.हावभाव 11.ख़बर की भनक 12.बेचैनी 13.मोमबत्ती की लपट से मित्रता 14.दुनिया की आंख वाला 15.दुनिया दिखाना 16.मार्गदर्शन 17.प्रीतम के प्रेम का सौदा ख़रीदने की तरह 18.ज़बरदस्ती 19.मिलाप की क़ीमत 20.आस्तिकता की क़द्र 21.प्रीतम की गली 22.सख़्त वियोग

(H-69)

हम में भी न थी कोई बात,
याद ने तेरी भुला दिया।
हम न तुझे भुला सके,
तुम ने हमें भुला दिया।
न सुन सके तुम क़िस्सा-ए-ग़म,
सुनेगा कौन जिसने दिया है ग़म।

(H-70)

हरि बिन जीवन कौने काम।
सकल सम्पत्ति और मान बड़ाई, दीसे सकल बाम ये ख़ाम[1]।
स्वांस दो धारा बहती जाए, हर घड़ी आठों जाम[2]।
हरि बिन जीवन कौने काम।

नाम न जपियो सदा मदमाता, खो बैठ्यो अपना निजधाम।
सकल मतां में केवल हरिनामा, बिन रस चाखे जीवन कौने काम।
हरि बिन जीवन कौने काम।

हरि नाम सम जग कछु नांहि, खोल देखो वेद कुरान।
हरि हरि करते उमर गंवाई, अब तो करले अपना जान।
हरि बिन जीवन कौने काम।

हे हरि जी मोको कर ले अपना, बिन पैसे बिन दाम[3]।
हरि जी दास की सुन लो पुकारा, थक आए प्रभु तेरी छाम[4]।
हरि बिन जीवन कौने काम।

1.नाशवान 2.पहर 3.मोल 4.छाया

(H-71)

हरि मोको ले चल अपने धाम।
मन-इंद्री रस लोभ लुभाना, बसियो हाड मांस को चाम।
हरि मोको ले चल अपने धाम।

तन-मन के पिंजरे में बैठ कर भूल गयो अपना धाम।
मोह-माया का रूप हो गयो, बसियो जादू के धाम।
हरि मोको ले चल अपने धाम।

अब निकसूं कस निकसिया जाए, कर बैठ्यो इसमें बिसराम।
हरि सत्गुर मोहि आन बचावो, नहीं तो पड़ा रहूं इस ग्राम।
हरि मोको ले चल अपने धाम।

बात बनाऊं करूं कुछ नांहि, कस पहुंचूं प्रीतम तोरे गाम।
घट के पट खोलो मोरे हरिज्यू, मैं तो हार पड़ा तेरी छाम।
हरि मोको ले चल अपने धाम।

मैं अवगुण भरा कोई गुण नांहि, किस मुंह से करूं प्रणाम।
आपन बिरद आप करि राख्यो, हरिजी दास उपर सिर छाम।
हरि मोको ले चल अपने धाम।

(H-72)

हे सत्गुरु अब फिर दिखाओ, रुख़-ए-अनवर[1] मुझे अपना।
वो मुखड़ा नीम-बिस्मिल[2] को, जल्द आकर दिखा अपना।
वो मीठी धुनि जो तेरी, उसे आकर सुना दे तू।
रंज-ओ-महल[3] में उलझा हूं, मुझे आकर बना अपना।
जुदाई में तेरी राह में, सुबह-ओ-शाम फिरता हूं।
किनारे तू लगा आकर, नहीं इस जा[4] कोई अपना।
यहां देखा वहां देखा, मगर न हाथ में आया
कहूं मैं क्या बता तूं ख़ुद, तू क्यों कर बने अपना।
सिवाय तेरे हे सत्गुरु, न सूझे यहां मुझे कोई।
जो सारी अपनी बीती का, सुनाऊं माजरा[5] अपना।

1.अति सुंदर 2.चेहरा 3.अधमरा 4.शोकग्रस्त 5.जगह 6.घटना

(H-73)

हैं चरचे आसमानों में ज़मीं वालों का क्या होगा।
ख़बर आई ख़ुदा ख़ुद जायेगा ख़ुद रहनुमा होगा।
कोई बोला कि कैसे जायेंगा वो बन्दों की बस्ती में।
सदा[1] आई कि बन्दों के लिये बन्दा बना होगा।
हैं चरचे आसमानों में...
जो पूछा कैसे पहचानंगे बन्दे तो जवाब आया।
वो यकता हुस्न[2] में होगा वो औरों से जुदा होगा।
हैं चरचे आसमानों में...
बुतों को होश कैसे आयेगी और कैसे उन्हें बुलायेगा।
वो सोज़-ए-इश्क[3] से खींचेगा और नग़मा सरा होगा।
हैं चरचे आसमानों में...
बुतों पर जो सज़ा वाजिब है कि उसका क्या होगा।
कहा वह बख़्श्या दे रहमत से उन सबको तो क्या होगा।
हैं चरचे आसमानों में...

1.आवाज़ 2.अनुपम सुन्दरता 3.प्रेम की जलन 4.ध्वनि रूप

पंजाबी कविताएँ

(P-1)

असीं परदेसी, वे साडा दिल परदेसी,
इश्क दे विच असां जान गवाई, लोकां भाणे हसी
असीं परदेसी, वे साडा दूर टिकाणा,
तैनूं अपणे हुस्न दा माणा।
रब्ब दे वास्ते सानू पार लंघाणा,
साडा होर न कोई टिकाणा।
जिसदे डिठेयां मन सबर न आवे,
ते मैं तरफ उसे दी भज्जां।

(P-2)

अक्खियां रज्ज न देखेया मुंह तेरा,
मैंनूं तड़फदी नूं कई साल होये।
अट्ठती साल दी उमर हुण गुज़र चल्ली,
सिक्कां सिक्कदियां मेरे बग्गे वाल होये।
हुण ते जान वी दे जवाब चल्ली,
तुसी हालां वी न मेहरबान होये।
मरके मिलेयों प्यारेया कम्म केहड़े,
जे दुनियां विच्च सड़ मन्नूर होई।
करें दी ज़ारियां उमर गुज़ार चल्ली,
पिया ने मूल बुलाया ना।
डाहढी सद्धर है पिया दे वेखणे दी,
पर पिया ने दरस दिखाया ना।
आवे सुख दा साह न इक मैंनूं,
मेरे हिजर नूं दूर कराया ई।
दम दम रहे प्यारेया याद तेरी,
दिलों असां वी कदी भुलाया ना।
हाय अरज़ करो सइयो दस्सो मैंनूं,
की सबब होया पिया आंवदा ना।
विच्च विछोड़ेयां उमर गुज़र चल्ली,
पिया सग मेरे रंग मचावंदा ना।

लूं लूं मेरा ग़मीं ग़रक होया,
नकारी गनका नूं हस बुलावंदा ना।
गड़यां लग अक्खां जिन्द जान भड़के,
हाय लगी नूं आण बुझावंदा ना।
ज़ारो-ज़ार रोवां नित्त मार आहीं,
केहियां गयों जुदाइयां पा सज्जणा।
लाइयां भुल्ल कें अक्खियां संग तेरे,
चुक्केआ सिर ते गमां दा मोह सज्जणा।
गई होश ते अकल नूं भुल्ल सारा,
चढेया जोश प्रेम अजेहा आ सज्जणा।
डाहडी रूल के खाक विच खाक होईयां,
हुण दस्सीं खां पाक दीदार सजणा।
हाय आण के करो न्यां कोई,
केही प्रेम तेरे ने घेरी हां मैं।
सदके नाम तेरे करां दीन दुनिया,
सिर थीं पैरां तीकण तेरी हां मैं।
दरशण देख के भुल्ल गई इल्म सारा,
कूकां तैनूं ही पा दर दर फिरी हां मै।
करीं रहम प्यारेया शर्म तैनूं,
भावें चंगी मन्दी फिर भी तेरी हां मैं।

(P-3)

आई रुत्त बसन्त, सखी री आई रुत्त बसन्त।
नहीं आया घर कन्त सखी री, मेरी है बस-अन्त।
दुनियां माणे मौज बहारां, चावां भरियां वज्जण सतारां।
नहीं आया घर कन्त सखी री, मेरी है बस-अन्त।
मैं मौज मेले लोकां खुश होणा, पिया विहुणी बह बह रोणा।
नहीं आया घर कन्त सखी री, मेरी है बस-अन्त।

(P-4)

आ के वेख सत्गुरु जी हाल मेरा,
किवें रोन्देयां झट लघांवनी हां।
मच्छी वांग है तड़फदी जान मेरी,
पई कूंज दे वांग कुरलावनी हां।
जुगां जुगां तों आप नूं याद करां,
कदम कदम ते सीस झुकावनी हां।
तेरे दरश दी भुक्ख रहे हर वेले,
तांहीयों गीत फ़िराक दे गावनी हां।

(P-5)

आजा प्यारे सत्गुर आजा, अपनी सूरत मैंनू विखा जा।
सिदी-सादी सूरत तेरी, प्यारी प्यारी मूरत तेरी।
चेहरा जल्वा रब्ब दा दिस्से, दिलनूं लुभावन वाले आजा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।
सोहणा मत्था चिट्टी पगड़ी, नूर चमके हर लिव लगड़ी।
अक्खियां प्रेम प्याले भरियां, भरवट्टे नूर पलट्टे आजा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।
जुल्फां तेरियां रेशम तारां, नूरे इलाही दियां देन चमकारां।
इक इक वाल सिरे दे उत्तों, दोवें आलम वारां आजा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।
मुक्खड़ा सुहावा सहज धुन बाणी, सुन-सुन पावां कन्त निशानी।
रसीले बैण अत मिठड़ी बोली, मिटावन तपत हिरदे दी आजा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।
सुच्ची दाढ़ी छाती ते आवे, बग्गी हो हो नूर बरसावे।
लाली नाम दी भा पई मारे, ग़रीबी सिखावन वाले आजा।
आजा प्यारे सत्गुर आजा।

(P-6)

आपणे पिया दे कोल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
नदी ठाठां पई मारे, पार बैठा सज्जण पुकारे।
दिल रैहंदा न मूल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
सोहणी प्रेम दी मारी, हौके व्याकुल भारी।
डाहढी इश्क विच्च चूर, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
ला के सिरो सिर बाज़ी, बण के प्रीतम दी मैं दासी।
मेरा कोई नहीं होर, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
छड्ड के दुनियां दे हासे, कीते उस फुल्ल पतासे।
अपणी जिन्दड़ी न रोल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
ला के प्रीत दी डोरी, कदी न सी ओह डोली।
पहुंची आख़िर प्रीतम दे कोल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
मैं वी आई दर तेरे, पान्दी जोगण दे फेरे।
मेरी ज़िन्दड़ी न रोल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
पिया दर तेरे दी दासी, होई हां सख़्त उदासी।
हुण तां दरों न मोड़, हाय वे असां जाणा ज़रूर।
सावन तेरे जेहा न कोई, मालिक तेरे बाझ न कोई।
इक्क वारी तां बोल, हाय वे असां जाणा ज़रूर।

(P-7)

आहां मेरियां दर्दां भरियां, साड़न लोक सभाये।
सीने आशिक लोकां ताईं, हर दम अंग भड़काये।
इक्क इक्क आह निकल के बाहर, भुन्न सुट्टे जग सारा।
दर्दी दिलां आशकां ताईं, फूक जलाया सारा।
जद मैं अग्गे जा किसे दे, सुणावां हाल हिज्र दा।
सिर तों लैके पैरां तीकर, सारा ही सड़ बलदा।
चढदे सावण रोन्दी धोन्दी, बागां वल्ल उट्ठ धावां।
उत्थे साड़ेया सब जग सारा, मेरियां बलदियां आहां।
पिया प्यारा बे-परवाहा, करां मैं की कारां।
आसण मालां जिन्दड़ी आपणी, दर उस दे तों वारां।
है कोई महरम सन्देश मेरे नूं, पास पिया लै जावे।

हाल हकीकत दिल दी सारी, उसनूं फोल सुणावे।
करो मेहर मेहरां दे दाते, जान जाये कुरला के।
आजिज़ बन्दी दर तेरे दी, मार न मैंनूं रुला के।
साडे वल्लों चित्त उठाया, होरां नू परचाओ।
दस्सीं ओह मुखड़ा नूरी आपणा, होर नहीं तरसाओ।
मैं मस्कीन निमाणी सावण, दर तेरे ते आई।
वास्ते आपणे मालिक दे प्यारे, मैंनूं छेत्ती मुख दिखाईं।

(P-8)

प्रेम पेच

इश्क दे पेच कुवल्ले, दुहाई वे लोको।
जान तमाचे ना झल्ले, दुहाई वे लोको।
दिल मेरा तड़फे, अक्ख शरमावे।
मां झिड़के, दिल पट्टीयां पढावे।
छोड़ नाहीं किसे गल्ले, दुहाई वे लोको।
जग रक्खना, नाले प्रीत निभाणी।
हाये वे जिया तेरी रह नहियां आवणीं।
फट्ट ने कलेजे दे अल्ले, दुहाई वे लोको।
कोई पास पिया लै चल्ले, दुहाई वे लोको।
माही वे मुहाविया तरस कमा लै।
फ़ज़लां दे बेड़े चाड़ लगा लै।
पैसा नहियों मेरे पल्ले, दुहाई वे लोको।

(P-9)

उट्ठ जाग सफ़र नूं जाणा ए, एह दुनिया मुसाफ़िरखाना ए।
इस सिप चों मोतियां जाणा ए, जा के हारां विच्च लग्ग जाणा ए।
असां दुनिया तो चल्ले जाणा ए, एह दुनिया मुसाफ़िरखाना ए,
फुल्ल टहणी नूं छड्ड जाणा ए, टुट्ट के मुड़ टहणी ना लगाणा ए,
सानूं खबर नहीं असां वी जाणा ए, उट्ठ जाग मुसाफ़िर जाणा ए,

जे फुल्ल टहणी नूं छड्ड देंदा, कदी भुल्ल के टहणी नाल लगांदी ना।
कर सफ़र जे सफ़र नूं जाणा ए, उट्ठ जाग मुसाफ़िर जाणा ए।

(P-10)

एहा करम करीं तू आपणा, या रब्बा मेरे ताईं।
इक्क दम विसरे याद न तेरी, मन जाय न होर किथाईं।
वल्ल आपणे तू लै चल्ल मैंनूं, राह भुल्ली मैं साइयां।
महफिल मेरी तूं कर ज़िन्दा, पा फेरा आपणा साइयां।
इस कुम्हलाये हिरदे ताईं, तू कर ताज़ा आ के।
प्रेमी भगती बख्श असानूं, भर दे जिन्द फिर आ के।
नूरी वाटे इश्कां वाले, भर भर पीते जिस ने।
अपणा आप सज्जण विच पा के, ज़िन्दा कीता जिसने।
दिल ओह जो नाल पिया दे, नाम कमावण लग्ग जावे।
ओह रूह जो चाह प्रेम दी, दिलबर कोल लै जावे।
झूठे वहम ख्यालां अन्दर, ऐवें उमर गुज़ारी।
सावण पीर तेरे दर आई, सुण मेरी याचना सारी।

(P-11)

ऐ प्रीतमा इस कूकर ताईं, खैर दरस दी पाईं।
बाझों तेरे दर्द मेरे दा, वाकिफ़ कोई नाहीं।
कुट्ठी लुट्ठी इश्क तेरे विच्च, दर तेरे ते आई।
तूं ही वाकिफ नब्ज़ मेरी दा, करीं इलाज दुहाईं।
तेरे जेहा वैद न कोई डिट्ठा, विच्च दो जहानीं।
होर कोई जाणे सार ना मेरी, सारे इस जहानीं।
तेरे मिलण दियां तांघां सानूं, जाणे खलकत सारी।
जल्दी दस असां नूं प्यारे, मुक्खड़ा अपणा नूरी।
जद तीकण तैनूं वेख न लवां, होवे नाहीं सबूरी।
जद दी सोहणी सूरत तेरी, सावण नज़र विच्च आई।
वहम ख्याल दूर होये सारे, ग़म साडे दूर कराई

(P-12)

ओह सोहणा एना सोहणा सी, जो दिस्सदा सी चन्न चढ़दा सी।
मन मोती लै लै हंझुओ दे, दरबार ओह दे विच जड़दा सी।
ओहदे चार चुफेरे देखी मैं, घुम्मदी सी मस्ती कुदरत दी।
ओह इक्को इक्क ही देखी मैं, दुनिया ते हस्ती कुदरत ही।
ओहनूं वेख-वेख के फुल्लां ते, इक्क नवीं जवानी आँदी सी।
कलियां दे हासे खिड़दे सी, अक्खियां विच मस्ती गौंदी सी।
ओहदे नैणा'चों लै चमक-दमक, विजली चमकारे सिक्खे सी।
एसे लई भिन्नी रैनड़िए, पए चमकण तारे सिक्खे सी।
ओह सोलो कला सुपूरण सी, हर साज़ दी मिट्ठी तान सी ओह।
बेसमझ़ां लई इन्सान सी ओह, पर भगतो लई भगवान सी ओह।
ओह केहो जेहा सी कैसा सी, नहीं दित्ती जा तसबीह[1] सकदी।
जे कदे कोई गलती कर बैठे, ओहदी मूर्खता नहीं जा सकती।
ओह नूर इलाही शांतमई? जद मस्ती दे विच औंदा सी।
डुब्बे हुए पापी बन्देयां दे, बन्ने ते बेड़े लौंदा सी।
ओह निगाह नाल ही देंदा सी, कर दौलतमंद फकीरां नूं।
सी कासे हत्थ फड़ा देंदा, कई हैं कड़खां अमीरां नूं।
ओह चमकां दे-दे धरती दे, ज़र्रे नूं सूरज करदा सी।
जिहनूं लोकीं कारूं कहंदे सी, ओह कूकर ओहदे दर दा सी।
ओह सी परतक्ख परमाण नहीं, कोई शै भी ओहदे तुल्ल दी नहीं।
एह दुलिया दी दौलत दिस्सदी जो, ओह दी धूड़ी दे वी मुल्ल दी नहीं।
ओह अक्ख जां गहरी करदा सी, सागर दा सीना सड़दा सी।
ओह घूरी वट्ट जे ँदा सी, सूर ना डरदा चढदा सी।
ओहनूं चन्न सितारे अम्बर वी, झुक-झुक के सजदे करदे सी।
बण-बण के बद्दल सावण दे, ओहदा आ-आ पाणी भरदे सी।
ओह कौण सी महरम दस्स देवां, ओह सावण सिंह प्यारा सी।
ओह जैमल सिंह दियां अक्खां दा, अरशां तों आया तारा सी।

1.मिसाल

(P-13)

कद मिलसी मैं बिरहों सताई नूं।
आप न आवें ना लिख भेजें, भट्ठ अजेही लाई नूं।
तैं जेहा कोई होर न जाणां, मैं सूल सताई नूं।
राती दिने आराम न मैंनूं, खावे विरहा कसाई नूं।
बाझ तेरे धृग जीवणा मेरा, जूये जान हराई नूं।

(P-14)

कित्थे वसैं कित्थे मैं लभ्भां तैनूं,
मैंनूं दस्स वी कोई न पाई होई ए।
जगत बेलियां विच्च मैं भाल थक्की,
खबरे कित्थे शक्ल छुपाई होई ए।
रत्ता चैन वी लैण न देंदी ए,
तेरी सिक्क ने जिन्द तड़फाई होई ए।
सज्जणां वेख खां विच्च उडीक तेरी,
नैणां मेरेयां ने खैबर लाई होई ए।
तेरी भेट लई कुझ नहीं कोल मेरे,
सारी समग्री तेरी बणाई होई ए।
तेरे दरस लई जिन्द अटकाई होई ए,
ओह वी तली दे उत्ते टिकाई होई ए।

(P-15)

गल्ल कीती ते गल पई निभाणी लोड़िये।
शमां दे परवाने वांग जलदेयां अंग न मोड़िये।
हाथी इश्क महावत रांझा, अंकुश दे दे होड़िये।
सुण वे लोका मेरा होका, लग्गड़ी प्रीत न तोड़िये।
दस्त विकाणी विकाणि हां वे मैं, हुण उजर की रक्खा।
भट्ठ खिड़ेया दा गरी छुहारा, ज़हर रांझण दी खंड कर चक्खा।
सुण यार गुमानियां वे, ऐनी गल्लीं सानूं तारदा।
नैणां दी नाव करे सो लंघे, डूंघा घाट प्यार दा।

रात अन्धेरी गलियां चिक्कड़, मैं भरवासा यार दा।
सुण प्यारेया रस भिन्ना, ढोलणा नदियों पार उतारदा।

(P-16)

गल्लां मिट्ठियां मिट्ठड़े ढोलणे दियां,
ठण्डे साह भरेंदियां भुल्ल गइयां।
असी रुलदियां रुल्ल खरुल्ल गइयां,
केहियां दर्द अंधेरियां झुल्ल गइयां।
ओ मेरेया सावणा विच्च उडीक तेरी,
अत्थरु डुल्लदेयां डुल्लदेयां डुल्ल गइयां।
जमाल जिन्हां दे शौह परदेसी,
ओह तत्तियां रुल्ल खरुल्ल गइयां।
हाय कन्तां वालेयां नू की सार साडी,
असी केहड़े तराजुआं तुल्ल गइयां।
'जमाल' ने कन्त हंडाया रज्ज के ना,
पीघां चढ़ियां हुलारेयों खुल्ल गइयां।

(P-17)

चंगी मौत विछोड़े दे दुख कोलों,
पई तड़फदी जान बिमार दी ए।
गई भुल्ल जहान दी ऐशो इशरत,
हरदम याद रहंदी दिलदार दी ए।
सोहणा हस्स के करे कलाम नाहीं,
अक्खां विच्च फिरदी सूरत यार दी ए।
मैं तत्ती नू देवीं तूं मेल प्यारा,
रब्बा आस तेरे दरबार दी ए।

(P-18)

बारह मासा

चढ़दे चेत नूं चित्त उदास होया,
जिस दिन दा पिया विछोड़ बैठी।
कीती अर्ज़ होई मन्जूर नाहीं,
हत्थ पैर बथेरड़े जोड़ बैठी।
सोहणा मुड़े नहीं कर कंड तुरेया,
लक्खां हारड़े वसीलड़े जोड़े बैठी।
उस वक्त नूं रोवां प्रीतमां वे,
जिस वेलड़े अक्खियां जोड़ बैठी।

आया माह विसाख नहीं पास माही,
लाई अग्ग विछोड़े ने मार विच्चों।
ला के नेह सहेड़ेया दुख मैं तां,
पाया सुख न इस प्यार विच्चों।
जिवें विच्छड़ी कूंज कुरलावन्दी ए,
ते विच्छड़ी रोवन्दी डार विच्चों।
खाली थां तुध बाझ प्यारेया वे,
डर आंवदा घर बार विच्चो।

जेठ हेठ फिराक दे होई मुद्दत,
अक्खियां तक्कदियां थक्कियां राह तेरा।
करके नज़र तूं इक्क मेहर वाली,
कदी कुल्ली मेरी विच्च पाईं फेरा।
नहीं तां घल्ल सुनेहड़ा आवणे दा,
अट्ठे पहर रैहंदा मैंनूं चाओ तेरा।
तेरे बाझ मेरा कोई होर नाहीं,
कोई बणे ना यार आसरा मेरा।

चढ़दे हाढ़ उजाड़ जहान दिस्से,
पीड़ां विच्च कलेजड़े लग्गियां ने।
मिल जा प्यारेया इक्क वारी,

असां बहुत जुदाइयां तक्कियां ने।
जे मैं जाणदी कदी ना प्यार पांदी,
मेरे नाल जे होणियां ठग्गियां ने।
मैंनूं गयों उजाड़ प्यारेया वे,
कलमां धुरों दरगाह दियां वग्गियां ने।

चढ़ेया माह सावण लगा हिजर तावण,
तत्ती लक्ख हज़ार पुकार कीती।
तड़पे मछली वांग दिन रात हरदम,
जान ग़मां ने पकड़ शिकार कीती।
दस्सो कोई इलाज सहेलियो नी,
दर पिया दे इश्क ख़ुवार कीती।
मंगां मौत न मिले प्यारेया ओए,
छुट्टे जान जो हिजर बिमार कीती।

भादों भाग उल्टे मेरे रब्ब वल्लों,
चल्ले कोई मेरी तदबीर नाहीं।
आसां दिल दियां रह गइयां दिल अन्दर,
प्रीतम जान दित्ती तकदीर नाहीं
सुखी वस्सदेयां यार जुदा कीता,
कीती उसदी कोई तकसीर नाहीं।
कीते जतन हज़ार प्यारेया ओए,
गलों ग़मां दे लहण ज़ंजीर नाहीं।

अस्सू आस तेरी विच्च सज्जणां वे,
साड़े नित फिराक दी अग्ग मैंनूं।
ला के प्यार ते गयों विसार किद्धरे,
मिलेया यार बनारसी ठग्ग मैंनूं।
तड़पे नीम-बिस्मिल आजिज़ जान मेरी,
अग्ग गई विछोड़े दी लग्ग मैंनूं।
धुर दी लिखी न मुड़े प्यारेया वे,
गई कलम तकदीर दी वग्ग मैंनूं।

कत्तक कत रोवां नित वैण कर कर,
अज्ज पास हमदर्द ना कोई सइयो।
जेहड़ा यार महरम छड्डु वतन गया,
जान तंग विछोड़े तों होई सइयो।
फस गई जान अणजान विच्च आण दुक्खां,
ना मैं जीवंदी ते ना मैं सोई सइयो।
नित पुच्छदी फिरां प्यारेया ओए,
लोकी कहण मैंनूं वहशण होई सइयो।

मग्घर माह मोई दुखी जान होई,
जानी दस्स नी गया निशान कोई।
जावां देस केहड़े सड़ गए लेख मेरे,
फिरां ढूंढदी पण्डित ज्ञानी कोई।
करके गयों रोगी दुक्खां दर्द जोगी,
इस गल्ल दा नहीं सी ध्यान कोई।
लवीं सार जल्दी तूं प्यारेया ओए,
मेरी जान लबां ते ओड़क आण होई।
पोह पइयां मुसीबतां पेश मेरे,
ग़म दे गये ख्वा होले लम्मे वैण पइयां।
जिन्हां वस्सदेयां दे उजड़ गए ख्वाने,
दिन रात रोवण कर कर वैण पइयां।
अट्ठे पहर जुदाई दा सल्ल जाणन,
ओ पर जग ते फिरन बेचैन पइयां।
तेरी विच्च उडीक प्यारेया ओए,
तक्कां राह तेरा बैठ विच्च सइयां।

चढदे माघ बैठ दुक्खा तांघ माही,
टुट्टे जीव विच्च मिलण दी आस नाहीं।
तेरे मिलणे दी चाह दिन रात मैंनूं,
तूं क्यों सद्दा मैंनूं पास नाहीं।
डाहढी तंग पइ हां मौत मंग रही हां,
दुखी जान ए निकलदे स्वास नाहीं।

गुज़रे नाल मेरे जो जो प्यारेया ओए,
दस्सां हाल किसनूं तूं ते पास नाहीं।

फग्गण फक्क कीता खूनी इश्क मैंनूं,
मेरे बचण दी कोई उम्मीद नाहीं
रैहन्दा चाओ तेरा हुण ते पा फेरा,
जान जापदी विच्च शरीर नाहीं।
मलकुल मौत आया जिंद लैण कारण,
देंदा पलक वी लैण ठलीर नाहीं।
मरदी वार मैं वेखां प्यारेयां ओए,
दस्सां मुख सोहणां इंझ हरि ताईं।

(P-19)

चल्लो नी सइयो सरसे नू चल्लिये तांघां सोहने यार दियां।
आप सदा मालिक संग रेहन्दे, रात-दिने असीं दुखड़े सैहन्दे।
बहर-ए-ग़मां विच्च हरदम वैहन्दे, आर दी हां न पार दी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे तूं चल्लिये...

भागे भरियां रूहां तेरियां, नाल तेरे जो हरदम रहियां।
असां मुसीबतां लक्ख-लक्ख सहियां, बैठ गीटियां गालदी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे तूं चल्लिये...

पूरी आस उम्मीद न होई, हद्दों बाहर बैठ मैं रोई।
तैं बिन प्रीतमा जीवेन्देयां मोई, जान तेरे तों वारदी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे तूं चल्लिये...

पाके गल्लां-गल्लां विच दुक्खड़ा, जग सारा पिया दिस्से रुक्खड़ा।
जल्दी आण विखाओ मुक्खड़ा, भुक्खड़ी तेरे दीदार दी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे तूं चल्लिये...

तूं मालिक मैं बांदी तेरी, दर्शण पिया दईं इक्क वारी।
जल्दी करीं न लावीं देरी, भुक्खड़ी तेरे दीदार दियां।
चल्लो नी सइयो सरसे तूं चल्लिये...

कित्थे गयों हाय सावण प्यारे, बन्दी रो-रो उमर गुज़ारे।
गिणनी हां बैठ मैं तारे, दिन तक्क-तक्क राहां गुज़ार दी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे नूं चल्लिये...

सौ-सौ वारी मैंनू ख्वाबां आइयां, भुल्ल गयो मैंनू मेरे साइयां।
पहले नाल मेरे क्यों लाइयां, गल्लां एह आज़ार दियां।
चल्लो नी सइयो सरसे नूं चल्लिये...

प्यारे सावण तेरे बिन मोई हां, दर्शण बिना मैं पागल होई हां।
परदेयों बाहर आ सावण रोई हां, गल्लां कर हुण प्यार दियां।
चल्लो नी सइयो सरसे नूं चल्लिये...

मैत्थों चंगियां जुत्तियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पावां फेरियां।
हाय छेत्ती आवीं ग़मां ने घेरी हां, भुक्खड़ी सावण दीदार दी हां।
चल्लो नी सइयो सरसे नूं चल्लिये...

(P-20)

छेत्ती वेख्न नजूमियां फाल पा के,
मेरा यार बैठा डेरा ला कित्थे।
ढूंढ भाल थक्की मैं जग सारा,
होया गुम मेरा दिलरुबा कित्थे।
होया जीवणा यार बिन बहुत मुश्किल,
गया जान नू रोग लगा कित्थे।
मंगी मौत न मिलदी आ प्यारेया ओए,
ख्नबरे गई अज्ज मेरी कज़ां कित्थे।

(P-21)

ज़िक्र महबूब दा करां हरदम,
विस्सर होर जहान दी कार गया।
सुख्न गये ते दुख्न मिल गये मैंनूं,
सुख्नां वालड़ी लद्द बहार गई।

पै गये वक्त कुवल्लड़े आण मैंनूं,
अज्ज दे किस्मत मैंनूं हार गई।
लासी पार तूफान दे विच्चों सावण,
हालां डुब्ब बेड़ी मंझधार गया।
आपे मेल के हुण विछोड़ चले,
हस्स रस्स के पिया जुदा हो गए।
हाय दोस अफसोस हुण देयां किस नूं,
मन्दे मुझ गरीब दे भाग हो गये।
जेहड़े यार महरम मेरे नाल दे सन,
ओहो अज्ज दुश्मण मेरे सख्त हो गये।
दस्सां दिले दा हाल जा फोल किस नूं,
जो जो मैं मस्कीन दे वक्त हो गये।
होवे राम हुण आण सहाई मेरे,
करसां विरद मैं दम दम तेरा।
मैं तां राम अन्दर राम राम होसां,
राम राम करसी इक्क इक्क लूं मेरा।
सुणेया आखदे लोक सुखल्लड़ा ए,
गल्ल झूठ ऐ प्रेम निभाण औखा।
बण बण बणे आशिक झूठे कर दावे,
अग्ग वांग पतंग जलाण औखा।
वग्गे इस झनर दा लाल पाणी,
पार लंघणा हिज्र तूफान औखा।
इत्थे सिरां दे वणज नी प्यारेया ओए,
मुश्किल पहुंचणा ओस मुकाम औखा।
डूंघा बहुत समुन्दर प्रेम वाला,
जिस दा हद्द हिसाब न कोई सौखा।

(P-22)

जिस किसी आ सावण दी, खबर सुणी इक्क वारी।
दिलों आब वैहन्दा जान्दा, हो चश्मा थीं जारी।
आ महबूब मिलां गल रो रो, जागण ज़ख्म पुराणे।

मा ज़ोरां दे दिल दे पुर्जे, वेख्र चश्मां थीं जाणे।
हो महबूब करीबों नेड़े, बिरहो चाबुक लावे।
ते फुरकत दी जज़बातकारी, किस थीं झल्ली जावे।
दूर रहेयां दा सबर दिलां नूं, कट्ट न सकदे वाटां।
पापियां दे दिल दे जिगरे, पये जलन विच्च वाटां।
दूरों सेक लगे पर थोड़ा, फरक बड़ा महसूलों।
बाहां विच्च गले मिलदेयां, जलदे रक्त मसूलों।
सीने लाट बिरहो दा सोज़ा, जां मकसद सड़ जावे।
लूं लूं दे विच्च जोश रचावे, सबर तमाम जलावे।
ते ओह ऐड्डा गलबा पावे, ताण माण सब खस्से।
जंजीरियां घत्त कदम बहावे, पिया चल्ले न नस्से।

(P-23)

जे कर ला के अक्खियां नस्स जाणा,
इस दा हुणे ही पता तू दस्स मैंनूं।
ओसियां पावंदी ते करना रहम हर दम,
मारीं ज़ुल्म दे तीर न कस्स मैंनूं।
तू शहन्शाह मैं हां गुलाम तेरी,
ज़ालम हिज्र दे पांवी न वस्स मैंनूं।
पिछला गुस्सा अफसोस हुण छड्ड देवो,
दस्सो गल्ल दिल दी हस्स रस्स मैंनूं।
हाय अल्लाह नू हाल मालूम मेरा,
दिलबर हो गया सारा जहान दुश्मण।
इक होवे न तुसां दी दीद किद्धरे,
दूजा जान मेरी पये सताण दुश्मण।
सानूं वेख्र इकट्ठडें बैठेयां नूं,
कसम रब्ब दी होये हैरान दुश्मण।
प्यारे किसे नूं रल न बैहण देंदे,
सड़न पये ते साड़न बदगुमान दुश्मण।

(P-24)

जे कोई पुच्छे मेरे पासों, कौण है दिलबर तेरा।
मेरा ओहो प्रीतम प्यारा, जिसदा हर थां डेरा।
न ओ मरे ना आवे जावे, ओ संगी हर दम मेरा।
करे सार सब जिया-जंत दी, ओह सावण प्रीतम मेरा।
उस प्यारे दे मिलणे ताईं, कोई इलाज बताओ।
मेरे अन्दर चाह उसे दी, उस दे नाल मिलाओ।

(P-25)

जे मैं जाणदी माली नराज़ होणा,
भुल्ल फुल्ल नूं चुंझ न लावंदी मैं।
मल के फुल्ल नूं कर बेहाल जेहड़ा,
टाहणी कड़कदी कदी न वेखदी मैं।
शाला भला होवे मालक प्यारड़े दा,
जिस रहण दित्ता बूटा वेखसां मैं।
बुलबुल चाहवंदी होर न जग्ग अन्दर,
खिड़दे फुल्लां नू वेख उम्र गुज़ारसां मैं।

(P-26)

डाची वालेया वे इद्धर मोड़ डाची,
लवां चुम्म मुहारां ते टंल्लियां नी।
भर भर बेड़यां दे पूर पार होये,
रुहां उडीक विच्च किस्से दी खल्ली हां नी।
हाय कुट्ठड़े इश्क ने लुट्ठड़ी मैं,
फिरां मुट्ठड़ी दीद 'जमाल' दी मैं।
लिटां लिटां खोलियां ते हंझू रोली हां मैं,
जंगल भौनी हां पिया नूं भालदी मैं।
नाहीं कोल माही, डांवाडोल होई हां,
किस नूं फोल दसां गल्ल हाल दी मैं।

लगे तीर शरीर विच्च बिरहों वाले,
अक्खीं नीर दी नहर उछालदी मैं।

(P-27)

तुध बिन तड़फां नित माही, ज्यूं कर जल विच्च माही,
आ मिल माही।
मैंनूं यार विसारे न मूले, तैनूं क़सम इलाही,
आ मिल माही।
दम दम ग़म अमल तुसाडा, रोवां इक्को साही,
आ मिल माही।

(P-28)

तेरे दर्शन बाझों होई हां कमली,
झल्ली झल्ल वलल्ली हां मैं।
बाझ प्यारे कीकण जीवां,
दुख्खां सूलां सलल्ली हां मैं।
आ मिल साइयां मेहर करी तूं,
फिरां जंगलां विच्च भुल्ली हां मैं।
बाझ तेरे नहीं दर्दी कोई,
वाटां तेरियां नित मल्लियां मैं।
उडीकां करदी नू इह दिन आये,
विच्च इश्क तेरे मर चल्ली हां मैं।
दे दरस जियड़ा बलिहारी,
सदके वारी घोली हां मैं।
हाय रब्बा ओह दिन कद होसी,
मिलसी आ जद माही मैं।
बाझों तेरे कोई न भावे,
वैहमां विच्च रूढ़ चल्ली हां मैं।

(P-29)

तेरे मिलणे कारण प्यारेया वे, पई लक्ख तावीज़ लखावनी हां।
सुक्खां सुक्ख दी सुख दी घड़ी कारण, हत्थों दुख जहान दे पावनी हां।
नैणों नीर बहीर ज़हीर होई हां, पई कूंज वांग कुरलावनी हां।
करी बात पिया ना बात जाणीं, दिन रात पई ग़म खावनी हां।
हर दम फ़िक्र ख्याल तुसाडड़े ने, दित्ता गम मैंनूं भुला बेलिया ओए।
करके मेहर दिलासड़ा चा लाओ, सीने नाल मैंनूं ला बेलिया ओए।
मिले प्यार तुसाडड़े चा कुट्ठी, तेरी चाल मैंनूं भला बेलिया ओए।
तेरे हिज्र बिरहों फ़िराक अन्दर, होऐ साल कई भला बेलिया ओए।
कीते कौल करार ना हार माही, औगुणहार नूं सबर करार नाहीं।
होया रंग कसार दे वांग मेरा, मैंनूं प्यारेया मनों विसार नाहीं।
खड़ी हां दरबार पुकार करां, मैंनूं होर कोई सरोकार नाहीं।
इक वार सावण दीदार देओ, बाझ रोण मैंनूं होर कार नाहीं।
रहे नित्त उदास ऐ चित्त मेरा, हुण ता मिल जा प्यारेया आ मैंनूं।
दिन रैण ना आंवदा चैन साइयां, रहे चाह तेरी आ के मिल मैंनूं।
रहे नित्त भुलावड़ा तेरड़ा ओए, इक्क वार जलवा दिखा मैंनूं।
मन्दा हाल पिया विसाल बाझों, झट्ट आण के गले लगा मैंनूं।

(P-30)

प्राप्ति

दस्सो सइयो जान मेरी विच्च, केही शक्ल नूरानी आई।
केही चमक मस्तानी आपणी, किसने आण दिखाई।
ज़र्रे ज़र्रे ते दोही जहानी, आपणी चमक दिखाई।
कौण मकानों बाहर जेहड़ी, मेरे अन्दर आ समाई।
रोम रोम विच्च चमक उसे दी, केही सूरत बण आई।
दम दम आपणा हुसन दिखावे, बण बण दस्से शुदाई।
नाम धरा के जिस्म ख़ाकी विच्च, फिरदी रहवां मस्तानी।
जेहड़ा प्रगट फिरे इस अन्दर, उह केहड़ा नूर पगानी।
मेरी जान अन्दर नित्त बोले, आपणी लटक दिखा के।
तन मन कोशां कोलूं वक्खरा, होके रंग जमा के।
आपणे-आप तों नित्त-नित्त प्यारा, आपणा नूर वगावे।

मेरे अन्दर आशिक बण के, अपणा इश्क कमावे।
कद तीकण अनजाण प्यारे, विच्च दुई झट्ट लगावे।
अपणा मुर्शिद सावण, हुण मेरा क्यूं ना आपणा आप भुलावे।

(P-31)

मन मतवाला

दिला कुझ होश कर माही,
दुहाइयां ना मचाया कर।
न सडं सड़ जान लूहेया कर,
न रो रो जी खपाया कर।
शुदाइया समझ हुण वी,
ऐह चेटक चन्दरे छड दे।
दिलां नूं खोह खड़ने वाले,
बेदर्दां वल न जाया कर।
बड़े बेतरस पत्थर दिल,
बड़े डाहढे बड़े खोटे।
इन्हां दे पास जा जा कर,
न झिड़कां रोज़ खाया कर।

(P-32)

दीन दुनी दे वाली मेरे, जाम वसल दा कदी पिला सानूं।
तेरे इश्क ने मार मुकाया मैं, दम दम घड़ी घड़ी भड़के भाह सानूं।
नैण तरस रहे तेरे दीदार कारण, दे के दरस अपणा ठण्ड पा सानूं।
तेरे बाझ न साडा होर कोई, बाझों दर तेरे न कोई थां सानूं।
वास्ते रब्ब दे आपणे प्यारेया ओये, नूरी मुक्खड़ा कदी दिखा सानूं।
इस हिज्र फ़िराक तों मौत चंगी, आके इक्क वारी गले ला सानूं।
तेरे नैणां ने जेहा सीना सल्लेया ए, पै गये कलेजड़े घा सानूं।
फट्टी पई प्यारेया प्रेम बन्दी, तेरे बाझ ना रही दवा सानूं।
तू ही हैं प्यारेया मन मोहन, तेरे बाझ ना होर खुदा सानूं।

(P-33)

प्रार्थना

दुई दूर करें जे मेरी, की घट जावे तेरा।
भेद आपणा जे दस्सें मैंनूं, हर्ज की होवे तेरा।
जान मेरी लबां ते आई, कदी आके पावें फेरा।
जे कर पुच्छें हाल की मेरा, तां की घट जावे तेरा।
दर दिलबर दे उत्ते बहके, केहड़ा दिलबर नूं पावे।
जे इक्क रात अस्सां नूं देवें, की घट जावे तेरा।
एहनां अक्खियां नाल ना होवे, ऐ दिलबर दर्शण रब्ब दा।
की घटदा जे नाल दिल दे, दस्सें रूप अजल दा।
प्रेम रब्ब दा जेकर चाहें, साडे अन्दर यारा।
खुदी दिल दी कड्ढ दे इक्क वारी, ख्याल गैरां दा सारा।
सुण अकल तूं कद तक मैंनूं, बाहरमुखी फिरावें।
की होसी जे सब कुछ छड्ड के, अपणा आप वंझावें।
सावण मीत अजब दे माही, मैं कीकण तैनूं पावां।
जेकर खुदी मिटा के आपणी, इक्क कदम चल जावां।

(P-34)

न कोई सुख सनेहा पत्तर, फिट्ट किस्मत साडी हारी नूं।
न दिन बीते न चैन आवे, मैं पापण करमां मारी नूं।
कदों घडी आवे पिया मुख लावे, मैं सिक्क सिक्क हावे मारी नूं।
इक्क वारी मुक्ख दिखला दे, वारी, इस नैणां कमलां दी मारी नूं।

(P-35)

बिरह

नज़र करीं मैं उत्ते सावण, तुध बिन मूल न सरदी,
हाए मैं मरदी - हाए मैं मरदी।
पल पल चिन्ता तेरी रहन्दी, वल-वल मिन्नतां करदी,
हाए मैं मरदी - हाए मैं मरदी।
तेरे मुख दे लै लै सुपने, सिर सिर दुक्खड़े जरदी,

हाए मैं मरदी - हाए मैं मरदी।
खा गई पीड़ किरपाल गमां दी, आ गई मुंह ते ज़रदी,
हाए मैं मरदी - हाए मैं मरदी।
सावण यार प्यारे कारण, जासां छोड़ वतन नूं,
छोड़ वतन नूं - छोड़ वतन नूं।
सख्त विछोड़ा मौतों वध के, लावे भा चमन नूं,
मिलां सज्जण नूं - मिलां सज्जण नूं।
पास पिया दे जाण न होवे, देसां जान सज्जण नूं,
छोड़ मरण नूं - छोड़ मरण नूं।
जे इक्क वार जमाल करावे, वार घत्तां तन मन नूं,
सुणां सुखन नूं - सुणां सुखन नूं।
जद जद देखां मैं खान ब्यासा, ठण्डा जिगर हो जावे,
हिजर सदावे - हिजर सदावे।
सावण सत दा नूर तजल्ली, ओह नूर पेया बरसावे,
खुशबू आवे - खुशबू आवे।
अटारी काबे वांग दिसीवे, मौला हज्ज करावे,
आस पुजावे - आस पुजावे।
सिक्क किरपाल लहे तां दिल दी, जे माही गल लावे,
अग्ग बुझावे - अग्ग बुझावे।

(P-36)

ना मैं सुन्दर ना गुण पल्ले, ते मैं कीकण पिया रिझावां।
ना छाती ताण, न माण हिये विच्च, ते मैं कीकण शोह गल लावां।
ना दिल जोश हुलारे खांदा, प्रेम न कस्से तणावां।
ना सिक्क मिलण दी न हुब्ब दिले विच्च, फिर क्यूं कर उस नूं भावां।
आखो सइयो मैंनूं सब्भे कुकर्मण, नी मैं न लइयां इश्क दियां लावां।
हाय कोझी मैं कोझ कमाया, किवें कोझी उसनूं भावां।
ना सुख चैन न रैण बिहावे, हौं सुत्तड़ी ही सौं जावां।
जे माही मैंनूं इश्क चुवाती लग्गे, तां लोड़ां झब्बे झब्बे।
उत्ते थल्ले अन्दर बाहर, ओह दिस्से सज्जे खब्बे।
माये भाग मंगां मैं किस दे, हाय दिल चाओ करेंदा हब्बे।

(P-37)

प्यारे पिलादे प्याला, होवे विसाल तेरा।
माही हिज्र लगाया, आहीं हज़ार मारां।
पिया प्यारे मिल जा आके, मेरी जान लबां ते आई।
न कोल डोर मेरे, मुट्ठी हां तेरे प्यारां।
मोई नूं मार नाहीं, मैंनूं भुला तूं नाहीं।
कर याद मेहरां दे साईं, वसो अम्बर बहारां।
इक्क वार कुल्ली मेरी विच्च, बैठ करो गल्लां
जिन्द जान तैथों वारां, दम दम मैं निस्सारां।
ऐ पिया डार छाती, तुध बाझ फिरां चपाती।
गये मोड़ मुंह मैथों, मोड़ीं कदी मुहारां।
जुल्फ़ां तमाम खुल्लियां, चश्मां हमेशा डुल्लियां,
ऐ बिना प्यारे तेरे, भुल्लियां तमाम कारां।
इक वार विच्च हयाती, लाया ई न नाल छाती।
लग्गे इश्क दमा-दम काती, कीते जख्म हज़ारां।
डेरे लगा प्यारे, बैठों ब्यास किनारे।
ऐ पिया बाझ तुसाडे, जिन्दड़ी तलख गुज़ारां।
ओ ब्यास किनारे जानी, कीती उसे दीवानी।
हो चल्ली जान फानी, बाझों दीदार आहां।
प्यारे पिलादे प्याला, होवे विसाल तेरा।
माही हिज्र लगाया, आंहीं हज़ार मारा।

(P-38)

पास पिया दे जावे कोई, आखे मैं उस वारी।
सिर थीं पैरां ताईं, तेरी बन्दी इश्क न साड़ी।
जे आखें तां प्रीतम प्यारे, दिल दा हाल सुणावां।
गुज्झे दर्द फिराकां वाले, ज़ाहिर कर दिखलावां।
साखी है दिल दिल दा, दस्सां की मैं प्यारे।
ज़ाहिर करके आखण दी, कुझ हाजत नहीं प्यारे।
कुझ जो गुज़री दिल मेरे ते, खोलसां आईं प्यारे।
गम दुख आपणे तेरे अग्गे, खोल सुणावां सारे।

लग्गी प्रीत न टुट्टे कद ही, टुट्टे तां लग्गी ना जाणे।
लग्गदी टुट्टदी वस्स न मेरे, हत्थ प्रीतम दे जाणे।
केवल तेरे हुक्म दा पालण, कीता मैं दिल जानी।
कारण चुप्प करन दा सज्जणा, होर ना कोई जाणी।
भावें दुक्ख घनेरे होये, दिल नहीं सह सक्केया।
अदूली हुक्म तुसां दी प्यारे, मैं नहीं कर सक्केया।
आजिज़ जान गमां थी हो के, कीती राम दुहाई।
दर सावन दे कर कर अरज़ां, ख़ैर ख़त दी पाई।

(P-39)

पिया तशरीफ़ ग़रीबां दे वल्ल, कोई तां चा फ़रमाओ-छोड़ न जाओ।
प्रीत पुराणी ताईं दिलबर, दिल थीं न भुलाओ-फेरा पाओ।

जां लाइये तां तोड़ निभाइये, यारी पाल दिखाओ-हस्स बुलाओ।
शफ़कत नाल 'जमाल' नूं प्यारे, कदी तां गल लाओ-ना तरसाओ।

(P-40)

प्रीतम आवसी नी सइयो अज्ज मेरा,
चरण चुम्म के सीस निवावसां मैं।
शुक्र शुक्र करसां उस घड़ी उत्तों,
जिस घड़ी अक्खां नाल वेखसां मैं।
मेरा उस दे बाझ न होर कोई,
चरण चुम्म चुम्म के अक्खां ते लावसां मैं।
तेरे जेहा न जग्ग ते होर दिस्से,
कित्थे जा के हाल सुणावसां मैं।
मेरे दर्दिया वे मैंनूं मिल छेत्ती,
तेरे बाझ रो रो मर जावसां मैं।
बाझ प्यारेयां दे मेरा जीण खोटा,
पिया बाझ हुण हाल वंझावसां मैं।
लोकीं आखदे ने प्रीतम आए गया,

मैं अज्जे तत्ती न वेखया नाल अक्खी
केहड़ा दिन होसी चरणां नाल लासी,
प्रीतम रज्ज न वेखेया मूल अक्खीं।
मैं ते ऐवें ही उमर विहा छड्डी,
पिया बाझ निकारड़ी होये रहीयां।
प्रीतम जे आवे चरणां नाल लावे,
मैं चरणां उस देयां दी होये खाक रही हां।

(P-41)

प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ।
प्रेम तिसाए असी भज्ज भज्ज आइये ते अग्गों छुप-छुप जांदे ओ।
प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ।

नैन लड़ा के जिन्द अड़ा के, सीने प्रेम मवाता लाके।
इश्क़ दिखा के धुवां पा के, हुण क्यों अक्ख चुरांदे ओ।
प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ।

वस गया जिगर तीर अड़ियाला, पुट्ट खड़ना हुण नहीं सुखाला।
चुम्बक लोहे नूं दिखला के, अपणा-आप बचांदे ओ।
प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ।

परदे नूं हुण परे हटाओ, भर गलवंगड़ी ठंडक पाओ।
दर्शन देके तपत बुझाओ, क्यों ढट्ठेआं नूं ढांदे ओ।
प्रीतम जी क्यों तरसांदे ओ।

(P-42)

प्रीतम जी तुसी हरदम मेरियां अक्खियां दे विच्च वस्सदे हो।
सोहनी शकल नूरानी मस्ती वांग फुल्लां दे हस्सदे हो।

बिरहों कुट्टी लुट्टी मुठी दा दिल क्यों हरदम खस्सदे हो।
प्रीतम आओ देस असाडे मेरे तन मन दे विच्च वस्सदे हो।

(P-43)

पुच्छदी फिरां सइयो मैं, नित्त नित्त निशानी उस दिलबर दी।
जिसने लुट्ट खड़ेया दिल मेरा, दस्सेयो मैं उस दिलबर दी।
तुसी सुहाग माणो रल सइयो, कराओ मेहर दिलबर दी।
बाझ तुहाडे पुच्छां मैं किस नूं, मंज़िल उस दिलबर दी।
पास पिया दे जा के कोई, आखे तेरे दर आई।
जान उस दी विच्च उडीकां, मुड़ है लबां ते आई।

(P-44)

प्रेमी हृदय दा उभार

प्रेम पिया दा ज़ाहिर बातिन छुपै न मेरे भाई।
तांघां मार बाहर नूं आवे, अन्दर सिज्जदा नाहीं।
अजेही बेकरारी होई, सौ-सौ आहीं मारां।
दर्द मेरे दा दारु नाहीं, कीकण वक्त गुज़ारां
हाय कदे जे ऐस ख्यालों, छुट्टे जिन्दड़ी मेरी।
एह वी वस मेरे कुझ नाहीं, डोर तेरे हत्थ पकड़ी।
दिल मेरे ते लाले वागूं, उग्गेया दाग हिज्र दा।
कीकण वेख सकां हुण तैनूं, वस न कोई चल्लदा।
तेरे वल्लों सत्गुरु प्यारे, चित्त न हरगिज़ जावे।
तेरे जेहा मेरे ताईं, कोई नज़र न आवे।
दिल दूरी विच्च तेरी, हरदम करदा बेकरारी।
सूरत नज़र न आवे तेरी, मेरी गिरिया जारी।
वाकिफ़ कोई दिल दा नाहीं, किसनूं हाल सुणावां।
हाल बेहाल होई दीवानी, रो-रो तैनूं पुकारां।
लक्ख हज़ार ख्याल दिल विच्च, दर्द माही दा लियावे।
वांग अंगारां भड़ भड़ बलदा, तेरी खबर न आवे।
सोज़ फ़िराक भड़के दिल अन्दर, मेरा होर कोई नाहीं।
रात दिवस करार न आवे, सुणीं पुकार गुसाईं।
दिल विच्च गुज्झे दर्द हज़ारां, किस नूं कूक सुणावां।
किस नूं फोल दस्सां दिल अपणा, सुण सावण मेरियां आहां।

(P-45)

बाझों तेरे पिया प्यारे, हैरान होया दिल मेरा।
आ इक्क वारी मुख दिखाजा, पावीं फिर तू फेरा।
मुद्दतां होइयां सिक्कां सिक्कदे, दिल खुस्से हुण मेरा।
विच्च हिज्र विछोड़े कद तक, रहसी दुखी रूह मेरा।
दुनिया जहान ते दिल दे दर्दी, आ सज्जणा मैं वारी।
कोई ना वाकिफ़ राज़ दिले दा, होइ हां बहुत खुआरी।
हाय अफ़सोस न रहम रेहा, दिल तेरा मेरे ताईं।
कौण इलाज करे हुण मेरा, बाझ तेरे हुण साईं।
दिल ते जिन्दड़ी घोल घुमावां, इश्क माही दे राहे।
दर्द तुसाडे बाझों प्यारे, दिल मेरे कुझ न भावे।
मरने तीकण दर्द तेरा ही, रहसी इस दिल ताईं।
दर्दी दिल दा प्रीतम प्यारा, होर दिस्से न मुझ ताईं।
सावन बाझों तेरे हुण, फुल्ल कन्डेयां वांग दिस्स आवण।
हुस्न बहार तेरी नूं पा के, होर रंग ना दिल नूं भावण।

(P-46)

मेंघा वर्स्सीं तूं भागे भरेया, तुध उज्जड़े देस बसाये।
भलके फेर वर्स्सीं झड ऐवें, मेरा पिया परदेस न जाये।
कदों सबब अजेहे होण कोई, किस्मत आण मिलाये।
प्यारे यार मिलण दियां तांघां, फिर विच्छड़े कौण मिलाये।
तन टुट्टदा मन तपदा जावे, मैंनूं अक्खी पीर वेखण दी।
इक्क पल सहण विछोड़ा भारी, केही पिया बाण मिलण दी।
ऐहो बिरद इबादत मेरी, तरसण जलन बलण दी।
प्यारे होवां वासल कदाईं, जद फिरे दलील सज्जण दी।

(P-47)

मेरी लग्गी वे प्रीत नूं निभाण वालेया।
जदों खड़ी गई हीर ओदों मन्दी सी पीड़,

आ जा बेले विच्च महियां चराण वालेया,
जलवा युसफ वाला दस के लुट्टेया।
विच्च मिस्र दे जुलेफां नूं रुलाण वालेया,
मेरी लग्गी वे प्रीत नूं निभाण वालेया।

(P-48)

मेरे प्रीतमा प्रीत दे वालिया वे,
कदी देवीं चा दरस दीदार साइयां।
बैठा कालजे नाग फिराक वाला,
दर्शन दे के करीं निहाल साइयां।
तैनूं लोड़ ना प्रीतम मूल मेरी,
मैं उडीकदी होई बेहाल साइयां।
नज़र मेहर दी करीं इस दासड़ी ते,
चरणी अपणे लवीं लगा साइयां।
निभदियां प्रीतियां सारियां प्रीत अन्दर,
पा दे दरस दीदार दी ख़ैर साइयां।
मेरा तूं इक्को, तैनूं होर बौहते,
पर करां की होई लाचार साइयां।
चल्ले वस्स मेरा जे कुझ प्रीतमा वे,
देवां चरणां अन्दर सीस वार साइयां।
मैं वेख्खां पई तैनूं प्यार अन्दर,
माणां सेजड़ी पई तेरे ताल साइयां।
दुनिया धन्धड़े और कुरीतियां तों,
आई भज्ज के मैं तेरे दरबार साइयां।
कम्म जहान वाले पान्दे विघ्न बौहता,
प्रेमी बिरद तेरा करीं पार साइयां।
राह रब्ब दे विच्च इह विघ्न पांदे,
इन्हां सारेयां दा तूं त्याग कर दे।
इह कम्म हुण सुल्लड़े प्रेम अन्दर,
गली प्रेम दी राह तों दूर कर दे।
जाल माया तों सानूं छुड़ा रब्बा,

इको इश्क वाले राह ते चल्लिये जी।
दर्द हिज्र वाले होर ना सहण होंदे,
जा आपणे माही नूं मिल्लिये जी।
पावां दरस ते हो मगन प्रीत अन्दर,
दर यार दा खूब जा मल्लिये जी।
लोकी कहण चंगा भावें कहण मन्दा,
शक्ल यार दी नू जा के परसिये जी।
प्रीतम मेरेया दस्सीं इंसाफ केहड़ा,
कुंडी प्रेम दी पा चा खिच्चेया ई।
बाहर धन्धडें दुनी दे खूब पाये,
इनहां अन्दर खूब चा जकड़िया ई।
दिल तरसदा माही दे दरस ताईं,
शरीर धन्धेयां अन्दर चा जकड़िया ई।
दरसण होण खुल्ले ना कोई होर होवे,
केही तां जिन्द नूं तुस्सी चा कढ्ढेया ई।

(P-49)

मेरे माही मैं मोई मुहार मोड़ीं,
बण के बाल मुआतड़ा बाल बैठी।
भुल्ली भुल्ल भुलावड़े मैं भुल्ली,
मर मर प्रीत प्रीतमा पाल बैठी।
पंड प्यार प्रेम दी पा मोढे,
पिंडो-पिंड फिरदी, पिया-पिया बोलदी मैं।
भौंदी फिरां भंभीरी दे वांग,
बुलबुल फुल्ल वांग परबत फोलदी मैं।

(P-50)

मैं तां विरह दी अग्ग विच सड़ रही हां,
आवीं प्यारेया मैं कुरबान जावां।

मनसूर वांगूं दम दम चढ़ा सूली,
जान घोल सदके सौ सौ वार जावां।
पिया तूं साडा दिल लुट्ट खड़ेया,
मस्त अलमस्त तेरे गीत गावां।
भुल्ल गए दीन-दुनी तेरी याद अन्दर,
मुक्ख विख्रा आपणा मैं निस्सार जावां।
जिन्द विच्च भाह बलदी तेरे वेखणे दी,
देवीं दरस वारी सौ-सौ वार जावां।

(P-51)

मैं रोन्दी नू छोड़ सदाये, मारे असी बेदोषे।
मुट्ठी यार जिगर विच्च मुट्ठी, ते मैं कुट्ठी दिलबर उत्ते।
पिया बोल मुंह मैं घोल घत्ती बह कोल मेरे घत्त पीढ़ा वे।
तोड़ मुहब्बत छोड ना जावीं, तोड़ चड़ावीं नेहड़ा वे।
नज़र मेहर दी कर मैं उत्ते, मेरा रहे उदासी जियड़ा वे।
हार-सिंगार 'जमाल' न भावे, भट्ठ पेया चूड़ा बीड़ा वे।

(P-52)

मैं रोन्दड़ी कुरलांदी नूं लै चल्ले, कोई नहीं सुणदा ना।
अपणे अंग कबीले प्यारेयां तों लै चल्ले नक्कों साह वी आवंदा ना।
कूंज डार तों है हुण उड्ड चली, कोई आके हुण छुडावंदा ना।
हाय वतन तां मैं हुण विच्छड़ चल्ली, मैंनूं कोई वी मोड़ लियावंदा ना।
नाल संग सहेलियां माण मौजां, आपणा चित्त मैं खूब परचावंदी सां।
कदी बागां ते बहंदेयां नालेयां ते, आपणे लाड मैं खूब लडावंदी सां।
हरियावल दी चादर नूं ताणा दम-दम, आपणे थोह मुकाम उसारदी सां।
ऐपर पता की सी बाबल लै चल्लसी, ऐवें झूठे पसारे पसारदी सां।
लै चल्लो नी रोन्दड़ी धोन्दड़ी नूं, मेरे अंग कबीलड़े सब छोड़ के ते।
कोई चज्ज अचार न सिक्खेया मैं, हाय बणे की इस वेलड़े ते।
डाहढी डर दी मारी टुर चल्ली, डाहढी चल्ली हां जिन्द रोल के ते।

जे औड़क नूं सौहरे जावणा सी, मूल लावंदी चित्त न समझ के ते।
एह वतन असाडड़ा वतन नाहीं, आख़िर जावणा पिया दे देस सइयो।
कदी भुल्ल के नेहों न लाओ ऐत्थे, छोड़ जावणा लक्ख करोड़ सइयो।
ढोई देवसी मात न तात कोई, सिक्खो पिया दे देस दे चज्ज सइयो।
एत्थे रहणा दिन दो चार सारे, आख़िर पा डोली ले जाण सइयो।
एहो ज़िन्दगानी चली ओ फ़ानी, थोड़े दिन रहे लाड लडावणे दे।
घर बार ते होर साक सैण सारे, दिन थोड़े मेल मिलावणे दे।
चित्त चा तू सुवेयां सावेयां तों, आये दिन तेरे एत्थों जावणे दे।
ख़ावणा पीवणा हस्सणा खेड्डणा सब, रहे दिन थोड़े रंग मचावणे दे।

(P-52A)

इहो जेहे हाड़े ते तरले, पिया दे प्यारेयां दे दिल विनदे,
होये सुणन वालेयां दे दिल नू सलदे हन पिया दा प्रेम,
चुप प्रेम हृदय नूं ख़िला देंदा ऐ।

(P-53)

मैंनूं ख़ाब अन्दर सोहणा सावण मिलेया,
टुर गया ओ कर हैरान मैनूं।
केहड़े देस जावां उस नू लोड़ लेयावां,
गया दस न पता निशान मैंनूं।
तत्ती विच कसूर जरूर हैसी,
तांहीयों छड गया लाल सुलतान मैंनूं।
काफ़िर होई प्यारेया तुध पिछे,
ताहणे मारदा जग जहान मैंनूं।
मैं तक रहीयां तेरे राह वल्लों,
कदी आ ओये सावना वास्ता ई।
तेरा मुख़ डिठेयां मेरी भुख़ जावे,
मैं पई दरस दीदार नू तरसदी हां।
मुख़ दिख़ाओ सावणा वास्ता ई,

न तरसाओ सावणा वास्ता ई।
तेरी चाल ते मस्त कमाल होई,
फेरा पाओ सावणा वास्ता ई।

(P-54)

मैंनूं तरसदी ने कई बरस गुज़रे,
तेरे दरस दीदार दी भुक्खी हां मैं।
पा के प्यार मुड़ गयों विसार माही,
लवीं सार मैंडी डाहढी अक्की हां मैं।
कदी आ प्यारेया ला सीने,
देखां राह ते मन्नतां सुक्खियां मैं।
होसी मेल कदी प्यारेया ओये,
तत्ती वांग तन्दूर दे धुक्खी हां मैं।

(P-55)

राती सुपने अन्दर सइयो,
माही दरस दिखाया।
अंग छुवाया रो बिजली,
वत सारे लरजा पाया।
करामात दी छोह विच,
अड़ियो न जाणा रस रब्बी।
ज़र्रा-ज़र्रा जिस्म मेरे दा,
खिच माही तड़फाया।

(P-56)

सत्गुरु दी याद विच

लाम लिक्खणे किस तरहां शेअर छड्डां,
दर्द यार दा सीना साड़दा ए।

तां ही सड़े होये निकलदे शेअर अन्दरों,
ग़म दिन राती सीना साड़दा ए।
जग ताहणेयां दी परवाह नाहीं,
फ़िराक तेरा ही सीना साड़दा ए।
जे कर हस बोलें चरणी ला लवें,
तेरा की सज्जणा घट जांवदा ए।

मीम मूर्ख दें हत्थ की आवणा ए,
असां रोन्दयां दिन गुज़ार जाणे।
लिक्ख लिक्ख के शेअर फिराक वाले,
किस्से जोड़ असां बेशुमार जाणे।
सानूं भेजेया रब्ब ने ऐस खातर,
एह दुक्खड़े असां सहार जाणे।
असीं करदे हां भला या बुरा यारो,
साडे दिलां दियां ओह करतार जाणे।

नून नरम दिल असां दा रब्ब कीता,
असो नरमीयां विच्च तबाह हो गये।
असां किसे दा कुझ विगाड़ेया नहीं,
पर लोक दुश्मण खाह-म-ख्वाह हो गये।
कोई पुच्छदा नहीं सच्चे दर्दियां नूं,
झुट्ठे झुट्ठेयां दे खैर-ख्वाह हो गये।
उद्धर सज्जणा दा देखो हाल प्यारे,
झिड़कां देण डाहढे बेपरवाह हो गये।

हाय वास्ते पान्देयां उमर गुज़री,
मिलेया कोई जवाब न यार वल्लों।
ना ही दीद होई न शहीद होई हां,
रही मैं महरूम यारग़ार वल्लों।
ढोई मिले न गया मैं दो तरफ़ों,
नाले यार वल्लों, नाले संसार वल्लों।
मैं तां बहुत ही अक्ल दुड़ा थक्की,
जान छुट्टदी नहीं आज़ार वल्लों।

ऐन इल्म दा पढ़ना नेक बहुता,
पर इश्क दी बात अनौखड़ी ए।
चन्द सूरज दी रौशनी है बहुती,
पर पिया दी झात अनौखड़ी ए।
मुश्किलां हैन होर बहुत जहान अन्दर,
पर बिरहों दी ख्रिच्च अनोखड़ी ए।

(P-57)

लावां सीने नाल निशानी नूं, करां याद जदों उस जानी नूं।
ओहले बह बह अत्थरू केरां, नाले मोती पावां गानी नूं।
लांबू बल बल सीने उट्ठदे, जदों देख्रां हुसन जवानी नूं।
घर दे मैंनू छिब्बियां देंदे, नाले हांसे करन दीवानी नूं।
सज्जनां तेरे इंडीपेंडेंट मैंनू, लावण भाग पये वीरानी नूं।

(P-58)

वार घत्तां मैं आपा उस तों, जो याद पिया दी वस्से।
मैं रो-रो झड़ियां लावां सावण, ओ सुख्री सुख्रावें वस्से।

बिरह मेरा ते मैं बिरह दी, नित्त प्रेम तणावां कस्से।
नित्त दी ख्रिच्च माही दी घुंडी, जोड़ जानी नाल रक्खे।

(P-59)

वाह वाह तेरे तौलिये सावण, दिल हुलसावे ते छम-छम लावण।
तैनूं ढूंढ किद्धरे न पाया, तौलियां दे विच्च नदरी आया।
दब्ब-दब्ब सीने नाल लगाया, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।
ज्यूं-ज्यूं घूट्टां त्यूं त्यूं मौलां, तन-मन दे विच ख्रिड़ियां होलां।
विच्च प्रेम दे लूं लूं रोलां, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।

विच्च जुदाई तेरी डोलां, तौलिये देख मित्रां नूं बोलां।
ना लै जाओ जान में रोलां, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।
साडियां कौन हुण सुने पुकारां, मैं लूं लूं जिन्दड़ी तैथों वारां।
लग्ग गले होइयां बहारां, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।
भाग वड्डे कर हथ विच्च आए, सीने घुट घुट असां लगाए।
आख़िर जुल्मी खस्स सदाए, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।
भला होए उस मीत प्यारे, उसदे कदमां तों वी वारे।
जिन तौलियां दे कराए दीदार, वाह वाह तेरे तौलिये सावण।

(P-60)

वाह वाह यार नज़ारा तेरा।
भोले भोले नी नैण रंगीले, मुक्खड़ा प्यारा-प्यारा तेरा।
दिल नूं ढारस देवो साइयां, दूरों देख इशारा तेरा।
वे मिट्ठियां मिट्ठियां नी गल्लां तेरियां, ते झूठा झूठा लारा तेरा।
पा मैंनूं हुण खैर दरस दा, वे मैं बैठी मल्ल दुआरा तेरा।
रवे सलामत हर दम साइयां, ओ बारियां वाला चुबारा तेरा।

(P-61)

व मैनूं डाहढियां प्यारियां लगदियां ने, नशेदार तेरियां मेहरबान अक्खियां।
जमाल न गुज्झियां रहंदिया ने, किसे नाल जेकर लड़ जान अक्खियां।

सिर्फ ख्वाहिश मैनूं तेरे वेखन दी, रो-रो के हाल सुनान अक्खियां।
'जमाल' नूं गुस्से न हो प्यारे, तैनूं मिन्नतां नाल मनाण अक्खियां।

(P-62)

साजन तेरे आपने क्यों नैण भरेंदी।
ओ तैथों वख नहीं क्यों नांह वखेंदी।

प्रीतम तेरा बुत्त है तूं जान उसे दी।
ओ हरमन्दर सोहना विच्च लाज वसेंदी।

तूं प्रीतम विच वस रही पी-पी कुकेंदी।
तूं तां इक-मिक हो रही क्यों दुखड़े सहेंदी।

आ प्रीतम आ सज्जना मैं तेरी होई।
तेरे संग मैं जीवंदी तैं बाझों मोई।

प्रीतम प्रीतम करदी नी मैं आपे प्रीतम होई।
भेद न कोई लख सके मैं ओहा होई।

(P-63)

समझ कदी ते मना अभिमानियां तूं,
इस जग ते नहीं हमेश रहणा।
कूड़े रंग तमाशे जहान वाले,
ऐथे किसे नहीं चौकड़ी मार बहणा।
भाई भैण ते होर साक सैण सारे,
छड्ड जाण तैनूं तूही दुख सहणा।
कर लै याद प्यारेया सज्जणां दी,
औखी बणी उत्ते जिन्हां हत्थ देणा।
जाणी जग सराये मुसाफरां दी,
एत्थे किसे न पैर पसार बहणा।
गवां उमर न इसदी चाह अन्दर,
अन्दर याद पिया दी हमेश रहणा।
न हो मस्त अलमस्त आपणी शान अन्दर,
हौमें कदी तां मनों विसार रहणा।
माया नागनी खा रही सभनां नूं,
उपा बचण दा सन्तां दी शरण पैणा।
मेरियो सइयो वेख के चोग चुगणा,
माया काग ने जाल पसारेया ऐ।

कदम कदम ते सोच विचार चल्लणा,
फसणा कदी न काल बुरा मारदा ऐ।
कदी भुल्ल के नेहों एत्थे लावणा न,
हरदम कूच नगारडा वज्जदा ऐ।
चल्लो चल्लिये पिया दे देस सइयो,
दम-दम घड़ी-घड़ी वाजां मारदा ऐ।
मुंह मोड़ कदी इस जहान वल्लों,
एह तां कूड़ दा है मुकाम सारा।
कूड़ कूड़े नाल अजेहा रच रेहेया,
भुल्ल गया करतार जहान सारा।
दस्सो दोस्ती करे कोई किस ताईं,
फ़ना दिस्सदा ज़मीं आसमान सारां
फड़ लै इक्को दी शरण मस्तानेयां ओये,
सावन बाझ है होर असार सारा।

(P-64)

सानूं माही दे मेहणे न मार,
रब्ब कोलों डर नी माय।
धुर दरगाओं पल्ले पया,
सोहणेयां दा सूबेदार, रब्ब कोलों...
माही मेरा मुर्शिद, माही मेरा मौला,
माही तों जिन्दड़ी निस्सार, रब्ब कोलों...
पाक प्रीतां नू भण्ड न अम्मड़िये,
अक्खियां तों पट्टियां उतार, रब्ब कोलों...
यारियां दी सार, कंवारियां की जाणन,
ऐ आशकी दे हीरेयां दा हाल, रब्ब कोलों...
मुर्शिद नाल प्रीतां लाइयां,
जेहड़ा अल्लाह नु देवे दिखाल, रब्ब कोलों...

(P-65)

सावण तेरा नहीं कोई सानी।
ढूंढिया मैं वी दोहीं जहानी, इतना नाज़ नहीं कराई दा,
पिया तेरे मिलण दे कारण, सौ-सौ हीले कराई दा।
असीं है मिलणा ज़रूर, लैणी तेरे चरणां दी धूड़।
परे दूर नहीं हटाई दा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
दुनिया सारी होई कूड़, होई आं तेरे इश्क विच्च चूर।
मुक्खड़ा सोहणा नहीं छुपाई दा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
लाह के लाज लोक दी सारी, होई तेरे दर दी सवाली।
गुस्सा मन नहीं हंढाई दा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
तेरियां चश्मां दी हां मारी, सड़ां विच्च विछोड़े भारी।
इतनी देर नहीं लगाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
दूरों चल्ल आई दर तेरे, पावां जोगण वाले फेरे।
नज़र मेहर दी चा पाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
भावें चंगी भावें मंदी, मैं तां दर तेरे दी बन्दी।
दरों दूर नहीं दुरकारीदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
गले लग्ग मेरे तू आके, सोहणी अपणी छवि विखा के।
अपणे बिरद नूं संभालीदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
जलवा नैणां दा चमका के, रंगीली टोर आपणी दिखला के।
मेरे अन्दर ठंड पाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
ना जा दूर हुण तूं नस्स के, वेखीं मेरे वल्ल हस्स हस्स के।
डेरे मेरे अन्दर लाईदा, पिया तेरे मिलण के कारण.........
घरां बारां नूं अग्ग लावां, साक सैन सब्भे ते जावां।
अलखां दर तेरे जगाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण ....
आ आ सावन मीत प्यारे, जिन्द ते जान तेरे तों वारे।
मेरे तन मन विच्च वसाईदा, पिया मिलण दे कारण.........
तूं तूं करदीं तूं हो जावां, होर न दूजी नज़री आवां।
पड़दा दुई दा मिटाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
तेरेयां नाज़ां लुट्ट खड़ेया, इल्म अक्ल दा झुग्गा सड़ेया।
सोहणी अपणी छब विखाई दा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........
तैनूं वेख वेख पई जीवां, ज़ख्म जुदाई दे पई सीवां।
दिल्लों दूर नहीं कराईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........

विछुड़ तेरे तों मर जासां, न कर दूर आपणेयां दासां।
हाड़े डाहढे नहीं कढ़ाईदा, पिया तेरे मिलण दे कारण.........

(P-66)

सिमरन माही दा कर-कर सदा, अजेहा समां बण आया।
वांगूं शीर शक्कर दे प्यारे, लूं लूं रस चवाया।
याद उस दी ने जान मेरी विच्च, अजेहा रंग चढ़ाया।
ओही ओह दिस्से हर पासे, सब पड़दा दूर हटाया।
लोकी आखण याद पिया विच्च, हो जास्सी दीवाना।
की जानण ओह लोक विचारे, अस्सां पाया यार पगाना।
मुद्दत्तां तों दिल चाहे मेरा, चुम्मा मुख दिलबर दा।
दिल दी चाह हुण पूरी होई, रज्ज पीवां जाम वसल दा।
लुक्क-लुक्क पड़दे अन्दर रक्खदा, सी मुक्खड़ा अपणा नूरी।
हटा के पड़दा ज़ाहिर होया, छड्ड के रिश्मां नूरी।
हिज्र फिराकां जान मेरी नूं, मार मुकाया आके।
नूरी मुक्खड़ा दस्सेया आपणा, इतना सोज़ विखा के।
चाहुन्दा सी दिल-दिलबर दी, मिले निशानी कदाईं।
निशान ढूंढदी ख़ुदी गवाई, बण बैठी ख़ुद साईं।

(P-67)

सिर सिर बाजी इश्क मजाज़ी, नाले इश्क़ हकानी।
मिल प्यारे नूं जो सुख पाया, किस नूं आख सुणावां मैं।
प्रेम प्याला दिलबर वाला, पी के मस्त कहावां मैं।
ज्यूं कामण कन्ते नूं मिल के, की गल्ल करे ज़बानी।
सिर सिर बाज़ी इश्क़ मजाज़ी.........।
मिलेया मुर्शिद मौला आ, मिलेया ज्यूं गहण सोहणा नी।
आपणा आप लखेया ज्यूं सुपना, मिट गया जग दा रोणा नी।
'किरपाल सिंह' आपे नर नारी, आपे लहरां पाणी नी।
सिर सिर बाज़ी इश्क़ मजाज़ी.........

(P-68)

हाड़ हैरानी लग रही, पिया बिना नाहीं चैन।
प्यारा नज़र न आंवदा, रोवां दिन भर रैण।
हाड़ होई हैरान, चले मेरे प्राण, लगाकर बाण जुदाई वाला।
किसी चंचलहारी दे नाल पिया मतवाला।

सावण शुकर गुज़ारसां, जे घर आवण आप।
सखिये आपणे पिया दा, करां मैं निस दिन जाप।
सावण करां मैं शोर, चले नहीं ज़ोर।
पिया मेरे चोर, गये चित्त चुरा के।
सखी टुर गये मेरे लाल, मुझे तड़फा के।
मैं रोवां दिन भर रैण, आये नहीं चैन, बरसदे नैण।
रोवां मैं ज़ारी, करां मैं गारी।
तुम देखो मेरा हाल आये बनवारी,
तेरे दरस दी लग रही भूख, दित्ता तन फूक,
हो गई चूक, बैठ पछताती।
सखी टुर गये मेरे लाल, मार कर काती।

भादरों भांबड़ बल उट्ठण, कोई न जांदी पेश।
पिया मुझे घर छोड़ कर, बैठे जा परदेस।
चड़दे भादरों जान घबराई, पिया जुदाई सही ना जाई।
मैं खड़ी पुकारां।
मैंनूं मिल जाये मेरा लाल, मैं तन मन वारां।
मैं हर दम करां पुकार, लवो मेरी सार, मेरे दिलदार,
क्यों मैनू भुलाया।
मोहे ले चल आपणे नाल, मेरा चित्त चाया।
नैनों से चलेया नीर, कलेजे पीड़, बन्धा तूं धीर,
यही मैं चाहती।
सखी टुर गये मेरे लाल, मार कर काती।

अस्सु बैठ ऐकान्त मैं रोवां ज़ारो-ज़ार।
तेरे पिच्छे प्रीतम, छोड़ दिया घर बार।
अस्सु मैं होई उदास, पिया नहीं पास,
तड़प रही लाश, कन्त नहीं आया।
नी मैं रोवां बैठ एकान्त, जी घबराया।
अज्ज आ कर हो सहाई, मेरे रघुराई,
तेरी जुदाई सही न जाती।
सखी टुर गये मेरे लाल, मार कर काती।

कत्तक करम जो लिख रहे, कोई न मेटनहार।
प्यारा नज़र न आवंदा, जिसदे नाल प्यार।
कत्तक में तड़फे जिया, पास नहीं पिया,
मोह मन लिया, पिया मुरारी।
मुझे आ कर कभी दिखा, शक्ल वो प्यारी।
मैं रो रो होई मुरदार, मेरे सरदार,
करो कुछ सार, क्यों चित्त उकाया।
सखी पिया गये परदेस, जिया घबराया।
मेरी लगी कलेजे कड़क, होआ रंग ज़रद।
बड़ा है दर्द भड़क रही छाती।
सखी टुर गये मेरे लाल, मार कर काती।

मग्घर मन नूं वस कर, दिल में बान्धूं धीर।
जदों याद पिया आवंदे, चले नैनों से नीर।
पिया बिन होई फकीर, बुरी तकदीर,
नैनों से नीर, सइयो है जारी।
की होई मेरी तकसीर, मेरे प्राण-आधारी।
सइयां सब कर रहियां चैन, पिया संग रैन,
तरस रहे नैन, बहुत दुख पाये।
होई इतनी देर, पिया नहीं आये।
तेरे हिज्र ने दित्ता चीर, कलेजे पीड़,
बन्धा तूं धीर, कोई नहीं साथी।
सखी टुर गये मेरे लाल, मार कर काती।

पोह महीना चढ़ पेया, ते पाले पहुंचे आण।
तेरे पिच्छे प्यारेया, छोड़ेया सब जहान।
अज्ज पोह सरद रुत्त आई, तेरी जुदाई,
सही नहीं जाती, रोवां दिन राती।
मैं क्यूंकर पिया गुमान, बैठ पछताती,
मैं रोवां बैठ एकान्त, पास नहीं कन्त।
जिया और जन्त, सभी सुख्र पावें,
मोहे नज़र न आवे लाल, जिया घबरावे।

(P-69)

हाय सुत्तेयां बीत गई उमर तेरी, जाग-जाग कूड़े पच्छोतावसे तूं।
घुण लग्ग गया चरख़े रगले नूं, जे पुच्छण तां की वख्रावसें तूं।
नी कन्त ख़्रफ़ा होसी घर जांदड़ी नूं , जे ना कत्त के नाल लैजावसें तूं।
मुंह कालिये ते करमां हारिये नी, पई रोवसें ते कुरलवासें तूं।
हाय सबर तैनूं कीकण आवंदा नी, तूं अक्ख्रियां मीट क्यों छड्डियां ने।
तेरी जान अकेलड़ी सफर लम्मा, विच्च राह मुसीवतां वड्डियां ने।
ऊपर घाट द पकड़ महसूल वाले, मार चूर कर सुटदे हड्डियां ने।
तेसा पकड़ के वांग शुदाइयां दे, जड़ां अपनियां आपतूं वढ्ढियां ने।
हाय लोड़ जिनहां घर वस्सने दी, कदों कन्त वल्लों गाफ़िल होन्दियां ने।
जिनहां सिक्क है कन्त दे वेख्रने दी, चोले दाग़ वाले पइयां धोंदियां ने।
उत्ते सेज उस साईं दी चढ़न ख्रातर, पइयां गुन्ह के हार परोंदियां ने।
करमां हारिये ते मतवालिये नी, सारी उमर जहियां रोंदियां ने।

(P-70)

हुण कोण गरीबां दे दुख्र वन्डे,
रब्बा बाझ तेरे मददगार कोई ना।
जेहड़ा यार महरम मैथों जुदा होइया,
बणया वक्त औख्रा रेहा यार कोई ना।
दस्सां दिले दा हाल जा फोल किस नूं,
करदा अज्ज मेरा इतबार कोई ना।

जदों दिन उल्टे आवण सज्जणा ओये,
बणदा तदों मुड़के वाकफ्कार कोई ना।

(P-71)

हुण तां प्यारेया, एहो है अरज़ मेरी,
तैडड़ा प्रेम कमाल होवे।
जीवां जदों तीकण रहे शौक तेरा,
मरदी वार तेरा प्रेम नाल होवे।
तूं ही तूं करदी निकलां देह विच्चों,
कोई होर न वहम ख्याल होवे।
रहे बाकी होर न मंग कोई,
हासल तैहड़ा जदों 'जमाल' होवे।

संत कृपाल सिंह जी महाराज का जीवन-परिचय

संक्षिप्त जीवन चरित्र :
परम संत कृपाल सिंह जी महाराज

संत कृपाल सिंह जी महाराज 6 फ़रवरी, 1894 ई. में, ज़िला रावलपिंडी के एक छोटे से गाँव, सय्यद कसराँ में एक संभ्रात सिक्ख घराने में पैदा हुए। रखने वालों ने नाम भी चुन कर रखा– 'कृपाल', जिसने दयामेहर के ख़ज़ाने दोनों हाथों से लुटाये और रूहानियत (आत्मज्ञान) को दौलत से दुनिया को मालामाल कर दिया।

अध्ययनशील विद्यार्थी

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' बचपन ही से महापुरुषों के लक्षण आप में दिखाई देने लगे थे। घर से खाने–पीने की जो चीज़ें इन्हें मिलतीं, वे सब अपने साथी बालकों को बाँट देते और आप किसी एकांत स्थान में जाकर ध्यान में लीन हो जाते। इनका बचपन का ज़माना अनगिनत चमत्कारों से भरा पड़ा है, जिसके कारण 6 वर्ष की आयु से ही लोग इन्हें संत मानने लगे थे। इनका विद्यार्थी जीवन ज्ञान प्राप्ति और अध्ययनशीलता की अथक लगन का नमूना था। स्कूल की पढ़ाई के ज़माने में कॉलिज की पूरी लायब्रेरी की किताबें आपने पढ़ डाली थीं।

ज्ञान प्राप्ति की अनन्य लगन

आप मिशन स्कूल में पढ़ते थे, जहाँ ईसाई पादरी अक्सर लैक्चर देने आया करते थे। एक बार एक पादरी साहब स्कूल में आए और एक एक कक्षा में जाकर विद्यार्थियों से उनकी इच्छाओं–आकांक्षाओं और जीवन के आदर्श के बारे में कई सवाल पूछे। जब इनकी (कृपाल सिंह जी की) कक्षा में पहुँचे तो पादरी साहब ने पूछा, "बच्चों! तुम किस लिए पढ़ रहे हो? पढ़–लिख कर तुम क्या बनना चाहते हो?" अपनी–अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न उत्तर लड़कों ने दिए। किसी ने कहा, मैं पढ़ाई ख़त्म करके डॉक्टर बनूँगा, किसी ने कहा, मैं इंजीनियर बनूँगा, किसी ने कुछ, किसी ने कुछ कहा। रस्मी से जवाब थे जिनके पीछे एक ही उद्देश्य था कि पढ़–लिख कर

रोज़ी पैदा की जाए। जब कृपाल सिंह जी की बारी आई तो उन्होंने कहा, "I read for the sake of knowledge," अर्थात मैं ज्ञान प्राप्ति के लिए पढ़ रहा हूँ। पादरी साहब ये जवाब सुनकर बहुत ख़ुश हुए और भविष्य–वाणी की कि ये लड़का एक दिन दुनिया में नाम पैदा करेगा।

यह जवाब ज्ञान प्राप्ति के लिए अनन्य लगन का परिचायक था, जो इन्हें उस परम ज्ञान की मंज़िल तक ले गयी, जिसको पाकर सब कुछ जाना हुआ और पाया हुआ हो जाता है।

जन-कल्याण की प्रेरणा

संत कृपाल सिंह जी ने पूर्व और पश्चिम के परमार्थाभिलाषियों के पथ–प्रदर्शन के लिए अनेकों ग्रंथ लिखे हैं, लेकिन सबसे बड़ा ग्रंथ उनका अपना जीवन है, जिसके महत्त्वपूर्ण दृष्टांत अंधेरी रात में चमकते तारों के समान जीवन पथ के यात्री को रास्ता दिखाते हैं। 12 वर्ष की आयु में श्री रामानुज के जीवन वृत्तांत में उन्होंने पढ़ा कि जब वे गुरु से दीक्षा लेकर वापस घर लौटे, तो गाँव के लोगों को इकट्ठा करके गुप्त मंत्र, जो गुरु से मिला था, उन्हें बताने लगे। लोगों ने टोका कि यह तुम क्या कर रहे हो, गुरुमंत्र बताना महापाप है, नरकों में जाओगे। रामानुज ने कहा, "अकेला मैं ही नरकों में जाऊँगा ना! यह सारे लोग तो बच जाएँगे।" आप फ़रमाते हैं, "यह वृत्तांत पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ और मैंने सोचा कि यदि यह आत्मज्ञान की यह दात कभी मेरे हाथ आई तो मैं भी उसे इसी तरह मुफ़्त लुटा दूँगा।"

जीवन का लक्ष्य

1911 ई॰ में आपने मैट्रीकुलेशन परीक्षा पास की। उस वक़्त आपकी आयु 17 वर्ष की थी। अब यह सवाल सामने आया, जो पढ़ाई ख़त्म होने पर हरेक विद्यार्थी के सामने आता है, कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? मुझे ज़िंदगी में क्या काम करना है? आप फ़रमाते हैं कि "पूरे सात दिन मैंने इस सोच में गुज़ार दिए और अंत में फ़ैसला किया कि मेरे लिए परमात्मा पहले है, दुनिया बाद में।" फिर सारा जीवन इस आदर्श– प्रभु प्राप्ति में लगा दिया।

महान जीवन की तैयारी

महाराज कृपाल सिंह जी के बचपन और विद्यार्थी जीवन से यह तथ्य दिन के उजाले की तरह सामने आता है कि उन्हें शुरू ही से उस महान कार्य का, जो आगे चलकर उन्हें करना था, पूर्ण आभास था। बचपन ही से उनका हर क़दम उस महान जीवन की तैयारी के लिए उठता रहा। उस जीवन के लिए असाधारण संस्कार एवं क्षमताएँ आप लेकर आए थे। चार वर्ष की आयु मे ही वो ध्यानास्थित होकर अन्तर दिव्य मण्डलों में विचरने लगे थे। आप फ़रमाते थे कि सुरत अर्थात आत्मा के सिमट जाने से नींद का काम पूरा हो जाता है। आत्मा पिंड (स्थूल शरीर) को छोड़ ऊपर दिव्य मण्डलों की सैर करके वापस आती है तो शरीर recharge जाता है अर्थात नया जीवन प्राप्त करता है। ये उच्च प्रवृत्तियाँ और संस्कार आप में जन्मजात थे और इनसे आप ने जीव–कल्याण के महान कार्य में बड़ा काम लिया।

प्रभु–प्राप्ति की ओर

उन्हीं दिनों एक घटना घटी जिसने प्रभु की तलाश की चिंगारी को, जो इनके हृदय में सुलग रही थी, एक धधकती ज्वाला बना दिया। लाहौर में आप एक जवान औरत का हाल देखने गए, जो बीमार थी और जीवन के अंतिम स्वाँस ले रही थी। सहसा वह अपने रिश्तेदारों से कहने लगी, "मेरा कहा–सुना माफ़ करना, मैं जा रही हूँ," यह कहकर प्राण त्याग दिए। ये दृश्य देखकर आप सोचने लगे, वह क्या चीज़ थी जो इस औरत के शरीर से निकल गई है, जिससे यह मुर्दा पड़ी है और हममें वह चीज़ अभी मौजूद है? वह कौन–सी ताकत है जो हाड़–माँस के इस शरीर को चलाती है और जब इससे निकल जाती है तो मिट्टी का ढ़ेर बाक़ी रह जाता है? शव के साथ आप श्मशान भूमि पहुँचे। वहाँ उस जवान औरत की चिता के पास ही एक बूढ़े आदमी की लाश पड़ी थी। यह दृश्य देखकर ख़्याल आया कि मौत जवानी और बुढ़ापे में कोई फ़र्क नहीं देखती। थोड़ी दूर आगे एक स्मारक पर लिखा था– "ओ जाने वाले, कभी हम भी तेरी तरह चलते फिरते थे, लेकिन आज मिट्टी का ढ़ेर होके पाँव तले पड़े हैं।" एक के बाद एक, यह तीन दृश्य देखकर दिल को चोट लगी। इसके बाद रातों की नींद

उड़ गई। प्रभु प्रियतम के वियोग में यह अवस्था बनी कि रात को आँसुओं से सारा तकिया भीग जाता। इस तलाश ने कई रंग दिखाये। किताबें पढ़ी, हरेक समाज के धर्मग्रंथ पढ़े। साधु महात्माओं से मिले– क्या क्या नहीं किया? यह सवाल आख़िर हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के चरणों में जाकर हल हुआ।

जीवन की पवित्रता, आत्म–निरीक्षण और निरन्तर अभ्यास से आपको त्रिकालदर्शिता प्राप्त हो गई– पीछे क्या हुआ, आगे क्या होने वाला है, सभी बातें साफ़ दिखाई देने लगीं। आपने प्रार्थना की, "हे प्रभु! मैं तो तुझे पाना चाहता हूँ। ये दैवी शक्तियाँ जो तूने दया करके मुझे प्रदान की हैं, इनका शुक्रिया! इन्हें अपने पास रख। तुझसे यही माँगता हूँ कि मेरा जीवन एक साधारण व्यक्ति की तरह गुज़रे। दूसरे यह कि यदि मेरे हाथों किसी का भला हो तो मुझे उसका कोई अहसास न हो।" यह दो प्रार्थनायें 'कृपाल' के विशाल, प्रभु प्रेम और विश्व प्रेम से ओत–प्रोत हृदय की अनुपम झाँकी प्रस्तुत करती हैं।

सत्गुरु दयाल से भेंट

धर्मग्रंथों के अध्ययन से आप इस निष्कर्ष पर तो पहुँच चुके थे कि परमार्थ में सफलता के लिए गुरु का मिलना ज़रूरी है, पर हर वक़्त मन में यह धड़का लगा रहता था कि किसी अधूरे से वास्ता न पड़ जाए, सारा जीवन बर्बाद न चला जाए। इनके हृदय की सच्ची पुकार प्रभु ने सुनी और वक़्त के संत–सत्गुरु, श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का दिव्य स्वरूप इन्हें अंतर में आने लगा। यह 1917 ई॰ की बात है, हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज जी के चरणों में जाने से सात साल पहले की। बाबा सावन सिंह जी महाराज से मुलाकात भी एक विचित्र संयोग था। 1924 ई॰ की बात है, आप लाहौर में मिलिट्री अकाउन्ट्स के दफ़्तर में काम करते थे। नदी का तट देखने का शौक आपको ब्यास ले गया। हुज़ूर बाबा सावन सिंह महाराज के चरणों में पहुँचे तो देखा कि ये तो वही महापुरुष हैं जिनका दिव्य स्वरूप साल साल से अंतर में पथ–प्रदर्शन करता रहा था। पूछा, "हुज़ूर, श्री चरणों में लाने में इतनी देर क्यों की?" हुज़ूर महाराज मुस्कुरा दिये। कहने लगे, "यही वक़्त मुनासिब था।"

आदर्श शिष्य

गुरु की तलाश में कड़ी से कड़ी कसौटी आपने अपने सामने रखी। जब वह मिल गया तो तन, मन, धन सब कुछ गुरु को अर्पण कर दिया। गुरु भक्ति की और ऐसी की कि गुरु में अभेद हो गये। इनके महान कल्याणकारी जीवन की मोटी–मोटी बातों को भी बयान करने की यहाँ गुंजाइश नहीं है। वह करन–कारण प्रभु–सत्ता, उसे नाम कहो, शब्द कहो, जो मानव तन में प्रकट होकर जीवों का कल्याण करती चली आई है, इनके अन्तर में प्रकट होकर पूर्व से पश्चिम तक जीवों का प्रभु से जोड़ती रही। यह उसका प्रताप था कि भारत के सभी वर्गों जातियों व समाजों के अतिरिक्त यूरोप और अमरीका में सभी मतों के इसाइयों, इसराइल के यहूदियों, भारत, पाकिस्तान और अरब देशों के मुसलमानों, अफ़्रीका और अमरीका के हबशियों, तिब्बत, मलाया व अन्य पूर्वी देशों के बौद्धों का प्रेम प्यार व सम्मान उनको प्राप्त था। इनके दीक्षितों में विश्व के लगभग सभी देशों, जातियों, विचारधाराओं तथा समाजों के लोग शामिल हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी को पुरबले संस्कारों तथा गुरु कृपा के प्रताप से देह स्वरूप में गुरु (परम संत श्री हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज) से मिलाप होने से सात साल पहले ही गुरुमुख की अवस्था प्राप्त हो चुकी थी। लम्बी खोज के बाद जब देह स्वरूप में सत्गुरु दयाल के दर्शन हुए तो बरबस इनके मुख से निकला, "हुज़ूर! अपने चरणों में लाने में इतनी देर क्यों की?" कोई पूछ–ताछ नहीं, कोई सवाल–जवाब नहीं, सात साल से अंतर दिव्य मंडलों में जो महापुरुष मार्गदर्शन करते रहे, उनसे सवाल–जवाब की गुंजाइश ही कहाँ रह गयी थी? शिष्य के सवाल के पीछे लंबी खोज की, विरह वेदना की, लंबी कहानी थी। गुरु के उत्तर में उसकी (गुरु के मानव तन में काम करने वाली प्रभु–सत्ता की) मौज या इच्छा का इशारा था, स्पष्ट संकेत था इस बात का कि इस सारी क्रिया में इंसानी कोशिशों का दख़ल नहीं, यह उस परम सत्ता का काम है जो गुरु के चोले में प्रकट होकर जीवों का उद्धार अर्थात उन्हें तन–मन से ऊपर लाकर प्रभु से जोड़ने और मिलाने का काम करती है। गुरु शिष्य की कहानी उस पहली मुलाक़ात ही में अपनी चरम सीमा में पहुँच गयी, किन्तु प्रभु रूप महापुरुषों का जीवन अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए हुआ करता है, वे ज़िंदगी की क़लम से

लिखी एक खुली किताब होते है, जीवन पथ के यात्रियों के मार्गदर्शन के लिए। अपनी जीवन यात्रा में वे जिज्ञासुओं के लिए पद चिन्ह छोड़ जाते हैं, इस लिए उनकी कहानी चरम पर पहुँच कर भी एक शुरूआत बन जाती है। जैसे अध्यापक प्राइमरी में प्राइमरी की, मिडिल में मिडिल की और एम.ए. में एम.ए. की योग्यता दर्शाता है, इसी तरह महापुरुष पूर्ण होते हुए भी गृहस्थी, जिज्ञासु, सेवक और शिष्य– सारे आदर्शों को अपने जीवन में प्रस्तुत करते हैं।

गुरु और गुरुमुख की कहानी

ग्रहणशीलता से पिता–पूत की, गुरु और गुरुमुख की कहानी शुरू होती है जो विकास की विभिन्न स्थितियों से गुज़र कर उस मंज़िल पर पहुँचती है जहाँ पिता–पूत में, गुरु और शिष्य में कोई अंतर नहीं रह जाता और वह (शिष्य) सेंट पॉल के शब्दों में पुकार उठता है :

"It is I, not now I, it is Christ but lives in me."

अर्थात "यद्यपि मैं वही हूँ, परन्तु अब 'मै' नहीं रहा, क्योंकि अब मेरे अन्तर में निवास करने वाला मसीह है।" यह प्रेम की पुरातन परंपरा है।

प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समांहि।

यहाँ दो से एक होकर चलना पड़ता है। शिष्य अपना अस्तित्व गुरु में लीन कर देता है। सूफ़ियों की परिभाषा में वह फ़ना–फ़िलशेख़ हो जाता है, गुरु में समा जाता है। जो प्रभु में समा गया वो (सूफ़ियों की इस्तेलाह या परिभाषा में) फ़ना–फ़िल्लाह हो जाता है, प्रभु में समा जाता है। महाराज कृपाल सिंह जी के शब्दों में "गुरु God-man (प्रभु में अभेद) है, अर्थात, God (परमात्मा) जमा इंसान। जो Guru-man अर्थात गुरुमुख बन गया, प्रभु उस में आ गया कि नहीं?"

Receptivity या ग्रहणशीलता (गुरु से) जो संत कृपाल सिंह जी महाराज को पुरबले संस्कारों और गुरु कृपा की देन थी, उसे कैसे पैदा किया जाए? एक ऐसा शिष्य जिसकी पिछली background या पृष्ठभूमि नहीं, उसे कैसे प्राप्त कर सकता है? इस संदर्भ में महाराज कृपाल सिंह जी का मशहूर कथन सामने आता है, "एक इंसान ने जो किया, वही काम

अन्य दूसरा इंसान भी कर सकता है यदि उसे सही मार्गदर्शन और मदद मिले।" उन के गुरुपद काल ही में नहीं शिष्यत्व काल में भी इस बारे में (गुरु से दिल से दिल को राह बनाने के बारे में) बहुत लोगों ने उनके मार्गदर्शन और सहायता से लाभ उठाया। अपने प्रवचनों और लिखतों में गुरु से यकदिली बनाने का मज़मून का (जिसे वो परमार्थ का मूल और आधार मानते थे) ऐसा सुविस्तार और बोधगम्य स्पष्टीकरण उन्होंने किया है और ऐसी पते की बातें बताई हैं, कि अध्यात्म के पूरे साहित्य में कोई मिसाल नहीं मिलती। इस सिलसिले में गुरु दर्शन पर वे बड़ा ज़ोर देते थे। गुरु दर्शन के बारे में बड़ी गूढ़ बातें आप बताया करते थे। दर्शन के प्रसंग में अपने सत्संग प्रवचनों में हुज़ूरे–पुरनूर उपासना का आदर्श प्रस्तुत करते थे (उप–आसन) अर्थात पास बैठना। पास बैठना ये नहीं हैं कि,

दिल दिया कहीं और ही, तन साधु के संग।

साधु संग, अर्थात साधु के पास बैठना यह है कि दर्शन में इतना लीन हो जाए कि तन–मन की सुधि भूल जाए। अपने जीवन का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए फ़र्माया करते थे :

"हुज़ूर अपने काम में लीन होते, मैं चुप–चाप बैठा देखता रहता। अभिनेता होता है ना, उसकी हर बात में अभिनय होता है, खाने–पीने में, उठने–बैठने में, बोलने–चालने में। एक तो उसका वास्तविक स्वरूप, जो वह स्वयं आप है (अर्थात परमात्मा), एक जो वो बन के आया है, जो पार्ट वह करता है (अर्थात इन्सान)। हमारी तरह ही मानव देह वह रखता है, लेकिन वह कुछ और भी है। वह सदेह–परमात्मा है। चित्तवृत्ति एकाग्र कर के चुप–चाप बैठे देखते रहो तो God-in-man की, प्रभु–सत्ता जो गुरु के मानव तन में काम करती है, उसकी झलक मिलती है।"

जब आप श्री हुज़ूर महाराज जी के चरणों में जाते तो 'दीदा शौ यक़सर' अर्थात सर्वथा आँख बन जाते, अपलक नेत्रों से चुप–चाप देखते रहते। दर्शन में ऐसे लीन हो जाते कि तन–बदन की सुधि न रहती। पास बैठे लोगों को एक आनन्द की अनुभूति होती, मुफ़्त नशा मिल जाता। एक दिन आप सत्गुरु दयाल के दर्शनों में लीन थे, कोई और वहाँ मौजूद न था। एक भक्त महिला ने देखा तो शोर मचा दिया, "मैंने आप दोनों की

चोरी पकड़ ली है।" सत्गुरु दयाल हँसकर कहने लगे, "क्या चोरी पकड़ ली है?" "आप दोनों देह में नहीं हो, उठकर आँखों में आ गए हो।"

ऐसे कई दृष्टान्त उनकी जीवन गाथा में मिलते हैं जिन पर अमर जीवन की मुहर लगी हुई है, जो उन्होंने ख़ुद पाया और जिस का अंश दुनिया भर के परमार्थभिलाषियों को देते रहे। उनकी हर लिखत, हर कथन उनका, उस जीवन का, abundance of heart का, उनके करुणामय हृदय के अनन्त स्रोत का, रंग और असर लिए हुए है। उदाहरणार्थ उपरोक्त विषय (अर्थात परमार्थ में रसाई, जो गुरु से एकात्मता की देन है), पर उनका ये सारगर्भित कथन, "मैंने सत्गुरु दयाल से कभी कोई सवाल नहीं किया। बस चुप–चाप बैठे दर्शन करता रहता। देखने–देखने में मुझे सब कुछ मिल गया, बिन मांगे मिल गया।"

जीवन की पड़ताल

जीवन की पड़ताल की डायरी जो परमार्थाभिलाषियों तथा सतपथ के यात्रियों को संत कृपाल सिंह जी महाराज की ख़ास देन है तथा यह उनके अपने जीवन, अनुभव और विश्व के सारे धर्मों–मज़हबों–मतों की शिक्षाओं के तुलनात्मक अध्ययन का निचोड़ है। उन्होने स्वयं सात साल की उम्र में डायरी रखना शुरू कर दिया था, जिसमें दिन भर की ग़लतियों की कड़ाई और बेलिहाज़ी से लिखते और आगे के लिए उन ग़लतियों से बचने का यत्न करते। आगे चल कर जब उन्होंने गुरु पद पर कार्य शुरू किया तो आत्म–निरीक्षण की डायरी को एक ऐसा वैज्ञानिक रूप दिया जिसमें दुनिया के सारे धर्मग्रंथों और आज तक आए सारे महापुरुषों की शिक्षाओं का निचोड़ डायरी में प्रस्तुत कर दिया और अपने शिष्यों और सत्संगीजनों को डायरी के द्वारा अपनी त्रुटियों को चुन–चुन कर बाहर निकालने पर ज़ोर देते रहे। डायरी के विषय में आप फ़रमाते थे कि इंसान कुछ भी न करे, सच्चाई के साथ केवल डायरी भरना शुरू कर दे तो उसका जीवन पलटा खा जाएगा और दिल का दर्पण साफ़ हो कर सत्य की झलक उसमें पड़ने लगेगी। डायरी के बारे में हुज़ूर महाराज जी ने विस्तार के साथ कहा और लिखा है। यहाँ उनका एक ही कथन दोहराना काफ़ी है कि "हमें पता ही नहीं हम कहाँ खड़े हैं। यह पता हो कि हम गंदगी में बैठे हैं तो उससे निकलने

की कोशिश भी करेंगे। हमें पता ही नहीं हममें क्या त्रुटियाँ है। अपनी त्रुटियों को देखें, तभी पता चले। अपनी तरफ़ नज़र मार कर देखें तो दूसरों के दोष निकालने की फ़ुर्सत ही न मिले।"

अपने व्यस्त–अति–व्यस्त जीवन में उन्होंने कई किताबें लिखी जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण किताब, वर्तमान युग का महान धर्मग्रंथ, 'गुरुमत सिंद्धात' है। यह अमर रचना, जो गुरुमुखी भाषा में है, दो भागों में, दो हज़ार पृष्ठों में फैली हुई है। इसमें गुरुग्रंथ साहिब और दुनिया के सभी समाजों के धर्मग्रंथों के प्रमाण देकर सिद्ध किया गया है कि धर्मग्रंथ, जो आज तक लिखे गये और महापुरुष, जो आज दिन तक आए, सबकी मूलभूत तालीम एक ही है। इस महान ग्रंथ में दुनिया के सारे धर्मग्रंथों का सार प्रस्तुत किया गया है। पश्चिम के परमार्थाभिलाषियों के लिए आपने अंग्रेज़ी भाषा में कई ग्रंथ रचे। आपकी पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, इण्डोनेशियन, रूसी और ग्रीक (भारत के अतिरिक्त विश्व की कुल 14 भाषाओं में) हो चुका है।

अध्यात्म का सार्वभौम प्रसार

36 वर्ष की सरकारी नौकरी के बाद, मार्च 1947 ई॰ में, आप डिप्टी असिस्टेन्ट कन्ट्रोलर ऑफ़ मिलिट्री एकाउन्ट्स के पद पर रिटायर हुए और उसके बाद, सत्गुरु दयाल हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के मिशन को पूरा करने में लगे रहे, जो 2 अप्रैल, 1948 ई॰ को अपना रूहानियत का, अर्थात जीवों के कल्याण का काम, आपको सौंप कर परमधाम सिधार गये। गुरु के आदेशानुसार आपने 1948 ई॰ में रूहानी सत्संग और 1951 में दिल्ली में 'सावन–आश्रम' की स्थापना की, जहाँ जात–पात, रंग–वर्ण, देश व समाज के भेद–भाव के बग़ैर हरेक परमार्थाभिलाषी को, आत्मतत्व का व्यक्तिगत अनुभव उन्होंने प्रदान किया। धर्म को और प्रभु को मानने वाले लोगों को— वो किसी भी धर्म, देश, जाति, नस्ल के हों— आपस में जोड़ने और मिलाने की साँझी धरती, Common Ground, जो हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के ज़माने में क़ायम हो चुकी थी और जिसके रूहानी फैज़ (पारमार्थिक लाभ) का सिलसिला (अर्थात परमार्थाभिलाषियों को मन–इन्द्रियों से ऊपर लाकर आत्मानुभव

प्रदान करने के कार्य का सिलसिला) जो भारत के कोने–कोने में और भारत से बाहर यूरोप, इंग्लैंड और अमरीका तक फैल चुका था, उस काम को उन्होंने अपने 26 वर्ष की पल–पल कार्यरत, व्यस्त–अति–व्यस्त रूहानी पादशाही में और आगे बढ़ाया और इतना आगे फैलाया कि यूरोप के लगभग सभी मुल्कों, अफ़्रीका के विभिन्न देशों, इंग्लैंड, अमरीका (उत्तरी और दक्षिणी अमरीका) कैनेडा, पूर्व में मलाया, कोरिया, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया आदि देशों में रूहानी सत्संग की 250 से ऊपर शाखायें उनके जीवन काल में स्थापित हो चुकी थीं।

विश्व यात्राएँ

1955 में उन्होंने पश्चिम–यूरोप, इंग्लैंड, अमरीका आदि की यात्रा की और लोगों को आत्मानुभव की दात दी। उस ऐतिहासिक विदेश यात्रा में उन्होंने, जो महान कार्य सार्वभौमिक स्तर पर उन्हें करना था, उसकी पक्की नींव रखी और अपने महान सत्गुरु की रूहानी दात के डंके सारी दुनिया में बजा दिये। पश्चिमी देशों में भाषण पर टिकट लगता है, जिसका एक हिस्सा वक़्ता को मिलता है। महाराज जी ने हर जगह free talks (मुफ़्त व्याख्यान) दीं। लोगों ने उन्हें धन देना चाहा तो उन्होंने कहा, "क़ुदरत की सारी दातें– रोशनी, पानी, हवा– मुफ़्त हैं और सबके लिए हैं। रूहानियत (आत्मज्ञान) भी क़ुदरत की देन है। वह सब के लिए है और सबको मुफ़्त मिलेगी।" दो वर्ष पश्चात, 1957 में दिल्ली में वे सर्व–सम्मति से 'World Fellowship of Religions' (विश्व सर्वधर्म संघ) के प्रधान चुने गये, जिसे उसके संयोजक, मुनि सुशील कुमार जी महाराज एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप देना चाहते थे। संत जी ने उसका संविधान बनाया और उस संस्था के अन्तर्गत जो चार विश्व सम्मेलन, 1957 में दिल्ली में, 1960 में कलकत्ता में और 1963 और 1970 में फिर दिल्ली मे हुए, वे सब उनकी अध्यक्षता में हुए। इन सम्मेलनों के फलस्वरूप धर्मों का एक शक्तिशाली common platform या सयुंक्त मंच बना, विभिन्न धर्मों के लोगों के एक जगह मिल बैठने और विचार–विमर्श करने की प्रथा चली, जिससे आपस की ग़लतफ़हमियाँ दूर हुईं और लोग एक–दूसरे के क़रीब आने लगे, भेद–भाव दूर हुए, धर्मांधता, तास्सुब, तंगदिली, कम हुई और समन्वय

और सहिष्णुता की भावना को बढ़ावा मिला। मगर उसके साथ ही लोगों में अपने–अपने समाज को आगे बढ़ाने की भावना बनी रही, बल्कि और मज़बूत हुई और ऐसी आवाज़ें सुनाई देने लगीं, "दुनिया भर के हिन्दुओं, एक हो जाओ, मुसलमानों, एक हो जाओ।" इस चीज़ को देखकर महाराज जी इस नतीजे पर पहुँचे कि अब इसके बाद एक और क्रान्तिकारी क़दम आगे बढ़ाना होगा।

धर्मों और मज़हबों का– सभी समाजों का– उद्देश्य तो यही है न कि इंसान नेक–पाक–सदाचारी बनें, सही मानों में इंसान बनें। यह सोचकर उन्होंने एक महान क्रान्तिकारी क़दम उठाने का फ़ैसला किया, जो मानव केन्द्र की स्थापना और 'विश्व मानव एकता सम्मेलन' के रूप में दुनिया के सामने आया।

1962 में ईसाईयों की डेढ़ हज़ार वर्ष पुरानी धर्म संस्था, 'Sovereign Order of St. John of Jerusalem, Knights of Malta' ने, जो मुस्लिम–ईसाई धर्मग्रंथों में 'Knight Templars' कहलाते थे, उन्होंने महाराज जी को 'Grand Commander' की उपाधि से सम्मानित किया। इसके लिए उन्हें अपने डेढ़ हज़ार वर्ष पुराने संविधान में संशोधन करना पड़ा। सिक्ख समाज के एक महापुरुष को धर्मवीर मानकर उन्होंने स्वीकार किया कि धर्म और आस्तिकता ईसाइयों का एकाधिकार नहीं। कैथोलिक ईसाईयों के धर्मगुरु पोप ने आपसे भेंट करने के बाद ग़ैर–ईसाइयों से मेल–जोल बढ़ाने की घोषणा की और इस हेतु जो सलाहकार समिति बनायी, उसमें महाराज कृपाल सिंह जी का नाम भी शामिल किया।

1963 में हुज़ूर दूसरी बार विश्व यात्रा पर गये। तब तक रूहानी सत्संग की दो सौ शाखायें सारी दुनिया में फैल चुकी थीं। इस यात्रा में उन्होंने रूहानी सत्संग की शाखाओं का गठन किया, नई शाखायें स्थापित कीं, नए परमार्थाभिलाषियों को नामदान दिया और साथ ही मानव एकता और विश्व सर्वधर्म सम्मेलन के common platform का संदेश लोगों को दिया। दूसरी विश्व यात्रा में हुज़ूर महाराज जी ने विभिन्न स्तरों पर काम किया। वे हुक्मरानों (विभिन्न देशों के सत्ताधीशों) से मिले और उन्हें बताया कि प्रभु ने लाखों लोगों की सुरक्षा और कल्याण का जो काम उन्हें सौंपा है, उसे पूरी ईमानदारी के साथ पूरा करें। यदि पड़ोसी देश अव्यवस्थित

या कमज़ोर पड़ जाए, तो वे उसकी मजबूरी का लाभ उठा कर उसका शोषण न करे, बल्कि उसकी सहायता करें। वे राजनीतिज्ञों, जन–नायकों, धमोचार्यों, सभी से मिले। ईसाई समाज की प्राचीनतम धर्म संस्था से सम्म. ान प्राप्त करने के कारण उनके लिए सारे गिरजों के दरवाज़े खोल दिए गए थे और इस यात्रा की अधिकतर talks (प्रवचन) उन्होंने गिरजों में दी, बल्कि नामदान तक गिरजों में दिया। ये बात आज तक नहीं हुई थी। अगस्त 1972 से जनवरी 1973 तक, पांच महीने की अपनी तीसरी और आख़िरी विश्व यात्रा में, हुज़ूर महाराज ने सिर्फ़ एक काम किया– खुले आम लोगों को नामदान देने का काम। उपदेश–प्रवचन के बाद अगले दिन सबको भजन पर बिठा दिया जाता और नामदान अभिलाषियों को, हरेक को नामदान दिया जाता।

मानव केन्द्र की स्थापना

1969 में हुज़ूर महाराज जी की हीरक जयन्ती सब समाजों ने मिल कर मनायी। विश्व एकता और राष्ट्र नवचेतना के अग्रदूत और मार्गदर्शक का इससे बढ़कर अभिनन्दन नहीं हो सकता था कि उनकी हीरक जयन्ती का वर्ष राष्ट्रीय एकता वर्ष के रूप में मनाया गया। सभी समाजों ने उस वर्ष राष्ट्रीय एकता के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने का प्रण किया। महाराज जी मंच पर भाषण करके संतुष्ट हो जाने वाले नहीं थे। उसी वर्ष उन्होंने मानव केन्द्र की योजना बनायी। उसमें श्री काका साहिब कालेलकर, प॰ दीनानाथ दिनेश और अन्य महापुरुषों को साथ लिया और 1970 में, देहरादून में मानव केन्द्र का भव्य स्वरूप, भारत का सबसे बड़ा पक्का अंडाकार सरोवर, बाग़, अस्पताल आदि बनकर तैयार हो गये। हीरक जयन्ती के अवसर पर अपनी जन्मतिथि, छः फ़रवरी के अनुरूप, छह शब्दों में उन्होंने अपनी तालीम का जो निचोड़ पेश किया था, 'भले बनो, भला करो, एक रहो'– 'मानव–केन्द्र' उसका साकार स्वरूप था।

विश्व मानव एकता सम्मेलन

विश्व सर्वधर्म सम्मेलन के महान कार्य और उसके व्यापक प्रभाव का उन्हें पूरा अहसास था। लेकिन उन्होंने देखा और अपने प्रवचनों और किताबों में कहा और लिखा कि समाजों के विवेकवान लोग (नेतागण,

धर्माचार्य) तो बहुत हद तक एक हो गए है और भेद–भाव से ऊपर उठ गए हैं, लेकिन उनके अनुयायियों में वो बात पैदा नहीं हुई। तभी उन्होंने धर्म की बजाय मानव और मानवता के आधार पर एकता सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया। विश्व के इतिहास में अपने ढंग का यह पहला प्रयास था। इससे पहले सम्राट अशोक और हर्ष के ज़माने में जो सम्मेलन हुए, वे धर्म के आधार पर हुए थे। दिल्ली और पूरे देश में इतना बड़ा विश्व स्तर का सम्मेलन इससे पहले कभी नहीं हुआ था। विभिन्न देशों के पाँच सौ से अधिक प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए। भारत के प्रतिनिधि उनके अतिरिक्त थे। इस सम्मेलन की एक बड़ी विशेषता यह थी कि यद्यपि इसके लिए धन और साधन रूहानी–सत्संग ने जुटाये, लेकिन महाराज जी ने ये सम्मेलन रूहानी–सत्संग की तरफ़ से नहीं किया, बल्कि सब समाजों के सम्मिलित तत्वावधान में किया। उन्होंने सम्मेलन के आठ सचिव नियुक्त किए जो विभिन्न समाजों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। महाराज जी के शब्दों में, "परमात्मा ने इंसान बनाये। उसने मुहर (ठप्पा) लगा के नहीं भेजा कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान। समाजें इंसान ने बनाईं, इसलिए कि इंसान सही मा'नो में इंसान बने, नेक–पाक–सदाचारी बने, इंसान इंसान के काम आये, जिससे उसकी जीवन यात्रा सुख से व्यतीत हो और फिर सब मिलकर, जहाँ जिस समाज में कोई है, उसमें रहते हुए और अपनी–अपनी समाज मर्यादा का पालन करते हुए, उस लक्ष्य को पाये जो मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य और सब समाजों का साँझा आदर्श है। समाजें इंसान के लिए बनी, इंसान समाजों के लिए नहीं बना था। मगर वह मक्सद किनारे रह गया। हम समाजों के उद्देश्य (मानव निर्माण और प्रभु प्राप्ति) को भूलकर अपने–अपने समाजों को ही बनाने–सँवारने में लग गए।" विश्व मानव एकता सम्मेलन में हुज़ूर महाराज जी ने इंसान और इंसानियत के आधार पर एकता का आदर्श पेश किया। उन्होंने कहा कि, "इंसान सब एक है। बाहर की और अंदर की बनावट सबकी एक है। एक ही तरह से सब पैदा होते हैं और मरते हैं। वह हक़ीक़त सबमें हैं, सबकी पैदा करने वाली, प्रतिपालक और जीवनाधार है। एकता तो आगे ही मौजूद है, मगर हम भूल गए हैं।" उस व्यापक जन्मजात एकता के आधार पर उन्होंने इंसान इंसान को मिलाने का ये महान प्रयास किया।

पहली अगस्त 1974 में (महाप्रयाण से 20 दिन पहले) भारत के संसद भवन में उनके सम्मान में एक सभा आयोजित की गयी जिसमें उनका मानपत्र प्रस्तुत किया गया। इस सभा की अध्यक्षता संसद के स्पीकर श्री गुरदयाल सिंह ढ़िल्लों ने की। संसद के इतिहास में ये पहला मौक़ा था जब संसद सदस्यों की ओर से संसद भवन में एक आध्यात्मिक महापुरुष को सम्मानित किया गया।

संत कृपाल सिंह जी महाराज ने विभिन्न स्तरों पर और दिशाओं में विश्व में नव जाग्रति और नव चेतना के जो बीज बोए, वे एक दिन फल लायेंगे और वह वक़्त आ गया है। जैसा कि वे आख़िरी दिनों में कहा करते थे, "सतयुग कोई आसमानों से फट पड़ने वाला नहीं, कलयुग के घोर अंधकार ही से उसका अभ्युदय होगा और वह दिन दूर नहीं। यह जो नयी चेतना, नयी जाग्रति सब समाजों में दिखाई दे रही है, यह प्रभु प्रेरणा से है और सतयुग के अभ्युदय की निशानी है।"

सावन-कृपाल दयाधारा का नया दौर

हुजूर संत कृपाल सिंह जी महाराज अपने जीवन की संध्या–बेला अक़्सर कहा करते थे कि मेरा मिशन मेरे बाद भी जारी रहेगा और दिनों–दिन आगे बढ़ेगा और फैलेगा। आज, उनके अनामी पद लीन होने के दस साल बाद, "सावन–कृपाल रूहानी मिशन" के अंतर्गत हम इन दो महापुरुषों की विशाल दयाधारा को नयी–नयी दिशाओं में बढ़ते–फैलते देख रहे हैं। इतनी तेज़ी से काम आगे बढ़ा–फैला है कि देख कर अक़्ल चक्कर खाती है। आज वही कार्य संत दर्शनसिंह जी महाराज के उत्तराधिकारी, संत राजिन्दर सिंह जी महाराज की देखरेख में चल रहे हैं।